Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HINDI SANDESH

1953

G. K. U.

amaj Foundation Chen

ain, Gurukul Kangri C

078124
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Diamond Book Binding House

078124

STOCK VERIFICATION
Central Library
2024-25 G.K.U.V. Hdr.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी-सन्देश

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी.

जनवरी १९५३

पंजाब पैप्सु हिमाचल हिन्दी सम्मेलन का मुख-पत्र

078124

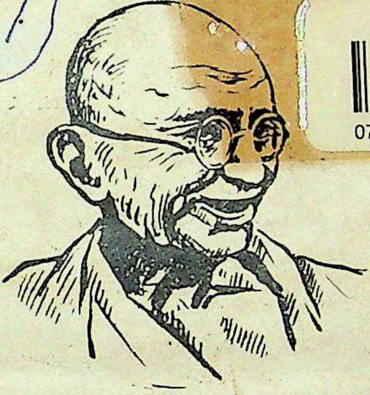

३० जनवरी ५३ को आप के पवित्र बलिदान की स्मृति में भारतीय राष्ट्र ने श्रद्धांजलि अर्पित की। महात्मा गांधी।

हैदराबाद में राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के १६ जनवरी ५३ के वार्षिक अधिवेशन के सभापति। जवाहरलाल नेहरू।

आप दोनों ने राष्ट्रीय एकता के लिये—

भारत की विविध प्रान्तीय भाषाओं के समर्थकों को भी प्रान्तीय भाषाओं को देवनागरी लिपि में लिखने की प्रबल प्रेरणा की है

संचालक—स्वामी स्वतंत्रानन्द जी प्रधान सम्मेलन।

प्रधान संपादक—भीमसेन विद्यालंकार।

प्रबन्ध संपादक—श्री [illegible] जी कोषाध्यक्ष।

मूल्य ...रुपए

कहानियां—तीन टांग की कुर्सी। बहन का बलिदान।

बीसवीं सदी के तुलसीदास

कविताएं—हार जीत। नींद संजोलें। पथ चल रहा आदि।

प्रति ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ संख्या
१	सम्पादकीय	१—३
२	कविता कुञ्ज	४—८
३	तीन टांग की कुर्सी	९—१३
४	बहन का बलिदान	१४—१६
५	बीसवीं सदी में तुलसीदास	१७—२०
६	पंजाब पैप्सु सम्मेलन समाचार	२१—२९
७	प्रेमचन्द का गोदान	३०—३२
८	मैट्रिक परीक्षा के लिये निर्देश	३३
९	पंजाब के लोक गीत	३.
१०	साहित्य समालोचना	२—३ टाइटल

साहित्य-समालोचना

कोशकला :—लेखक श्री रामचन्द्र वर्मा प्रकाशक साहित्य रत्नमाला कार्यालय २० धर्मकूप बनारस कीमत १॥)। हिन्दी के संविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा बनने के बाद, आए दिन हिन्दी में अनेक कोष प्रकाशित हो रहे हैं। कोषों की इस बरसाती बाढ़ में यह पहचानना मुश्किल हो जाता है कि कौन सा कोष अच्छा है और कौन सा निकम्मा। विविध कोष रचने वालों को भी कोश कला का ज्ञान न होने से नए कोष बनाने में दिक्कत होती है। श्री रामचन्द्र वर्मा ने प्रस्तुत पुस्तक लिख कर विद्यार्थियों तथा कोष प्रकाशकों के लिए अनुभव पूर्ण मार्ग प्रदर्शन किया है। कोष कितने प्रकार के होते हैं कैसे निर्मित किये जाते हैं, हिन्दी शब्द सागर के निर्माण करने में किस योजना पर अमल किया गया था आदि बातों का आप को साक्षात् अनुभव है। उस अनुभव के आधार पर ही आपने तीन वर्ष पहले "प्रामाणिक हिन्दी कोष" तैयार किया था। प्रस्तुत पुस्तक कोशकला का वैज्ञानिक विवेचन है। कोषकारों तथा हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञों के लिए पुस्तक निःसन्देह उपयोगी ही नहीं अपितु मार्ग प्रदर्शक है। विश्व की विविध भाषाओं तथा भारतीय राष्ट्र की विविध प्रान्तीय भाषाओं के निर्माण में किये कोष रचना सम्बन्धी प्रयत्नों का ऐतिहासिक विवेचन विशेष रूप से शिक्षाप्रद है।

आचार्य शुक्ल और चिन्तामणि :—

लेखक श्रीलालभानु साहित्याचार्य प्रकाशक—शारदा प्रकाशन मंदिर कोलारस मंडल शिवपुरी मध्यभारत, राधाकृष्ण ग्रन्थ माला की प्रथम मणि है। इसमें स्वर्गीय रामचन्द्र जी शुक्ल के निबंध संग्रह चिन्तामणि के निबन्धों का विश्लेषणात्मक विवेचन तथा प्रतिपादन किया गया है। निबन्ध—विज्ञान के

(शेष तीसरे टाइटल पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लाहौर में संस्थापित १६३४ — १६४८ मार्च में अम्बाला छावनी से पुनः संचालित
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी–सन्देश

उत्तरी भारत का प्रमुख साहित्यिक मासिक पत्र

पंजाब, हिमाचलप्रदेश, पटियाला यूनियन के स्कूलों, कालेजों के लिये इन राज्यों के शिक्षा विभागों द्वारा स्वीकृत।

वर्ष ३] जनवरी १६५३, १६ माघ २००६ [संख्या १

सम्पादकीय

दिनाङ्क

नए वर्ष का क्रान्तिकारी श्रीगणेश :—

१६५३ का जनवरी मास राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण महीना रहा है। भारतीय राष्ट्र की दृष्टि से हैदराबाद में राष्ट्रीय महा सभा का वार्षिक अधिवेशन विशेष महत्वपूर्ण समारोह था। इस अधिवेशन के लिये भारत के प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरु को ही, उनके न चाहते हुए भी, कांग्रेस का प्रधान चुन कर यह सिद्ध कर दिया है कि इस समय कांग्रेस में पण्डित जवाहरलाल के सिवाय और कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो कांग्रेस संगठन का नियंत्रण तथा संचालन कर सके। श्रीयुत टण्डन जी जैसे स्वतंत्र प्रकृति के लोगों के लिये वहां स्थान नहीं हैं। कांग्रेस का संगठन राष्ट्र का प्रतिनिधि नहीं रहा अब वह एक राजनैतिक पार्टी का रूप धारण कर चुका है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में, अमरीका के नव निर्वाचित राष्ट्रपति आइसनहोर ने २० जनवरी १६५२ को भूत पूर्व राष्ट्रपति ट्रूमैन से शासन भार लेते हुए जो भाषण दिया है उसमें कोरिया के युद्ध की समाप्ति तथा चीन में कम्युनिस्टों और राष्ट्रवादी चांग काई शेक के अनुयाइयों के गृहकलह को पुनः उत्तेजित करने वाले उपायों की घोषणा कर, एशियाइयों को एशियावासियों से लड़ाने की भूमिका बांधी है और स्वयं रूस की भांति राष्ट्रवादी चीनियों के नेता चांग-काई-शेक को शिखण्डी की भांति आगे करके रूस के साथ निःशस्त्र युद्ध की घोषणा की है।

इंगलैण्ड के राजनीतिज्ञों ने अमरीका की इस नई नीति का न स्पष्ट विरोध किया है और न स्पष्ट समर्थन। इंगलैण्ड—मिश्र, सूडान, मलाया; ईरान, केनियाकी उलझनोंऔर दक्षिणाफ्रीकाकी मलन सरकार की ब्रिटिश-कामन-वैल्थ को तहस नहस करने वाली नीति से परेशान है। आर्थिक दिक्कतों के कारण वह अमरीका से स्वतन्त्र हो कर नई स्वतंत्रनीति का भी संचालन नहीं कर सकता। मध्य-पूर्वीय एशिया और काश्मीर, पाकस्तान, हिन्दुस्तान की उलझनों वाली समस्या भी इंगलैण्ड के शासक वर्ग को स्वतंत्र नीति स्वीकार करने में बाधक सिद्ध हो रही है। अन्तर्राष्ट्रीय शांति की दृष्टि से रिपब्लिकन पार्टी के प्रतिनिधि आइसनहोर का शासनतंत्र भय सूचक है।

—भीमसेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यवाचस्पति स्वर्गीय पंडित रामनारायण मिश्र

[ले०—श्री रूपनारायण शास्त्री ।

गत १२ फरवरी १९५३ को काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अन्यतम संस्थापक, सुप्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री साहित्यवाचस्पति पंडित रामनारायण मिश्र जी का काशी में देहावसान हो गया; मिश्र जी क्रियाशील उन्नतमना व्यक्ति थे।

पंडितों की प्यारी नगरी काशी में पंडित रामनारायण जी मिश्र का स्थान बहुत ऊंचा रहा है। पिछले पचास वर्षों की अवधि में इस महान् पुरुष ने काशी में बैठ कर समाज-सुधार के क्षेत्र में, शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में जो रचनात्मक कार्य किये हैं, उनकी परम्परा को चिरस्थायी रख सकना सम्भवतः आज के नामलोलुप युग में किसी एक व्यक्ति के लिए तो क्या सैंकड़ों के लिए भी सम्भव न हो सकेगा।

वे एक कर्त्तव्यनिष्ठ सारस्वत ब्राह्मण परिवार में प्रादुर्भूत हुए थे। उन पर स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का अमिट प्रभाव था। वे आर्य समाज के बहुत दिनों तक कर्मठ सदस्य रहे और आर्य समाज के द्वारा उन्होंने समाज-सुधार सम्बन्धी अनेक कार्य किये, स्वामी जी को उन्होंने निकट से देखा था और उन्हें अपना आदर्श मान लिया था। विधवा आश्रम में विधवाओं के रहन सहन के प्रश्न को लेकर उन्हें उस समय के आर्य समाजियों से कुछ अरुचि हो गयी, इस लिए उन्होंने आर्यसमाज से सक्रिय सम्बन्ध अलग कर लिया और शिक्षा सुधार के क्षेत्र में आ डटे।

आप यू० पी० ई० एस० (उत्तर प्रदेश एजूकेशन सर्विस) के सदस्य थे। उस रूप में आपने उत्तर-प्रदेश के कतिपय जिलों में डिप्टी इन्सपेक्टरी की। वहां से हटने पर वे हरिश्चन्द्र हाई स्कूल (अब कालेज) के अध्यक्ष हुए। वहां अनेक वर्ष रहने के उपरान्त महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी के आग्रह पर हिन्दू स्कूल के प्रधानाध्यापक बने। आपके समय में इस स्कूल ने अन्तर्देशीय ख्याति प्राप्त की और देश के कोने कोने से आप का सुयश सुन कर विद्यार्थी पढ़ने को आया करते थे। महाराजकुमारों से लेकर दरिद्र कुमारों तक ने आपके चरणों में बैठ कर ज्ञानार्जन किया।

उन्हें बच्चे बहुत प्यारे थे। हजारों बच्चे उन्हें न केवल गुरु रूप में देखते थे, वरन् सुख दुख का साथी मानते थे। ऐसे विद्यार्थियों की संख्या आज एक हजार से कम न होगी, जो आपकी उदार छत्र-छाया के अभाव में शायद मूर्ख रह जाते। आपने निर्धन विद्यार्थियों के लिए भिक्षा मांग-मांग कर स्कूल के "विद्यार्थी सहायक सभा" का कोष लाखों में कर दिया था। अन्न, वस्त्र, पुस्तकें और रहने का स्थान सभी तो आप देते दिलाते थे। दीन हीन छात्र जब काशी के रेलवे स्टेशन पर उतरते थे, तब आपका घर उन्हें 'मक्का" के रूप में सिद्ध होता था।

विद्यार्थियों के साथ उनका व्यवहार कैसा था, इस सम्बन्ध में अनेक घटनाओं में से केवल एक घटना का उल्लेख पर्याप्त होगा। एक विद्यार्थी जो पढ़ने में बहुत तेज था, परीक्षा के दस दिन पूर्व कठिन रोग से पीड़ित हो उठा आपको सूचना मिली तो स्कूल के दो और अध्यापकों को साथ लेकर उसकी तंग कोठरी में बारह बजे रात को आये और उसे उठा कर अस्पताल ले गये। अपने धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उसकी चिकित्सा करायी तथा दूध, फल आदि का सब प्रबन्ध कर दिया। दिन में दो बार उसे देखने जाते, आज ऐसे अध्यापक कहां हैं? विद्यार्थियों की सर्वतोमुखी उन्नति के लिए उन्होंने जितना ठोस प्रबन्ध किया, वह उनकी समाज सेवा की एक अमर कहानी है।

शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने न केवल विद्यार्थियों की सेवा से सम्बन्ध रखा, वरन् उन्होंने अध्यापकों का संगठन किया, कानपुर निवासी बाबू हीरालाल खन्ना के साथ उन्होंने प्रान्त के अंग्रेजी स्कूलों के अध्यापकों के संगठन को बहुत बड़ी ताकत दी। शिक्षाविधियों का अध्यायन करने के लिए उन्होंने यूरोप का भ्रमण किया और वहां से लौटने पर "सर्व-एशिया शिक्षा सम्मेलन" किया, जिसमें दूर-दूर के प्रतिनिधि आये थे।

महामना मालवीय जी ने उन्हें यूनिवर्सिटी के स्कूल विभाग का अध्यक्ष बना दिया था। जहां ८०० छात्राएँ, १५०० अंग्रेजी के छात्र और २०० संस्कृत के विद्यार्थियों के आप कुलपति थे। हिन्दू स्कूल के बाद वे काशी के डी० ए० वी० कालेज में कुछ समय तक अवैतनिक प्रधानाध्यापक रहे।

हिन्दी के क्षेत्र में—स्वर्गीय मिश्र जी के हृदय में छात्र जीवन से ही देवनागरी लिपि एवं हिन्दी भाषा के प्रति अपार अनुराग था। आपने अपने, दो अन्य मित्रों, डाक्टर श्यामसुन्दर दास तथा ठा० शिवकुमार सिंह जी के सहयोग से "देवनागरी उत्थान सभा" कायम की, उसी की नींव पर आगे चल कर नागरी प्रचारिणी सभा का विशाल वृक्ष पल्लवित हुआ तथा उसकी एक शाखा के रूप में प्रयाग स्थित हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रादुर्भाव हुआ। हिन्दी को आज जो पद मर्यादा मिली है उसकी नींव श्री मिश्र जी के ही कन्धों पर रखी गयी थी। वे स्वयं हिन्दी में लिखते थे और दूसरों को भी प्रेरित करते थे। हिन्दी के लिए इतना बड़ा ठोस कार्य करने वाला अन्य भारतीय शायद खोजे भी न मिले।

वे अच्छे वक्ता, कुशल लेखक तथा निर्भीक समाज सेवी व्यक्ति थे। "मां के लाल" 'महादेव गोविन्दरानाडे' भारतीय शिष्टाचार आदि उनके लिखे ग्रन्थोंमें उनके पांडित्य की छाप देखनेको मिलती है। उनका व्यक्तिगत जीवन बड़ा ही विलक्षण रहा है। उन्हें संयमित जीवन प्यारा था, साठ वर्ष की अवस्था में भी वे नित्य व्यायाम करते थे, तैरते थे और प्रातःकाल दो मील दौड़ लगाते थे। काशी की सड़कों पर एक स्थान से दूसरे स्थान को पैदल ही जाते थे।

अद्भुत साहसी थे। एक बार बारह बजे रात गुण्डों के चंगुल में फंसी एक युवती की जिस साहस के साथ रक्षा की, उसे देख-सुन कर उनके अनेक युवक शिष्य दंग रह गये। उनके जीवन की शिक्षाओं से लाभ उठाने के लिए उनकी शिष्टाचार विषयक पुस्तक पठनीय है। उनका कहना था कि—तुम जब औरों का विश्वास करोगे तो लोग तुम्हारा विश्वास करेंगे।

वे ब्रह्मचर्य के माहात्म्य को मानते थे, भगवद् आराधना में उनका दृढ़ विश्वास था। उनकी प्रेरणा से हजारों विद्यार्थियों ने सन्ध्या-वन्दन करना सीखा आज वे इस संसार में नहीं हैं और कल आते आते तक शायद उनके सिखाये विद्यार्थियों की परम्परा भी टूट जायगी। किन्तु उनका सुयश कहां जायगा? उनकी दयालुता, उदारता, देश-भक्ति और मातृ-भाषा की सेवा कहां जायगी?

अन्त में ऐसी दिव्य एवं अमृतत्व प्राप्त आत्मा के प्रति हम अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू पर उतरो !

[लेखक—श्री दीनानाथ टंडन]

हास लिए, उल्लास लिए, जय गान लिए, भू पर उतरो !
मानवता का दीप सजा, शुभ भाव लिए, भू पर उतरो !!

आज व्यथित मानव है छल से, असत्य की छाया छायी।
क्षुब्ध सघन बादल हैं तम के, अणु अणु में जड़ता छितरायी।
आज विश्व का नाश निकट है, द्वार द्वार पर फूट निराली।
व्यस्त जगत के सब मानव हैं, लड़ मिटने की है बेहाली।
धनिकों की आंखों में भय है, श्रमिकों के नयनों में जल है।
एक क्षुधा के श्रांत विकल है, एक भरे धन धान्य विह्वल है।

इसी लिए कहता हूं तुम से न्यायतुला ले भू पर उतरो !
हास लिए, उल्लास लिए, जय गान लिए, भू पर उतरो !!

ध्येय स्वार्थता ही जग का बस, हेय हो चुकी परमारथता।
बन्धु बन्धु का शत्रु बना है, और बिछी चहुं ओर विकलता।
शांति पूर्ण आलंब दायिनी, अन्त करो इस दानवता का।
और लिखो इतिहास मनुज का, जिसमें भरी मधुर हो शुचिता।
अखिल विश्व का तम हरने को, सकल श्रेय का सिंचन करने।
मानवता को यह वर दे दो, नूतन नव पथ पर नित चलने।

प्रण कर ले संसृति सारी, थिरक थिरक तुम भू पर उतरो !
हास लिए, उल्लास लिए, जय गान लिए, भू पर उतरो !!

शांत बने व्याकुलता क्रंदन, और सभी मानव मुस्काएं।
नील गगन के पार निहारूं, किंतु न छलना भी छल पाए।
यही व्यस्त सी चाह हमारी, पूर्ण धरा पर जो हो पाए।
रोदन पीड़न दलित दीन का, स्वप्न बने धरती यश पाए।
मानव जीवन चाह पूर्ण हो, यश वैभव चहुं दिशि छितराए।
निशा दूर हो उषा आन कर; अपनी गरिमा स्वयं सजाए।

स्वयं सजाती मानव मानस; जय गरिमे ! हे भू पर उतरो !
हास लिए, उल्लास लिए, जय गान लिए, भू पर उतरो !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता-कुञ्ज

गीत

आओ नीड़ संजोलें !

[लेखक—प्रो० जयनाथ 'नलिन' सनातनधर्म कालेज, अम्बाला छावनी]

हुई न अब तक मंज़िल पूरी,
जीवन की यह साध अधूरी।
रह कर अलग-अलग हम अब तक,
नाप सके न गगन की दूरी!
आओ मिल नभ के रहस्य की गाँठ आज हम खोलें!

मैं गाऊँगी प्रेम तराना,
तुम तिनके चुन चुन कर लाना।
मैं पंखों की छाया दूँगी,
तुम हंस-हंस कर नीड बनाना।
एकाकी नीरस जीवन में मिलन का अमृत घोलें।

सफल स्वर्ग हो नीड़ हमारा,
थके क्षणों का सबल सहारा।
जहां राग बरसे अम्बर से,
मदिर अनोखा प्यारा-प्यारा।
उस में जीवन रस पीते हों दो विहंग अति भोले!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला जा रहा

[श्रीयुत् भारतेन्द्र नाथ 'साहित्यालंकार' आशुकवि]

दहक रहे पथ पर अंगारे, गीत सुनाता चला जा रहा !
टूटी वीणा गा न सके, कुछ राग उठाता चला जा रहा !!

आग लगी नभ में, भूतल में, प्राण जल रहे हर प्राणी के।
व्याकुलता सीमा का क्रंदन, धधक रहा है कल्याणी के॥
स्वर में बन्धन की निर्ममता, अपनी विकल वेदना लेकर।
सोच रही मैं प्रलय रूप हो दीप जलाऊँ अगवानी के॥
स्तब्ध शून्य इस रजनी में सम्मान लुटाता चला जा रहा !
दहक रहे पथ पर अंगारे, गीत सुनाता चला जा रहा !!

मेरी विषय विह्वलता जग की, सीमा पार थिरकती होगी।
मानवता भी आकुल दूर क्षितिज के पास सिसकती होगी॥
पीड़ा हर्षित तान लिए दानवता की आशायें आतुर।
महानाश की सोच भावना छम छम आज मचलती होगी॥
उलटी व्यर्थ पिपासा में मैं आँख मूँद कर चला जा रहा !
दहक रहे पथ पर अंगारे, गीत सुनाता चला जा रहा !!

अणु-अणु काँप रहा क्रंदन से काँप रही मतवाली ज्वाला।
मेरे चलने की तैयारी निरख रही सुन्दर सी बाला॥
प्रकृति नटी के मधु अंचल में भैरव राग छोड़ ना पागल।
कौन यहां की नग्न कहानी, सुनता दीप दिखाने वाला॥
कान मूंद कर भरे हलाहल प्याले पीता चला जा रहा !
दहक रहे पथ पर अंगारे, गीत सुनाता चला जा रहा !!

अंतस की जलती चिंगारी आग लगा देती पल भर में।
सोचा था पग बढ़ते होंगे, प्रिय के मानस सर में॥
और अकेला मैं ही उनकी छवि को निरख सकूँ अनजाने।
पर न विवशता ज्ञात मुझे थी, छलना के आभार प्रहार में॥
मौन, हृदय समाधि पर आंसू—फूल चढ़ाता चला जा रहा !
दहक रहे पथ पर अंगारे, गीत सुनाता चला जा रहा !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे सजाऊं

[कुमारी निर्मलारानी प्रभाकर नाहन]

आज मैं निर्माण का पथ प्रिय कहो ! कैसे सजाऊँ !
तुम बताओ स्वप्न कैसे ? आज नूतन कर दिखाऊँ !!

जल चुकी हैं कामनाएं और अरथी जल रही है,
स्वयं बुझ कर दीप की लौ आज बुझती चल रही है।
कौन है वह जो पुजारी प्यार कर लेगा हृदय से,
कौन नीरव यामिनी में गीत गा देगा सदय से ॥
दूर पथ है, प्राण रूठे, मैं कहो कैसे मनाऊँ !
आज मैं निर्माण का पथ प्रिय कहो ! कैसे सजाऊँ !!

शून्य स्पंद की निशा में गीत का शृङ्गार क्या हो ?
चल अचल आतुर मिलन में स्वयं का अभिसार क्या हो ?
क्या पिपासा पूर्ण होगी और पथ होगा समुज्वल ।
क्या विलय में खो न देगा प्राण मेरा स्वयं संबल ॥
ज्ञान आभा खो भला क्या, मैं तुम्हारे पास आऊँ ?
आज मैं निर्माण का पथ प्रिय कहो ! कैसे सजाऊँ !!

मैं मिलन की रागिनी में भर सकूँ जीवन कहानी ।
और तेरे क्षुब्ध मानस पर बिछा दूँ वह निशानी ॥
जो तुझे अभिनव बनाकर याद कर ले, प्यार कर ले ।
और कांटों के पूर्ण पथ पर भी आ यहां मनुहार कर ले ॥
कर सकूँ अभिसार, हर्षित तान बोलो क्या न गाऊँ !
आज मैं निर्माण का पथ प्रिय कहो ! कैसे सजाऊँ !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार-जीत

[लेखक—श्री छोटे लाल शर्मा वासिष्ठ (सहारनपुर)

अरुण अस्तंगत हुवा जा रहा दिग्गोद में,
हर विटप पर कूजता खगवृन्द था अतिमोद में।
भर रही सिन्दूर सन्ध्या उच्चनैश-लिलार में,
गत प्रकाश हुवा, तिमिर था आ रहा संसार में।
व्योम-पट की कालिमा को नव्यशशि था धो रहा,
मस्त, मलयज, मन्द-मारुत से मगन मन हो रहा।
विकच, सुरभित, सुमन दलविरचित से मनोहर माल को,
ला रहा था मैं सजाने को किसी के भाल को।
एक शिशु आया, उछलता, कूदता अति वेग से,
शिशुजनोचित चपलतायुत, पूर्ण था आवेग से।
हाथ को झटका लगा ऐसा अचानक भूल में,
खण्ड माल हुई, मिले सब पुष्प उसके धूल में।
सान्ध्य-तम के आवरण में फूल अन्तर्हित हुए,
मानसिक-आघात से हिय-भाव कुछ विचलित हुए।
मैं सुमन चुनता इधर, मुक्ता उधर थे जा रहे,
नयन-सीपी में घुमड़ कर वेग से जो छा रहे।
तारिकांकित गगन में छाई अपूर्व बहार थी,
किन्तु मेरी, क्या कहूँ, ये जीत थी या हार थी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस जवानी में शरारत नहीं, वह जवानी भी क्या— खेल खेल में खून की होली !

★ तीन टांग की कुर्सी ★

[लेखक—श्री नन्दकिशोर सी० इं० संचालक हरगुलाल एण्ड संस अम्बाला छावनी]

(श्री नन्दकिशोर जी वैज्ञानिक भी हैं और साहित्यिक रसिक भी। आपने इस कहानी में दोनों प्रकार की भावनाओं का सुनहरी रोमांचकारी मिश्रण किया है।)

पिछली बार मंसूरी में बड़ा मजा रहा था, जाने से पूर्व अशोक ने एक बड़ा विचित्र सांप बम्बई से मगाया था। बड़ा रोचक खिलौना था। चाबी भर कर छोड़ देते तो बिल्कुल जीवित सांप की भाँति चलता फिरता और मुड़ता था, इस सांप को हम मंसूरी जाते हुये साथ ले गये थे।

रात को एकान्त में बेंच पर बैठ जाया करते और किसी आने वाले को देख कर चुपके से सड़क पर छोड़ देते, फिर क्या था चलने वाला बिचारा पथिक भयभीत होकर जो भागता, तो मुझे और अशोक को इतना मजा आता कि हम हँसते २ लोट पोट हो जाते। पेट में बल पड़ जाते। यह क्रीड़ा हम सप्ताह में एक दो बार अवश्य किया करते थे।

अब का बार जाने का कार्यक्रम निश्चित हुआ तो अशोक का सांप खराब हो चुका था। उसने मुझ से आग्रह किया, "तुम तो बड़ा मौलिक मस्तिष्क रखते हो, कोई ऐसी वस्तु बनाओ कि दो महीने मंसूरी में आमोद प्रमोद से व्यतीत हो जायें। मुझे सूना, निठल्ला जीवन बहुत अखरता है, पिछले साल तो सांप ने अच्छा समय बिता दिया था।"

× × ×

अशोक ने मेरे मन की बात कही। मैं सोचता रहा कभी कुछ, कभी कुछ; कई आविष्कार मन में आये। वे सारे, कुछ सफल न थे। अन्त में मन ने एक वस्तु घड़ी। था तो पुराना ही विचार, परन्तु एक नये प्रकार से बनाया हुआ।

मैंने एक कुर्सी बनाई। जिसकी तीन टांगें थीं। दो आगे एक पीछे। यूँ तो देखने में बैठने में बहुत मजबूत थी। एक भारी मनुष्य भी बड़े विश्वास से घंटों तक बैठ सकता था। बस एक युक्ति रखी थी। पिछली टांग में एक लोहे का कब्जा लगाया था। वह इस ढँग का था, कि बैठने वाला चाहे कितनी देर बैठा रहे परन्तु यदि उस कब्जे वाली टाँग को धागे से खींचा जाये तो कब्जा खुल पड़ता था। टाँग मानो टूट जाती थी, और बैठने वाला व्यक्ति धड़ाम से पृथ्वी पर आ गिरता था।

जब मैंने अशोक को अपना शरारतभरा आविष्कार दिखाया तो उसकी बाछें खिल गईं। बहुत प्रसन्न हुआ। बोला, भाई, इस कुर्सी के सहारे दो महीने मंसूरी के बहुत आनन्द से कटेंगे।" और इस यन्त्र को हमने सामान में बन्द कर लिया।

वहां पहुंचने के ५,८ दिन बाद हमने तीन टांग की कुर्सी निकाली। पहले इस की परीक्षा की, जांचा जोखा।

× × ×

हमने कैमल बैक रोड पर एक ऊंची कोठी का एक सैट किराये पर लिया। कोठी सड़क से कोई ३०—४० फुट ऊंची थी। पास ही सामने एक पत्थर का बना बैंच सड़क पर पड़ा रहता था। पथिक दूर से आते और विश्राम के लिये इस पर बैठ जाते। इस बैंच का दृश्य हमारी कोठी से स्पष्ट दिखाई देता था।

हमने अपनी कारीगरी शुरु की। बैंच के पास तीन टांगों वाली कुर्सी को जमा दिया करते, मैं या अशोक दोनों में से एक, या कभी दोनों ही पत्थर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंच पर बैठ जाते या लेट जाते। इससे हमें दो सुविधायें थी। एक तो यह कि तमाम बैंच भर जाने के कारण हमारे परिहास का पात्र बैंच पर न बैठने के कारण कुर्सी पर ही बैठ जाता। दूसरी सुविधा यह थी कि रात के अन्धकार में रेशम की डोरी जो तीसरी टांग में बंधी होती थी उसे खींचना बड़ा, सुगम था, अन्धेरे में डोरी दीख नहीं पड़ती थी।

हमने अपना प्रयोग आरम्भ किया, परन्तु एक बात को हमने विशेष ध्यान में रक्खा कि इसका प्रयोग सप्ताह में एक या दो बार से अधिक नहीं किया जाय, इस कारण कि रोज़ २ करने से वहीं हमारा भेद न खुल जाये। बड़ा मनोरंजन रहा करता। कभी अशोक डोरी खींचता कभी मैं। कभी वह ऊपर कोठी में, तो मैं नीचे, कभी मैं ऊपर कोठी में, तो वह नीचे।

कितनी बार तो हमारे शिकार बूट सूट पहने नवयुवक होते थे, लुढ़क कर पृथ्वी पर गिर पड़ते तो उधर से मैं आता और ऊपर से अशोक भागा आता। बिचारे पथिक को उठाते उसके कपड़े झड़ते। मुझे याद है कितनी मुश्किल से हम अपनी हँसी रोका करते थे।

गिरने वाला बिचारा लज्जा में डूबा हुआ वहां से टलने की ही करता। और हमारा अभिनय इतना स्वभाविक लगता था कि किसी को कभी भी हम पर सन्देह नहीं हुआ।

एक दो बार मेरे बहुत मना करने पर भी अशोक ने यह खेल युवतियों से भी कर डाला। इस तरह करते करते २०-२५ दिन व्यतीत हो गये।

× × ×

एक बार हमें माल रोड पर लायब्रेरी के पास एक पुराना मित्र बशीर मिला। यह मंसूरी का ही रहने वाला था। दिल्ली के कालिज में दो वर्ष तक यह मेरा सहपाठी रहा था। परन्तु आज तो कई वर्षों के बाद इससे भेंट हुई। उसने बहुत आग्रह किया कि किसी दिन रात को खाने पर अवश्य आना पड़ेगा। जून की २७ ता० निश्चित हुई। उसने कोठी का पता बताया। डिप्पो की ओर ४७ नम्बर की कोठी में वह रहता था २७ ता० की शाम को हमने कपड़े पहने और चलने को तैयार हुये। अशोक के मन में वही शरारत की हुड़क जाग रही थी। बहुत आग्रह किया, भई ज़रा तीन टांग की कुर्सी लगायें देखो क्या मज़ा आएगा अभी तो एक घंटा बाकी है। सारा रास्ता आध घंटे का भी नहीं है। मैं मान गया।

इसी विचित्र घटना को लिये मैं सारा वृत्तान्त सुना रहा हूं। इसका विचार बार २ आज तक मेरे मन में घूमता है। २०—२५ मिनट हो गये थे, कोई पथिक उस कुर्सी पर अभी तक नहीं बैठा था। आज डोरी खींचने की बारी मेरी थी। मैं बैंच पर बैठा २ थक गया था, उधर बशीर के घर जाने की जल्दी थी। मैं उठने ही वाला था, कि इतने में एक बहुत बूढ़ा सफ़ेद दाढ़ी वाला व्यक्ति बैंच की ओर बढ़ा। सम्भवतः उसे स्पष्ट दिखाई नहीं देता था कि मैं वहां पर लेटा था, उसने बैठने का यत्न किया, मैं बोला, "देखते नहीं हो बड़े मियां, मैं यहां पर लेटा हूं।" वह बिचारा यह सुनकर बोला, "माफ़ कीजियेगा" मुझे उत्सुकता थी उसको इस कुर्सी पर बिठाने की।

"आप उस कुर्सी पर बैठ सकते हैं" खाली पड़ी है।"

मैं अब सोचता हूं कि यदि शरारत ने मुझे विवश न कर दिया होता, और स्वयम् मैं उसको उस कुर्सी पर बिठाने को उत्सुक न होता तो यह भेद कभी न खुलता।

वृद्ध कुर्सी पर बैठ गया, ऊपर अशोक खड़ा था मैंने उसको देखा और डोरी खींच दी। खींचते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुर्सी टूटी, और वृद्ध नीचे आन गिरा, एक चींख सी निकली। इधर से मैं, उधर से अशोक लपका। वृद्ध को उठाया, कुछ मनोरंजन की हँसी, कुछ अपने पर खेद हमने उसको बैंच पर बिठाया मैंने कहा, "टूटी हुई कुर्सी किसी ने रखदी है नालायक कहीं का।"

अशोक बोला, "यार, किसी शरारती का काम है।"

वृद्ध ने हम दोनों को एक गहरी दृष्टि से देखा। मेरे मन में एक डर सा लगा जैसे कि उसने हमारी शरारत को भाँप लिया हो। वह अपनी टांग को पकड़े सुये था, बड़े संयम से उसने अपनी पीड़ा को छुपा रक्खा था। उसने चारों ओर देखा, फिर अशोक की ओर संकेत करके बोला, बरखुरदार बैठ जाओ, और फिर मुझे भी बैठने के लिये कहा।

हमने कहा, "नहीं, आप आराम करें हम खड़े हैं।"

वृद्ध पत्थर के बैंच पर बैठ गया। दो मिनट जैसे अपनी पीड़ा को दबाते हुये उसने फिर हमारी ओर देखा और बोलना आरम्भ किया,

"तुम डर रहे हो बेटा! तुम शरमा रहे हो। तुमने शरारत से मुझे गिराया है न! नहीं नहीं शरमाओ मत, मुझे तुम पर बिल्कुल भी गुस्सा नहीं। जवानी ऐसी ही होती है यह मस्त कर देती है इन्सान को जिस जवानी में शरारत नहीं, वह जवानी भी क्या।"

वृद्ध ने फिर हमारी ओर देखा, कुछ क्षण चुप रहा।

मैं बोला, "बड़े मियाँ आपके चोट तो नहीं लगी"

"नहीं, सब ठीक है," वह कहने लगा। "तुम घबराओ मत, देखो मैं भी तुम्हें अपनी जिन्दगी का एक किस्सा सुनाता हूं। तुम्हें सुनकर तसल्ली होगी।

उसने बोलना आरम्भ किया, "बेटा! मैं भी तुम्हारे जैसा शरारती था, तुम्हारे जैसा नहीं! तुमसे बढ़कर। तुम मेरा क्या मुक़ाबला कर सकते हो।"

हम बहुत शरारती हुआ करते थे। जैसे तुम दो दोस्त हो न, इस तरह हम भी दो दोस्त थे, एक मैं और एक पाल। मैं तो मुसलमान था और पाल ईसाई, वह एक कप्तान का लड़का था। हम दोनों बचपन से साथी थे मगर मैंने कभी उसके वालिद की शक्ल नहीं देखी थी, वह बाहर मिलिटरी की नौकरी पर रहा करता था।

"हां, हम दोनों बड़े शैतान थे। बड़े २ बाँके जवान हमसे डरा करते। यह सच है कि मुहल्ले-शहर की बहू बेटियों पर हमने कभी बुरी नजर न डाली। बड़े बूढ़ों को हमने कभी तंग न किया, हम इसको हराम समझते थे।"

यह शब्द सुनते ही मैंने अशोक को देखा। वह नीचे नेत्र किये सब कुछ सुन रहा था। वृद्ध के इस वाक्य पर उसने मुझे देखा। कुछ ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे कि हम दो अपराधी एक जज के निर्णय को सुन रहे थे।

"वह फिर बोला" हाँ तो हम बहुत शरारती होते थे बेटा! हम भी राहगीरों को इसी तरह हैरान करते थे, जैसे तुम करते हो, नहीं इससे भी कहीं ज्यादा। × × ×

एक दफ़ा का जिकर सुनाऊँ। हम दोनों ने एक दूसरे की पीछेपीठें जुड़कर भागने की बहुत प्रैक्टिस की ऊपर से एक कम्बल ढाल लिया करते आगे आगे मैं और पीछे २ पाल। क्या पूछते हो, दोनों मिल कर ऐसा भागते थे जैसे कोई चीता सड़क पर भागता हो। रात के वक़्त अंधेरे में हम इसी कैमल बैंक रोड पर ताक में लगे रहा करते। और जब भला आदमी गुजरता तो हम खों खों करते उसके पीछे भागते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचारा राहगीर दम तोड़कर बतहाशा भागता। हम भी भागने में कम न थे, वह आगे और हम पीछे, बहुत मजा आया करता था। घण्टों हम रात को यह खेल किया करते थे। हमने चलने वालों के नाकों में दम कर दिया था।

हमारे मुहल्ले में एक अमीर सेठ रहते थे। बहुत भले आदमी थे, नाम था, घनश्यामदास। उनको तो हमारा सारा भेद पता था। उनको हमारी इस शरारत में बड़ी दिलचस्पी हो गई थी, एक दिन उन्होंने हम दोनों को बुला कर एक चीते की खाल दी। बस फिर क्या था कम्बल के बजाय उस खाल को ऊपर डालकर हम दौड़ा करते। राहगीर हमें चीता समझकर दम तोड़कर भागते, और इस तमाशे से हमारा वक्त बड़े मजे में बीतता था।

"एक दिन का जिक्र है।" यह कह कर वृद्ध दो मिनट तक चुप रहा फिर टांग को कुछ संभाल कर दबाया फिर कुछ शोकातुर शब्दों में बोला, हां, एक दिन का जिक्र है वह दिन मुझे सारी जिन्दगी में न भूल सकेगा। आज तक उसकी याद सताती रहती है। हँसी हँसी में क्या हो गया।

"हम चीते का खेल खेल रहे, मैं आगे वह पीछे था। इतने में एक मिलिटरी अफ़सर उधर से गुजरा घुप अँधेरा था। मैंने भाँपा, मैं ही उसे देख सकता था। हम चीते के भेस में उसके पीछे भागे। मगर वह डर के मारे भागा नहीं, इसने तुरन्त अपना रिवाल्वर निकाला। हमें चीता समझ कर झट से फ़ायर कर दिया।

"कुछ खुशकिस्मती या बदकिस्मती, फ़ायर खाली गया, फ़ायर होते ही मैंने खाल फेंक दी। और गुस्से से गुर्राता हुआ आगे बढ़ा।

"पर अब अफ़सर बेहाल था उसके होश ठिकाने न थे। वह हैरान था कि चीते का आदमी कैसे बन गया। उसके पांव लड़खड़ा गये वह भागा और मैं उसके पीछे हो लिया। अँधेरे में इधर उधर हो गया था।

इतने में किस्मत की करनी क्या हुई कि हड़बड़ा कर वह अफ़सर धड़ाम से गिर पड़ा। बहुत नीचे खड्ड में गिरते ही, उसने चीखमारी। चीख की आवाज सुनते ही पाल घबरा कर मेरे पास आया हैं! यह कौन है शमशाद उसने पूछा! हमारे पास एक टार्च थी चार बैटरी वाली। वह हम अपने साथ बांधे रखते थे, हम कच्चे रास्ते से नीचे खड्ड में उतरे। पाल काँप रहा था, उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे। हमने नीचे दूर से देखा, वही अफ़सर खून में लतपत बेचैनी से करवटें बदल रहा था।

"बच गया था न बड़े मियाँ" मैंने उत्सुकता से पूछा फिर अशोक ने निकट आकर पूछा "वह कौन था, बड़े मियां?"

वृद्ध के नेत्रों से अश्रु बह रहे थे। उसने फिर अपनी टांग को थामा। दिल की तरफ़ हाथ बढ़ाया।

"वह कौन था, नहीं समझे! तो सुनो! हम और नजदीक गये अब उसका चेहरा साफ़ दिखाई दे रहा था।

देखते ही पाल ने एक चीख मारी! पापा, पापा वह चीखा, चिल्लाया। मेरे बदन में काटो तो खून नहीं। वह नजारा मुझे अभी तक याद है, खून के आंसू रुलाने वाला! २०फ़ीट की ऊँचाई से हम पाल के वालिद को देख रहे थे। वह चीख रहा था, तड़प रहा था। पाल गिरा जा रहा था। इधर मैं उसके वालिद की दिल—सोज हालत को देख रहा था, उधर पाल के बेचैन शरीर को थामे हुये था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे देखते २ पाल का वालिद ठंडा हो गया।

यह कहकर वृद्ध का गला भर आया। उसने हिम्मत छोड़ दी। निढाल सा होकर गिर पड़ा, हमने उसको फिर सहारा दिया। उसने फिर टांग सम्हाली कुछ दिल को दबाया।

इधर हमारी दशा अपराधियों जैसी थी जैसे कि हमने ही पाल के पिता को गिरा कर मार दिया हो।

वृद्ध फिर बोला! "खेल खेल में क्या हो गया बेटा, यह मैं कभी नहीं भूलता"।

देखो! उसने, सामने कब्रिस्तान की ओर संकेत करके बताया। "देखो तुम्हें दिख रही होगी उस कप्तान की कब्र। मुझे तो साफ़ दिख रही है। मैं हर रोज इसे देखता हूं। सारी सड़क से जहां जहां तक यह दीखती है मेरी आँखें इसी कब्र की तरफ़ लगी रहती हैं"। × ×

हम बहुत व्याकुल हो गये थे, उधर बशीर के घर जाने में बहुत देर हो गई थी।

आप कहाँ रहते है? अशोक ने पूछा! "हम आपको घर छोड़ आयें"।

वृद्ध ने अशोक की ओर देखकर कहा! "बस मेहरबानी, आप एक रिक्शा ला दो"।

इत्तिफ़ाक से रिक्शा पास से जारही थी, वृद्ध को हमने संभाल कर रिक्शा में बिठा दिया।

वृद्ध ने कहा! "बरखुरदारो घबराना नहीं, जवानी ऐसी ही होती है। उसके इतना कहने के बाद रिक्शा चल दी और आंखों से ओझल हो गई।

अशोक ने मुझे बैंच से उठाया और कहा! घबराने की कोई बात नहीं, मगर पता नहीं दिल क्यों बैठा जाता है।

मैंने कहा यार! तुम भी सीमा से बढ़ जाया करते हो! मैं कह रहा था, चलो रहने दो। पर एक तुम हो जिसके मन की तृष्णा बिना शरारत के पूरी नहीं होती, जिसको बिना इसके खाना हजम नहीं होता। फिर हम डीपो की ओर चल पड़े।

देर तो बहुत हो गई थी। बशीर प्रतीक्षा कर रहा होगा, मार्ग लम्बा था, हम घटना कुछ भूल से गये थे। कुछ और बातें याद आईं। मैंने अशोक को अपनी और बशीर की मैत्री और कालिज के दिनों के विषय में बताया, ४५ मिनट के पश्चात हम डिपो पहुंचे। कोठी मिल गई हम अन्दर घुसे।

बशीर बड़ी घबराहट में बाहर निकला, हम सहम गये। मैंने कहा, माफ़ करना बशीर! रास्ते में देर हो गई।

बशीर ने हमारी ओर देखा, मुझे खुद अफ़सोस है। क्या बताऊँ, क्या करूँ, वालिद साहब की हालत बहुत खराब है, टांग की हड्डी टूट गई मालूम पड़ती है. दिल का दौरा हुआ है। कुछ बदमाशों ने उनके साथ शरारत की है आप बैठें, मैं डाक्टर को बुलाने जा रहा हूं।

हमने एक दूसरे की ओर देखा। हमने खेद प्रकट किया। कहा, आप उनके पास बैठिये। हम अभी जाकर डाक्टर को रिक्शा में भेज देते हैं।

डाक्टर को हमने रिक्शा में बशीर के घर भेज दिया। और फिर अपनी कोठी पर आ गये।

तीन टांग वाली कुर्सी नीचे फ़र्श पर पड़ी थी; अशोक ने उसे उठाया, और घुमाकर एक गहरे खड्ड में फेंक दिया।

और दो दिन पश्चात ही हम मंसूरी से चले आये।

——**——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनता की वेदि पर—

★ बहन का बलिदान ★

[लेखिका—श्री कुमारी इन्दु चोपड़ा अम्बाला छावनी]

अरे भैया ! तुम ने तो सचमुच ही प्रस्थान की तैयारी कर ली ?

"हां नीरु ! मुझे जाना ही होगा। कर्त्तव्य पथ मेरी बाट जोह रहा है। मातृ बेदि मेरा बलिदान मांग रही है। तुम देखती नहीं कि ये विदेशी लोग किस प्रकार हमारी भारत मां की छाती पर मूंग दल रहे हैं ? क्या उस की पुत्री होकर अपनी मां के हृदय की वेदना का अनुभव नहीं कर सकती ? तुम क्षत्राणी हो और परम्परा से ही भारत की रमणियों ने न जाने कितने महान त्याग एवं बलिदान देकर मातृ वेदि की तृषा को शान्त किया है। अतः अपनी जाति के त्याग का परिचय दो और मुझे मोह जाल में फंसा कर कर्त्तव्य च्युत मत करो।" बातें हो रही थी। राजेश और उस की छोटी भगिनी नीरू में। राजेश लखनऊ में एक प्रसिद्ध गवर्नमैन्ट एडवोकेट था। उसके पिता मर चुके थे और अब वह अपनी विधवा मां और छोटी बहन का एक मात्र अवलम्ब था। यद्यपि वह सरकारी नौकरी करता था परन्तु फिर भी कांग्रेस एवं महात्मा गांधी का कट्टर पुजारी था। उस की रग २ में क्षत्रियों का वीर रक्त प्रवाहित हो रहा था और अब वह "भारत छोड़ो" आन्दोलन में भाग लेने के लिये सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दे कर जा रहा था। अपनी जननी जन्म भूमि पर विदेशियों के अत्याचार देख कर उस का वीर रक्त खौल उठा था और बलिदान की वेदि पर मचल जाने को लालायित हो उठा था। उसकी भगिनी नीरू जो अभी केवल सोलह वर्ष की थी, मोह वश उसे जाने से रोक रही थी। परन्तु अपनी जाति पर बात आने से वह उसे दूर करती हुई सी बोली, "परन्तु भैया मां का तो ध्यान करो वह तुम्हारा जाना सुन कर कितनी दुःखी होगी ?" राजेश सान्त्वना के स्वर में बोला। नीरू ! तुम नहीं जानती। इस मां से भी बड़ी मां जो मेरी ही नहीं प्रत्युत सब भारतवासियों की मां-है, इस समय बेड़ियों में जकड़ी हुई है। उन बेड़ियों को हमें तोड़ना ही होगा, जिस के लिये कई वीरों का रक्त मां की छाती पर बिखर कर पवित्र होगा। नीरू मुझे आज्ञा दो मेरे साथी मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।" भैया के शब्दों में एक कटु सत्य की झलक या, भविष्य की भयानक कल्पना से नीरू सिहर उठी और उस के हृदय का आवेग आंसुओं के रूप में बहने लगा। राजेश उसे चुप कराते हुए बोला "पगली, । रोती क्यों हो, अपने इस प्रेम को त्यागमय बनाओ, ताकि यह मेरे ही समान सभी भाइयों की, जो मातृ-वेदि पर अर्पित होने जा रहे हैं, रक्षा करे तथा इस प्रकार अपने प्रेम को सार्थक करो।" नीरू एक दम सचेत हो आंसू पोंछती हुई बोली "भैया तुम मुझे इतनी भीरू समझ कर गलती कर रहे हो। क्या जानते नहीं कि हम दोनों की रग २ में एक ही रक्त का संचार हो रहा है ? तुम्हारी यह बहन किसी से कम नहीं। भारत मां की करुण आवाज मेरे हृदय को भी बींध चुकी है। खुशी से जाओ भैया ! रण भूमि में मेरा प्रेम तुम्हारी रक्षा करेगा।"बहन से बिदा ले, राजेश अपनी मां के पास आशीर्वाद लेने चला गया। वह वीर क्षत्राणी पुत्र को सांप के मुंह में हाथ डालते देख कर भी सम्भल गई। क्यों कि वह जानती थी कि वह विष उस के लाल को अमर कर देगा। परन्तु फिर भी ममता वश बोली, "बैटा इस दुखिया का भी ध्यान रखना। कहीं कुछ हो गया तो मेरा कोई अवलम्बन रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेश–मां ! ईश्वर सब की सहायता करता है । मुझे आशीर्वाद दो कि मैं भारत मां को स्वतन्त्र कराने में सहायक होऊं ।" मां भर्राए कंठ एवं आर्द्र नेत्रों से बोली, "ईश्वर तुम्हें भरपूर सफलता प्रदान करे !" और फिर राजेश चला गया, घर के संकीर्ण घेरे से निकल कर देश के विकसित दायरे में पदार्पण करने ।

× × ×

लखनऊ के एक सुनसान उपवन में रात्रि के समय तीन मानव मूर्त्तियां खड़ी बातें कर रही थी ।

एक मानव मूर्त्ति—"क्यों रमेश और सुरेश पूरी हो गई है न ? आज रात ही उस बुढ़िया का काम तमाम कर, नीरू को सेठ के यहां पहुँचा रुपया हड़पना होगा ।"

दोनों मानव मूर्त्तियां एक साथ—हां हां उस्ताद ! भला हम भी कभी ऐसे सुअवसर से चूकने वाले हैं ।" इस समय रात्रि के बारह बज चुके थे । समस्त संसार प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न रजनी देवी की काली ओढ़नी में विश्राम कर रहा था । और ये शहर के गुण्डे, प्रसिद्ध एडवोकेट राजेश की बहन नीरू को बूढ़े सेठ लक्ष्मीचन्द के यहां बेच कर रुपया ऐंठने की कुमन्त्रणा कर रहे थे । और आज ही रात उस की मां को मार कर उसे उडाने की योजना बनाई गई थी । कुछ समय के पश्चात् घण्टाघर ने एक बजाया और वे राजेश के घर की ओर चल दिए ।

× × ×

नीरू को चित्रकला का अत्यधिक चाव था वह इस समय रात्रि के एक बज जाने के उपरान्त भी चित्रकला कर रही थी ! उसी समय उसके साथ वाले कमरे में जोर का धड़ाका हुआ और साथ ही मां की दो दर्दनाक चीखें सुनाई दी । उस ने क्षण भर में सारी परिस्थिति का अनुमान लगा लिया और अपने कमरे का प्रकाश गुल कर छुप गई । उसी समय एक मानव मूर्त्ति उस कमरेमें आई और उसे ढूढ़ने ही वाली थी कि किसीने उसे बाहर खींच लिया तथा क्षण भर में उस्ताद ने लोभवश अपने दोनों शिष्यों का वध कर दिया । नीरू ने सुअवसर देखा तो झपट कर खिड़की से कूद गई और जाते समय अपने साथ कुछ रुपए तथा भैया की पोशाक लेती गई । चिरकाल तक भागने के उपरान्त वह एक बीरान उपवन में पहुँची और अपनी भयानक परिस्थिति पर विचार करके सिहर उठी । अब इस बे अन्त संसार में उसका कोई न था । भविष्य अपना विकराल मुँह खोले काले नाग सा उसे डसने को तैयार था । चिरकाल तक सोचने के पश्चात् वह यही निर्णय कर पाई कि उसे पुरुष का भेष धारण करना ही पड़ेगा और वह भी निकल पड़ेगी मातृ वेदि की तृषा शान्त करने । यह सोच उसने भैया की पोशाक पहन ली और स्टेशन पर पहुंच कर, देहली का टिकट लेकर वह गाड़ी में सवार हो गई । जब वह देहली पहुंची तो उस समय शान्त प्रातःकाल की उषा भी मानों धरती को अपने ही समान लाल देखने की भयानक कल्पना कर रही थी तथा पक्षियों का चहचहाना भी एक भयानक संदेश की सूचना देता दृष्टिगोचर होता था । वह एक होटल में ठहरी और नित्यकर्म से निवृत्त हो समाचार पत्र लेकर पढ़ने लगी । परन्तु ऊपर के शीर्षक पर दृष्टिपात होते ही वह काँप उठी और उसे मालूम हुआ कि वह अभी संज्ञाशून्य हो जाएगी । परन्तु वह सम्भल गई और उस सूचना को पढ़ती गई । सूचना कुछ इस प्रकार थी । क्रांतिकारियों का प्रसिद्ध नेता लखनऊ का प्रसिद्ध एडवोकेट गिरफ्तार । उसके साथियों को खोजने की भरपूर चेष्टा की जा रही है, जिन्होंने मिलकर दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्च सरकारी अधिकारियों का वध कर दिया है। वह इस समय देहली के बड़े बन्दीगृह में कैद है।"

यह सूचना पढ़ते ही उसके रक्त में एक बारगी बिजली सी लहर दौड़ गई और वह अपना बलिदान देकर भैया को बचाने की योजनाएँ बनाने लगी। सारा दिन विचारों की दुनियां में विचरण करते रहने से उसे मालूम ही न हुआ कि सूर्य कब का दिन भर की स्मृतियों से थक कर क्षितिज की गोद में सोने जा चुका है तथा रजनी ने अपनी तारोंभरी काली ओढ़नी से सम्पूर्ण विश्व को ढाँप लिया है। उसी समय अर्द्ध रात्रि सूचक घण्टों से उसको तन्द्रा भंग हुई और वह अपने आप को फिर से कल्पना की दुनियां से निकालकर वास्तविकता की दुनियां में पाने लगी। उसने उठकर कई पुड़ियां अपने पास रक्खीं और बड़े बन्दीगृह की ओर चल दी। वहां पहुँच उसने अर्द्ध निद्रित पहरेदार को कुछ सुँघाकर संज्ञाहीन किया और चाबी लेकर कमरा खोलने ही वाली थी कि किसी का करुण स्वर उसके कानों में पड़ा। वह भैया का स्वर पहचान गई और उसे निकाल कर बाहर ले चली। परन्तु जब दुर्भाग्य के बादल घिरते हैं तो नेत्रों के सम्मुख अंधेरा छा जाता है। यही हाल नीरू के साथ हुआ और वह दर्वाजा बन्द करना भूल गई। चौकीदार ने सचेत होने पर खतरे का घण्टा बजाया और सभी जेलर सचेत हो गए। नीरू भी पकड़ जाने के भय से अंधेरे में छुप गई और भैया को अपने पीछे छिपा कर अपने बलिदान के लिए तैयार हो गई। उसी समय चौकीदार ने अँधेरे में कोई दूसरी वस्तु देख कर अपनी शंका का समाधान करने के लिए गोली चलादी। परन्तु नीरू तो अपने बलिदान केलिए तत्पर थी। अतएव सीने पर गोली झेलकर भी वह पकड़े जाने के भय से स्थिर रही और चौकीदार के जाने के उपरान्त घायल नीरू भैया का सहारा ले एक उजाड़ उपवन में पहुँची और तथा भैया को आदि से अन्त तक सारी कहानी सुना दी राजेश बहन की वीरता सुनकर गद्गद् हो उठा। परन्तु वह तो अब जा रही थी तारों की दुनियां में—चिर निद्रा में निमग्न होने "भा···र···त···मां···की···ज···य"

यह शब्द हिचकियों द्वारा उसके मुँह से निकले और वह सदा के लिए भारत मां की गोदी में सो गई। राजेश भेष बदलकर अपनी प्रिय बहन के शव को लिए मरघट की ओर चल दिया। उसकी उस समयकी आकुलता एवं दुःख अवर्णनीय था। उसकी प्रिय बहन जिसके साथ उसने अपना पथ तय करना था, उसे छोड़ कर जा चुकी थी और अब उसे अकेला ही मंजिल तक पहुँचना था। उसने मन पर पत्थर रखकर चिता चुनी और नीरू को उस पर रख दिया। आह! कितना भयानक था वह दृश्य! एक ओर उसके अरमानों की चिता धू धू करके जल रही थी और दूसरी ओर उसकी मंजिल उसे पुकार रही थी। अन्तत वह चिता की ओर से मुँह फेर आगे चल दिया।

× × ×

राजेश ने जाते ही लखनऊ पर अधिकार कर लिया। लखनऊ पर अधिकार हो जाने के उपरान्त भारतवासियों को सुविधा हो गई और पन्द्रह अगस्त को अंग्रेजों को देश से निकाल तिरंगा लाल किले पर फहराया गया। परन्तु स्वतन्त्रता की नींव जिसके बलिदान की चिता पर डाली गई थी, वह जा चुकी थी। सारा श्रेय किसको था, जिसके बलिदान ने ने राजेश को आगे बढ़ने पर प्रेरित किया, वह इस संसार से कूच कर गई थी। और भारतवासियों के हृदय पटों पर अपने महान् बलिदान की एक अमिट छाप छोड़ गई थी।

—:*:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीसवीं सदी में तुलसीदास

[कुमारी मोहनी बी. ए. सनातन धर्म कालेज अम्बाला छावनी]

एक दिन बाजार में एक महानुभाव मेरे राह में आ खड़े हुये। ढीले ढाले कपड़े, दुबला पतला शरीर, घुँघरीले कुछ लम्बे बाल और आँखों पर ऐनक। उमर होगी, कोई···पर इस डालडे के जमाने में किसी की उमर का अनुमान लगाना लड़ाई मोल लेना है। सो छोड़िये इस बात को! हैरान होकर मैं देखती रह गई, तब महाशय जी बोले आपने पहचाना नहीं शायद। लगा जैसे कहीं स्वप्न में इन महाशय को देखा हो। मुझे चुप देख महानुभाव ने परिचय दिया—मैं तुलसीदास हूं! इस जन्म से बीस जन्म पहले ११वीं शताब्दी में मेरा आपसे परिचय हुआ था। मैं चकित सी रह गई, क्या क्या आप महाकवि तुलसीदास हैं? मलिन मुस्कान से उन्होंने स्वीकार किया। इतने जन्मों के पुराने परिचित, फिर अपने युग के सर्वश्रेष्ठ महाकवि उन्हें चाय पर बुलाने का लोभ मैं संवरण न कर पाई, और अगले दिन चाय के लिये घर पर आमंत्रित कर ही तो लिया। अपने स्वामी राम के भक्तों का हृदय दुखाना उन्हें रुचिकर न था शायद, इसी से अपना अमूल्य समय मुझे देने को वे मान गये, या शायद, माला के मनकों की जगह चाय के प्यालों के साथ ही वे २०वीं शताब्दी में राम का नाम जपा करते थे, इसी से प्रभु को जपने का अवसर खोना उन्होंने उचित न समझा।

दूसरे दिन कृपा निधान, रघुकुल शिरोमणि श्री रामचन्द्र जी के परम भक्त, भक्ति काल के संदर्भ, हिन्दी साहित्य के महान् कवि, पेंट की जेब में हाथ डाले, झूमते झामते घुँघरीले बालों को माथे पर बिखराये, ऐनक के शीशों के पीछे से खोई खोई नज़र डालते आ ही पहुँचे। जिन्हें देखकर हमारा मन गद्‌गद् हो उठा। आपको यह बता देना उचित होगा कि, कविशिरोमणि तुलसीदास जी आधुनिक काल के रिवाज अनुसार पूरा पौना घण्टा लेट थे।

चाय के दौरान में मैंने तुलसीदास जी से २०वीं सदी में अवतार धारने का कारण पूछा तो भक्त शिरोमणि तुलसीदास जी ने प्याला मेज़ पर टिका दिया और सिगरेट सुलगाते हुये कहने लगे परन्तु उनके कुछ कहने से पहले ही मैं आश्चर्य चकित सी कह उठी 'आप·· आप···? मेरा हाथ उनकी सिगरेटकी तरफ़ इशारा कर रहा था। तुलसीदासजी अपने भक्तों को निहाल कर देने वाली मुस्कानकेसाथ बोल उठे 'ओह···यह! आप नहीं जानती शायद कि २०वीं शताब्दी का तुलसीदास यानी कि आधुनिक कवि! सो मेरी कल्पना इतनी गुस्ताख नहीं है कि सिगरेट का सिगनल पाये बिना लम्बी उड़ान ले सके।

'लेकिन १६वीं शताब्दी में तो···।'

हाँ हाँ, तब सिगरेट नहीं होती थी, तभी तो उन दिनों कुछ लिख नहीं पाया, और जो कुछ लिखा वह गलत।

मैं चुप रह गई।

कवि कुल शिरोमणि अपनी गाथा सुनाने लगे—

एक दिन स्वर्ग से बाहर घूमने निकला तो मुझे अपना नाम इधर उधर गूँजता सुनाई पड़ा। पता चला भूलोक में हमारी बहुत प्रशंसा हो रही है। मन्दिरों में हमारा नाम जपा जाता है धार्मिक गोष्ठियों में हमारा सन्मान होता है। राजनीतिक गोष्ठियों में हमारा सत्कार होता है, साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठियों में हम पर घण्टों लगातार बोला जाता है। स्कूलों में विद्यार्थी रोते पीटते हमें जपा करते हैं। कालिजों में प्रोफेसर हमारा नाम लेते ही गद्गद् हो उठते हैं। अपना इतना सम्मान होते देख हम फूल उठे, इतना फूले, इतना फूले कि स्वर्ग में हमारे लिये स्थान न रहा और अपना बोरिया बिस्तर समेट हम भूलोक में अपने प्रेमियों के मध्य आ उतरे।

गोस्वामी जी की गाथा, रामचरित मानस से भी कुछज्यादा मनोरंजक ही लग रही थी और मैं विस्मित सी अब सुन रही थी। गोस्वामी जी फिर कहने लगे भूलोक पर हमने अपने को डगमगाते, चहचहाते बाजारों में पाया। इतनी खिलखिलाहट, मधुर आवाजें, कोमल मुस्कानें, पल भर को तो मैं हैरान ही रह गया। प्रतीत हुआ किसी और ही देवलोक में आ पहुंचा हूं। गिट पिट गिट पिट का चारों ओर शोर था।

रहने के लिये कई घरों के द्वार खटखटाये गये, पर चोर, लफंगा, बदमाश शब्दों से हमारा स्वागत हुआ। अपनी किस्मत पर रोने के लिये हमें बाहर छोड़, किवाड़ बन्दकर लिये गये। वाह रे भक्तो! तुम्हारी भक्ति कहकर हमने धर्मशालाओं, होटलों की धूल छानी पर जनाब हम अपनी प्रशंसा से इतने फूले हुए थे कि कहीं भी टिकने को स्थान न मिला। थक कर चूर चूर हो गये थे, सीस पकड़ ही बिस्तर लम्बा किया और लेट रहे। रात भर पीं पीं पीं पीं का मधुर संगीत हमारे स्वप्नों को मधुर तम बनाता रहा। सुबह बोरिया बिस्तर समेट सैर को निकल पड़े। देखा एक जगह दो लड़कियां खड़ी हैं। मधुर अवाज आई, एक लड़की कह रही थी, मैं बाग में फूल चुन रही थी, उसी समय वे आये। मैंने देखते ही प्रण कर लिया यही मेरे हैं। मैं यह सुनकर अत्यन्त प्रफुल्लित होउठा। मेरा उपदेश आज तक कितना माना जाता है। मैं आधुनिक काल की सीता के चरणों में गिर अपने स्वामी का पता पूछने ही वाला था कि कर्कश ध्वनि कानों में आई कलमुँही, मुझे पता नहीं था तू इस तरह कुल की नाक कटायेगी, आई बड़ी प्रण करने वाली और मैंने देखा सीता जी को कोई देवी जी घसीटती हुई लिये जा रही थीं। हमारा कोमल हृदय अत्यन्त द्रवित हो उठा। अपने अँगोछे से आँखें पोंछ हम आगे बढ़े। दो बड़ी बूढ़ियां बातें कर रही थीं, सुनाओरी बहन कहती है मैं रामके साथही जाऊँगी। लाख कहा उसे जाकर नौकरी चौकरी पक्की कर लेने दे, पर उसे तो क्षण भर चैन नहीं। मेरे कानों में कुछ शब्द गूंज रहे थे, 'सिया राम मय सब जग जानी' उन शब्दों की सार्थकता का भी अनुभव हुआ, हर कहीं मुझे राम सीता के चरित्र की पवित्र बातें सुन रही थीं। शब्द से मेरा मस्तक नत हो गया। मैं उन देवियों के पास जाकर अपनी जानकी का पता पूछने को ही था कि देवी जी की आवाज कानों में आई, सच बहन ऐसी आग लगी है इन कलमुहीं छोकरियों को, कि ज़रा धरम नहीं। हमारे जमाने में तो सीता राम सीता राम!

छी छी! पवित्र जानकी के प्रति कैसा घोर अन्याय! हम आगे बढ़े। × × ×

पता चला पास ही कहीं साहित्यिक गोष्ठी हो रही है। अपने राम भी अकड़ते ऐंठते वहीं चल दिये। कोई महानुभाव हमीं पर लैक्चर दे रहे थे— हम गद्गद् हो उठे। अकड़ कर जब स्टेज के पास जाने लगे तो रोक लिये गये। कितना कहा भाई मैं तुलसीदास हूँ, पर उनका उत्तर था हम नहीं जानते तुलसी बुलसी किसी को भी। वाह रे महामूर्खों के समाज और धन्य हो साहित्यिक गोष्ठियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्धको, हमने मन में कहा और अपने राम भी अकड़ गये। आखिर पाँच मिनट का समय मिला। बोलने को अपने अँगोछे से मुँह पोंछ, मूछों पर ताव देते हुये, जब हम स्टेज पर खड़े हुये तो हा हा हा, ही ही ही शोर, मच गया। सोचा स्वागत करने का कोई नया ढंग होगा। अपने राम बोलने लगे ही थे कि आवाजें आई, काना…काना…हम घबरा ही गये। जल्दी से अपनी आँखों को टटोला सही सलामत थीं। एक आंख बन्द कर दूसरी से देखा—दोनों ठीक, मामला क्या है? पता चला लोग गाना सुनना चाहते हैं। अपने राम ने अपने मधुर गले को साफ़ कर अलाप जो शुरू किया तो तालियों से हाल गूँज उठा, पर किसी ने हमारी बांह पकड़ स्टेज से नीचे घसीट लिया। दिल के अरमान दिल ही में रह गये। × ×

गोस्वामी जी भी आँखों से झर झर आँसू बहने लगे तो मैंने अपनी पूरी सहानुभूति उन्हें जतलाई और बतलाया कि प्रतिदिन राम सीता व तुलसी की यही दुर्दशा भारत में होती है। अपने रेशमी रूमाल से ऐनक के शीशे पोंछ वे फिर कहने लगे—

हम अपने पात्रों के साथ यह घोर अन्याय होते न देख पाये और हमने एक महाकाव्य तैयार किया, जिसमें माता जानकी व प्रभु राम के प्रति दुर्वचन कहने वालों की खूब निन्दा की और उसे छपवाने के लिये हम प्रकाशक महोदय के पास ले गये। अपना परिचय दिया—पर हमारी ढीली ढाली धोती देखकर तो उनके माथे पर ऐसे बल पड़े जैसे मूर्ख विद्यार्थी को देखकर अध्यापक के माथे पर पड़ते हैं और वे महाशय हम पर ऐसे झपटे जैसे चूहे पर बिल्ली झपटती है। हम डर कर दरवाजे के पास खड़े हो गये, तो महाशय बोले, हम नहीं जानते किसी तुलसी-बुलसी को, भागो यहाँ से। हमने देखा वे अपने लड़के को श्रद्धा पूर्वक अयोध्याकांड के अर्थ समझा रहे थे। बड़े बे आबरू होकर उनके कूचे से हम निकले।

उसके बाद हम अपना ग्रन्थ लिये लिये अनेकों प्रकाशकों से मिले। किसी ने प्रगतिवादी ग्रन्थ कहकर धुत्कारा तो किसी ने छायावादी कह कर। कोई इसमें उद्देश्य ढूँढने लगे तो किसी ने आदर्शवादी कहकर इसका तिरस्कार किया। कोई महाशय इसे यथार्थ का नष्ट चित्र कह कर न जाने क्या क्या बकने लगे। किसी ने बड़े आकार को दोष माना तो किसीको छन्दोबद्ध रचना होनेके कारण पसन्द नहीं था। अन्त में पता चला आजकल महाकाव्यों का युग नहीं, गीतों का युग है। स्वर्ग द्वार बन्द हो चुके थे। घूमते घूमते जूतीयां टूट गई, पैरों में छाले पड़ गये, कपड़े फट गये, खाने पीने को फाका और जेब खाली। तब अपने महाकाव्य को कबाड़ियों के पास बेचकर कुछ पैसे लिये और चने बेचने का काम शुरू किया। कविता शविता की बीमारी से पीछा छुड़ाया। चाय पीकर गम गलत किया देखा चने बेचने में बहुत फायदा है पैसे के चने ले, पानी पीकर सोने वालों का भारत में अभाव नहीं। चने की दुकान से कुछ लाभ हुआ, जेब गर्म हुई तो कविता करने का शौक फिर भर्रा आया। भूलोक की रीतियों का अनुभव हो जाने के कारण सूट सिलवाया। कल्पना की। दौड़ के लिये सिगरेट खरीदा। छन्दों को तोड़ तोड़ कर स्वछन्द बनाने के लिये अकल का हथौड़ा मजबूत किया और कागज काले करने शुरू कर दिये।

इतना कहकर गोस्वामी जी मुस्करा उठे। मैं तो उनकी गाथा सुनते सुनते विस्मृत हो गई थी। अवाक् सी बैठी रही। महाकवि फिर कहने लगे २०वीं शताब्दी ने मेरी आँखें खोल दी हैं। अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे अनुभव हुआ है कि उन दिनों मैंने महाकाव्य लिखकर घोर मूर्खता की बेचारे विद्यार्थियों के गले व्यर्थ मुसीबत डाली। उन दिनो तो मुझे महाकाव्य के लक्षणों तक का पता न था। न जाने महाकाव्य लिखने की गुस्ताखी कैसे कर बैठा। उस गलती के लिये बहुत शरमिंदा हूं और अब प्रायश्चित्त कर रहा हूं।

'वह कैसे' मैं पूछ उठी!

अपनी सिगरेट को ऐशट्रे में रखते हुये, गोस्वामीजी मुस्करा उठे। अरे! यह भी कोई पूछनेकी बात है। अब मैं समझ गया हूं कि कालिज में पढ़े बिना कोई व्यक्ति कवि नहीं बन सकता। इस लिये अब बी. ए. की तैयारी कर रहा हूं। पिछले वर्ष फेलहो गया था अब अप्रेलमें बी. ए. होरहा हूं। धन्य है हमारी पंजाब यूनीवर्सिटी की मशीन जो वर्ष में दो बार नये पालिश में रंग, बी. ए. की पूछ लगा फटाफट ग्रेजुऐट निकालती जा रही है। नहीं तो हम जैसे विद्वान् एफ. ए. में ही अटके रह जाते। और हिन्दी साहित्य में हम अमूल्य रत्नों का अभाव ही रह जाता। आशा है रोयल डिवीजन में पास हो जाऊँगा फिर गीत लिखकर हिन्दी साहित्य में अपना नाम रौशन करूँगा। और देखिये हमारा विचार है कि महाकवि बनकर महाकाव्य लिखने में क्या धरा है? यदि यह गीतों का ही युग है तो क्यों न किसी फिल्म कम्पनी में पहुँचा जाय? दो तीन सौ शब्दों की पूँजी होनी चाहिये बस उन्हीं के हेर फेर से कुछ गीत लिख डाले और फिर देखिये कि भारत के हर प्रान्त में, प्रान्त के हर शहर में, शहर के हर कूंचे में, और कूचे के हर घर में हमारे गीत ही गूँजेंगे। घर के हर प्राणी के लबों पर हमारे ही गीत होंगे। कहिये आपका क्या विचार है?

अब आप ही बताइये मैं उन्हें क्या उत्तर देती? चुप रह गई। तुलसीदास जी 'बाई बाई' करके चलते बने और मैं कहती रह गई, धन्य धन्य, धन्य हैं आप, बीसवीं सदी के तुलसीदास!

—:o:—

पंजाब, पैप्सू और हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक छपने वाला

"आर्य्य" साप्ताहिक

जनता का अपना पत्र है। निर्भीक विचार, गंभीर धार्मिक राजनैतिक और साहित्यिक लेख इसकी अपनी विशेषताएं हैं।

नारी जगत् और शिशु संसार स्तंभ आप के परिवार के हर सदस्य का स्वस्थ मनोरंजन और नेतृत्व करते हैं। इस लिए आज ही ६) भेजिये और साल भर तक प्रति सप्ताह ज्ञान अमृत पान कीजिये।

पता—"आर्य" कार्यालय

निकलसन रोड, अम्बाला छावनी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य-क्रम

पंजाब प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नई कार्य कारिणी की प्रथम बैठक २५-१-१९५३ को अम्बाला छावनी में सम्मेलन के कार्यालय आर्य प्रेस निकलसन रोड में दुपहर दो बजे श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी के सभापतित्व में हुई। उपस्थिति इस प्रकार से थी। प्रधान श्री स्वामी स्वतंत्रानन्दजी भीमसेन विद्यालंकार, श्री गणपतराय जी कोषाध्यक्ष श्री वैद्य कुलानन्द जी अम्बाला छावनी, श्री लज्जावती जी एम. ए. भंडारी लुधियाना। कार्यकारिणी के इन सदस्यों के अतिरिक्त निम्नलिखित महानुभाव विशेष रूप से निमंत्रित किये गये थे, और बैठक में उपस्थित थे।

श्री दीवान अलखधारी जी, श्री जयनाथ नलिन, श्री देवकीनन्दन शर्मा, श्री अर्जुनदेव जी रविवर्मा स्टाल वर्कस अम्बाला छावनी। श्री सत्यपाल जी प्रधान पैप्सु हिन्दी सम्मेलन, श्री लाजपतराय जी वकील पटियाला, श्री दयालसिंह जी नेगी, श्री सेवतीप्रसाद जी बंगाली मुहल्ला अम्बाला छावनी, श्री लक्ष्मीदत्त जी वैद्य, श्री सदानन्द जी आर्य, श्री मेहरचन्द जी, श्रीमती बसन्त मालती जी, सुपुत्री श्री दीवान अलखधारी जी।

कार्य कारिणी के गत अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी गई और सपुष्ट हुई। निम्न निश्चय किये गये।

१. सभापति जी ने नियमावली के अनुसार कार्य कारिणी के लिये श्री सत्यपालजी पैप्सु युनियन पटियाला तथा श्री लाजपतराय जी को सम्मेलन की कार्यकारिणी का सदस्य नियत किया।

२ (क) श्री कोषाध्यक्ष गणपतराय जी ने हिसार के वार्षिक अधिवेशन के प्रतिनिधियों से प्राप्त शुल्क का आय-व्यय का ब्यौरा सुनाया। निश्चय हुआ कि अंकित किया जाय।

(ख) कोषाध्यक्ष महोदय हिसार के वार्षिक अधिवेशन से पहले—तथा अम्बाला अधिवेशन के बाद प्राप्त प्रतिनिधि शुल्क का ब्यौरा तैयार करके कार्य कारिणी के आगामी अधिवेशन में उपस्थित करें।

(ग) १९५३ के आय-व्यय का निम्नलिखित आनुमानिक ब्यौरा उपस्थित किया गया।

आय

सदस्य शुल्क २) प्रति १५०० सदस्य	३०००)
आजीवन सदस्य १००) प्रति ५ सदस्य	५००)
सहायक सदस्य १०) प्रति ५० सदस्य	५००)
दान से प्राप्त किया जाय	१०००)
कुल जोड़	५०००)

व्यय

प्रचारक वेतन १००)	१२००)
मार्ग व्यय	६००)
साहित्य निर्माण ३००) हिन्दी संदेश २००)	५००)
टाइप राईटर	५००)
कार्यालय व्यय	४००)
मिश्रित	३००)
कुल जोड़	३५००

प्राप्त राशियों के अनुपात से ही व्यय किया जाय। इस शर्त के साथ यह बजट स्वीकार किया गया।

हिन्दी संदेश का आनुमानिक आय-व्यय १९५३

आय

ग्राहक संख्या ४०० ६) प्रति	२४००)
निःशुल्क १००	
विज्ञापन आय	६००)
विशेष सहायता दान द्वारा	५००)
कुल अनुमानिक आय	३५००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यय

कागज़ २४ रीम १२) प्रति रीम	२८८)
छपाई ११६) प्रति मास ४ फार्म तथा २८) प्रति फार्म दर और चार पृष्ठ टाइटल	१३६२)
डाक व्यय २०) प्रति मास	२४०)
फुटकर	८०)
कुलजोड़	२००r)

हिन्दी संदेश में पैप्सु-सम्मेलन के लिये पृथक ८ पृष्ठों का विभाग रखा जाए। सम्पादक मंडल में निम्नलिखित सज्जन सम्मिलित किये जाएं, संचालक श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी प्रधान मु० सम्पादक— श्री भीमसेन जी विद्यालंकार प्रधान मन्त्री, श्री जयनाथ जी नलिन, श्री योगेन्द्रमोहन जी लुधियाना, श्री सत्यपाल जी पैप्सु, श्री गणपतराय जी कोषाध्यक्ष प्रबन्ध सम्पादक।

सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के प्रस्तावानुसार निम्नलिखित सज्जनों की उपसमिति हिन्दी संदेश को उन्नत करने के लिये बनाई गई—

श्री गणपतराय जी, श्री सत्यपाल जी पैप्सु, श्री युद्धवीरसिंह जी हिसार, श्रीमती शन्नोदेवी जी, श्री गणपतराय जी इसके नियोजक होंगे।

डिस्ट्रिक्ट बोर्डों, म्युनिसिपल कमेटियों को सम्मे- की ओर से पत्र लिखकर आन्दोलन संगठित किया जाय कि वह अपनी कार्यवाही नोटिस तथा फहरिस्तों का छपाना आदि कार्य हिन्दी देवनागरी में किया करें।

सम्मेलन के आगामी वार्षिक अधिवेशन के सम्बन्ध में निश्चय किया गया कि सम्मेलन की उपप्रधाना श्रीमती शन्नोदेवी जी को पत्र लिखकर प्रेरित किया जाय कि वह अमृतसर के स्थानीय हिंदी प्रेमियों की सभा बुलाकर वार्षिक अधिवेशन की तिथियाँ १९५४ के अप्रैल मास के अन्तिम सप्ताह में नियत कर, उसके लिये आवश्यक तैयारी करें।

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सदस्यों के सहयोग से पंजाब पैप्सु-हिमाचल के लोक गीतों का संग्रह करके उसे क्रमशः हिन्दी-संदेश में मुद्रित तथा प्रकाशित कराया जाय।

पंजाब पैप्सु हिमाचल के विविध शहरों में निम्न लिखित महानुभावों के सहयोग से हिन्दी प्रचारिणी सभाओं की स्थापना, लोक गीत संग्रह तथा सदस्य निर्माण और हिन्दी संदेश को प्रचारित करने की व्यवस्था की जाय।

श्री रमेशचन्द्र जी दीन नगर, ओम्प्रकाश जी रामामंडी, श्री अजीतसिंह जी किरती ग्राम कुथारा, डा० कबाला कालाबाली हिसार, होशियारपुर, मदन मोहन जी वैद्य, श्री शान्ता कार्वायत्री गुप्ता एम. ए. जम्मू, पं० बनबारीलाल जी गुरुदासपुर, बटाला दीवानचन्द जी वैद्य, पैप्सु पटियाला सत्यपालजी प्रधान पैप्सु सम्मेलन, फिरोजपुर श्री तेगराम जी, श्री डा० परशुराम जी फिरोजपुर छावनी, श्री हरबंस लाल जी भूषण मथुरादास स्कूल मोगा, श्री नित्यानन्द जी पटेल, फाजिलका श्री सुनामराय जी, श्री कोकचन्द्र जी हिसार, श्री सेठ महेशचन्द जी हिसार, शिवकुमार जी सिरसा, श्री प्रिंसिपल बधावाराम जी रिवाड़ी, पारब्रह्म परमार्थी आर्य समाज रिवाड़ी, श्री गणेशदास जी भिवानी, अम्बाला छावनी हिन्दी प्रचारिणी सभा, श्री रामचन्द्जी जावेद जालंधर छावनी, श्रीमती लज्जावती जी भंडारी, प्रिंसिपल हरबंसलाल जी जोशी भटिंडा, प्रिंसिपल म० हंसराज स्कूल, श्री विद्याधर जी एम. एल. ए. चम्बा, श्री रामदेव जी पठानकोट, पानीपत स्वामी आनन्द देव बन्धु गांधी खद्दर भंडार, सोनीपत मनोहरलाल शहीद वकील, शिमला श्रीमती सीता-देवी जी, तेगरामजी शिमला, श्री रघुनन्दन जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्री एम. ए. हिन्दी प्रचारिणी सभा शिमला।

तदनन्तर श्री स्वामीजी ने स्थानीय हिन्दी प्रचारिणी सभा अम्बाला छावनी के अधिकारियों और सदस्यों तथा पैप्सु हिन्दी सम्मेलन के प्रतिनिधि सत्यपाल जी तथा श्री लाजपतराय जी एडवोकेट से वहां की स्थिति के सम्बन्ध में विचार विनिमय कर हिन्दी प्रचार आन्दोलन के सम्बन्ध में मार्ग प्रदर्शन कर सम्मिलित रूप में एक नीति के अनुसार पैप्सु हिमाचल तथा पंजाब और कश्मीर में हिन्दी प्रचार आंदोलन के संचालन के लिये प्रेरणा की। हिन्दी-संदेश द्वारा पंजाब निवासी लेखकों के सहयोग से साहित्य निर्माण के लिये प्रेरित किया।

तदनन्तर ४॥ बजे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के सभापतित्व में सनातन धर्म कालेज अम्बाला छावनी में हिन्दी साहित्य गोष्ठी की गई। इसमें कविता कहानियों द्वारा जनता का अभिनन्दन तथा मनोरंजन किया गया। इस गोष्ठी में पढ़ी गई। दो कहानियां '२०वीं सदी में तुलसीदास जी' तथा 'बहन का बलिदान' इसी अंक में प्रकाशित की जा रही हैं। × × ×

श्री शिवलाल जी प्रधान प्रधान राष्ट्रभाषा समिति जैतो लिखते हैं—

पैप्सु-में रियासत को हिन्दी विभाग और पंजाबी विभाग में विभक्त किया गया है। पैप्सु के ३/४ प्रदेश को पंजाबी विभाग में और दो तहसीलों को हिन्दी विभाग में, यह विभाजन गलत है क्यों कि पंजाबी विभाग में भी हिन्दी भाषा का पर्याप्त प्रचार है। पंजाबी विभाग में कोट कपूरा, जैतो गोनियाना भटिण्डा रामाफूल मानसा धुरी आदि सम्मिलित किये गये हैं परन्तु इस क्षेत्र में हिन्दी पंजाबी दोनों भाषाएँ साथ २ बोली जाती हैं अतः इस क्षेत्र को पंजाबी विभाग में अंकित करना अन्याय है। यदि इस प्रदेश की जनता का लोकमत लिया जाय, तो मंडियों की बहु संख्या पंजाबी विभाग में सम्मिलित होने के विरुद्ध राय देगी। तथा कथित हिन्दी प्रदेश में हिन्दी और पंजाबी दोनों सरकारी और अदालती भाषा मानी गई हैं। परन्तु तथा कथित पंजाबी प्रदेश में केवल पंजाबी को ही सरकारी तथा अदालती भाषा माना जाता है। यह सरासर अन्याय है। हिन्दी प्रदेश में हिन्दी और पंजाबी प्रदेश में क्रमशः स्कूलों में हिन्दी और पंजाबी को शिक्षा का माध्यम स्वीकार किया गया है। इस प्रकार से पंजाबी प्रदेश की हिन्दी भाषा भाषी जनता को भारी दिक्कत पेश हो रही है क्योंकि इस प्रकार उन्हें भारत के नए संविधान के जन्म सिद्ध अधिकारों के अनुसार सन्तानों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा लेने के अधिकार से वंचित किया जा रहा है। यहाँ सच्चर फार्मूले के अनुसार भी कार्य नहीं किया जा रहा है।

हिन्दी पंजाबी की भांति पैप्सु की प्रदेशीय भाषा है। इसके अतिरिक्त सारी पैप्सु रियासत में राष्ट्रभाषा के रूप में भी इसे विशेष स्थान मिलना चाहिये। परन्तु इसे न तो पंजाबी के समान स्थान दिया जाता है और नाही इसे इंगलिश भाषा का स्थान दिलाने का भी पैप्सु में कोई यत्न किया जा रहा है। पैप्सु के वर्तमान मंत्रिमंडल में हिन्दी प्रदेशके व्यक्ति हैं। परन्तु अभी तक उनद्वाराहिन्दी भाषभाषियों की दिक्कतों को दूर करने के लिये कोई यत्न नहीं हो रहा है। पैप्सु का वातावरण हिन्दी के लिए निराशाजनक तथा प्रतिकूल है—

—लुधियाना चम्बा हिसार और अम्बाला शहर में स्थानीय हिन्दी प्रचारिणी सभाओं को संगठित कर मासिक साहित्यिक गोष्ठियों की योजना का क्रम जारी किया गया है।

(शेष पृष्ठ २६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैप्सु विभाग

(पटियाला ईस्टर्न स्टेट्स युनियन)

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्य कारिणी तथा पैप्सु हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्य कारिणी ने हिन्दी सन्देश को पंजाब, पैप्सु, हिमाचल के संयुक्त मुख्यपत्र के रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। तदनुसार पैप्सु विभाग पृथक् सम्पादित किया है। इस विभाग के सम्पादक श्री सत्यपाल गुप्त प्रधान पैप्सु हिन्दी सम्मेलन हैं। पैप्सु सम्मेलन के सदस्यों को हिन्दी सन्देश पांच रुपये वार्षिक मूल्य में दिया जायगा। आशा है पैप्सु तथा हिमाचल प्रदेश के हिन्दी प्रेमी हिन्दी सन्देश को अपनाएंगे।

—भीमसेन सम्पादक हिन्दी सन्देश

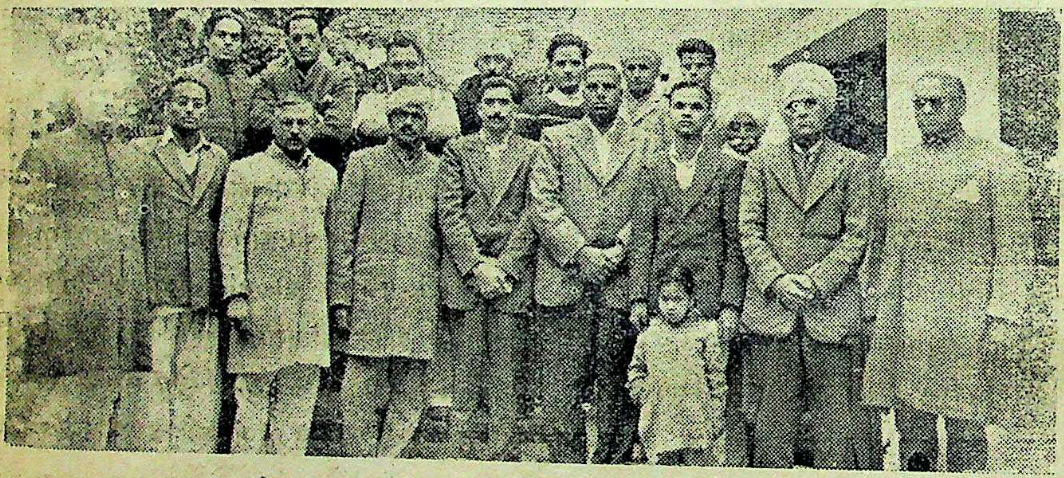

पैप्सु हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्य कारिणी के सदस्य

दाईं ओर से :—

श्री लछमणदास जायसवाल, प्रधान मंत्री पैप्सु अकसाईज कौन्ट्रैक्टर युनियन। दीवान हरिकृष्ण खोसला प्रधान सनातन धर्म संस्कृत अंग्रेजी हाई स्कूल समिति पटियाला। श्री सत्यपाल गुप्त प्रभाकर प्रधान पैप्सु-प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन। सुबेदार ओंङ्कार सिंह उप गृहमन्त्री पैप्सु राज्य श्री चो० इन्द्रसिंह माल मन्त्री पैप्सु राज्य उप प्रधान हिन्दी साहित्य सम्मेलन। श्री पं० भीमसेन विद्यालंकार प्रधान मन्त्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन पंजाब। डा० सत्यप्रकाश कपूर प्रधान मन्त्री पैप्सु प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन। श्री कृष्ण बिहारीलाल माथुर। श्री बाबूराम (दूसरी लाईन) श्री शरण दास। शाम लाल। श्री तारानाथ। आचार्य दुर्गादत्त शास्त्री। श्री विद्यासागर लेक्चरर। नेता श्री सुरेन्द्र नाथ खोसला प्रधान मन्त्री कांग्रेस। श्री त्रिलोक चन्द चड्ढा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैप्सु प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावली

नाम—इस संस्था का नाम पैप्सू प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन होगा।

उद्देश्य—हिन्दी साहित्य के सब अंगों की पुष्टि और उन्नति के लिए प्रयत्न करना।

(ख) पैप्सू प्रदेश की जनता और राज काज में राष्ट्र-भाषा हिन्दी और राष्ट्र लिपि देवनागरी का विस्तार करना।

(ग) आवश्यकतानुसार नागरिक और हिन्दी प्रचारिणी हिन्दी सभाओं, पुस्तकालयों और प्रकाशन संस्थाओं की उन्नति में सहयता करना और हिन्दी सेवियों को प्रोत्साहित करना।

(घ) उपरिलिखित उद्दश्यों की सिद्धि और सफलता के लिये अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जायें उन्हें काम में लाना।

(ङ) हिन्दी राष्ट्र भाषा, हिन्दी साहित्य एवं देव नागरी से सम्बंध रखने वाले विषयों के अतिरिक्त इस संस्था में राजनीतिक, सामाजिक, अथवा मत मतान्तर सम्बन्धी विषयों पर विचार न किया जावेगा।

सदस्य—हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के प्रेमी मात्र जिन की अवस्था ८ वर्ष से कम न हो इस सम्मेलन के सभासद हो सकते हैं। वह सभासद दो प्रकार के होंगे (क) साधारण सभासद (ख) विशिष्ट सभासद।

जो व्यक्ति सम्मेलन को एक रुपया वार्षिक शुल्क देगा वह सम्मेलन का साधारण सदस्य होगा और जो व्यक्ति सम्मेलन को किसी विशेष काम के लिये १०० रुपये या इस से अधिक दान दे वह सम्मेलन का विशिष्ट सदस्य होगा। कार्यसमिति को यह अधिकार होगा कि किसी व्यक्ति को उसकी हिन्दी भाषा सम्बंधी सेवाओं के लिये बिना शुल्क अपना सदस्य बना ले।

मुख्य स्थान—सम्मेलन के प्रधान कार्यालय पटियाला में होगा।

पदाधिकारी—सम्मेलन का कार्य संचालनके लिये नीचे लिखे अनुसार पदाधिकारी होंगे।

सभापति—दो उपसभापति, प्रधानमन्त्री, प्रबंध मन्त्री, साहित्यिक मंत्री, अर्थ मंत्री, कार्यालय मन्त्री, आय—व्यय परीक्षक, इस के अतिरिक्त कार्य समिति के ११ सदस्य तक हो सकेंगे।

स्थायी समिति—सम्मेलन के अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्तावों के अनुसार अगले अधिवेशन तक नियत कार्य क्रम चलाने के लिये सम्मेलन की प्रतिनिधि रूप एक समिति होगी, जो सम्मेलन की स्थायी समिति होगी। इस का संगठन प्रति ३ वर्ष के पश्चात् होगा और उसके निम्नलिखित सदस्य होगें तथा उन को एक रुपया वार्षिक स्थाई समिति की सदस्यता का शुल्क देना होगा।

निम्नलिखित व्यक्ति सदस्य होंगे।

(१) पिछले सब अधिवेशनों के सभापति एवं प्रधान मन्त्री।

(२) सारे जिला सम्मेलनों की ओर से स्थायी समितियों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि, जिन की संख्या जन-गणना के अनुसार होगी और दो लाख पर एक प्रतिनिधि लिया जावेगा।

(३) जिला सम्मेलनों के अतिरिक्त अन्य सम्बन्द्ध संस्थाओं के प्रतिनिधि जिन की संख्या कार्य समिति द्वारा निर्धारित होगी। यह संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी संस्था की ओर से दो से अधिक न होगी तथा ऐसी सारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों की संख्या दस से अधिक न होगी।

(४) सम्मेलन के सारे विशिष्ट सदस्यों द्वारा निर्वाचित सदस्य, जो दस से अधिक न होंगे।

स्थायी समिति का किसी बैठक का काम मन्त्रियों के अतिरिक्त कम से कम अन्य पांच सदस्यों की उपस्थिति के बिना न होगा। स्थायी समिति का कर्तव्य होगा कि तीन वर्ष का (१) कार्य विवरण (२) आय व्यय का हिसाब, प्रधान मन्त्री द्वारा उपस्थित करे।

कार्य समिति :—सम्मेलन का कार्य संचालन करने के लिये २१ सदस्यों की एक कार्य समिति होगी जिसका संगठन निम्न प्रकार से होगा। सारे पदाधिकारी तथा १० सदस्य। इस समिति का कोरम ५ होगा।

स्थायी समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह अपने प्रदेश में भिन्न २ स्थानों पर अपनी नियमावली के अनुसार सम्मेलनों की शाखाएं स्थापित करे तथा दो रुपये सम्बन्ध शुल्क दें।

आय व्यय के हिसाब और अनुमान पत्र तथा वार्षिक विवरण के लिये सम्मेलन का वर्ष एक जनवरी से ३१ दिसम्बर तक हुआ करेगा, किन्तु स्थायी समिति सम्मेलन के चौथे वर्ष की स्थायी समिति के बनने तक कार्य करती रहेगी।

सभापति का चुनाव :—सम्मेलन के अधिवेशन के लिये सभापति चुनने के लिये सम्मति देने का अधिकार केवल स्थायी समिति के सदस्यों को होगा। अधिक मत पाने वाला व्यक्ति सभापति निर्वाचित होगा। चुनाव से एक मास पूर्व चुनाव की तिथि की सूचना, नाम पेश करने की सूचना तथा नाम वापिस लेने की तिथि की सूचना, प्रधान मन्त्री द्वारा समाचार पत्रों को देनी आवश्यक होगी, जिस में से कम से कम दो समाचार पत्रों में उसका प्रकाशित होना आवश्यक होगा। सभापति अपनी कार्य समिति की नियुक्ति स्वयं करेगा।

अनुशासन :—यदि सम्मेलन का कोई सदस्य या अधिकारी सम्मेलन के उद्देश्यों अथवा उपनियमों या सम्मेलन के हित या स्थाई समिति की आज्ञा के विरुद्ध आचरण करेगा तो स्थाई समिति को अधिकार होगा कि कार्य समिति के परामर्श देने पर उसको सम्मेलन की सदस्यता, किसी समिति या उपसमिति की सदस्यता से अथवा किसी पद या अधिकार से सदा के लिये या कुछ समय के लिये हटा दे।

उपनियम :—स्थायी समिति को अधिकार होगा कि सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये ऐसे उपनियम बनाये जो उपर्युक्त नियमों के प्रतिकूल न हों। स्थायी समिति द्वारा संगठित समितियों को भी अधिकार होगा कि अपने कार्य के संचालन के लिये आवश्यक उपनियम बना कर स्थायी समिति से स्वीकृति ले कर कार्य में परिणत करे।

नियमों में परिवर्तन :—इन नियमों में परिवर्तन के सुझाव का अधिकार सम्बद्ध जिला सम्मेलनों तथा हरेक सदस्य को होगा, किन्तु इसका प्रस्ताव दो मास पूर्व प्रधान मन्त्री के पास लिखित रूप में आना चाहिये। स्थाई समिति प्रत्येक ऐसे प्रस्ताव को अपने मंतव्य के सहित अगले अधिवेशन में पेश करेगी।

स्थाई समिति का सभापति :— प्रत्येक सम्मेलन का सभापति सम्मेलन के आगामी वार्षिक अधिवेशन तक स्थायी समितिका सभापति होगा उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अनुपस्थिति में उपसभापति उनका काम करेंगे, उपसभापति भी न हो तो समिति किसी भी उपस्थित सदस्य को उस बैठक के लिये सभापति बना सकती है। स्थायी समिति की बैठकों की सूचना कम से कम १५ दिन पहिले समिति के सदस्यों को भेज दी जाय या कम से कम दो समाचार पत्रों में प्रकाशित की जाय

पदाधिकारियों के अधिकार

सभापति :—(क) सम्मेलन के अधिवेशन तथा स्थायी समिति और उन समितियों की अध्यक्षता जिन का वह सदस्य हो।

(ख) अधिवेशनों में नियमों के अनुसार निर्णय करना, तथा सम्मेलन के कार्य का निरीक्षण करना।

(ग) आवश्यकता होने पर कार्यसमिति की बैठक बुलाने का आदेश देना तथा अन्य कोई आकस्मिक महत्व का कार्य उपस्थित हो तो उसके विषय में आज्ञा देना।

उपसभापति :—सभापति की अनुपस्थिति में उसके कर्त्तव्यों का पालन करना।

प्रधान मन्त्री :—सम्मेलन के भिन्न भिन्न विभागों के कार्य का निरीक्षण करना तथा सम्मेलन के कार्य की उन्नति के लिये कार्य करना।

प्रचार मन्त्री :—समाचार पत्रों में सम्मेलन सम्बन्धी समाचार प्रकाशित करवाना।

साहित्य मन्त्री :—सम्मेलन द्वारा परीक्षाओं का प्रबन्ध करना, हिन्दी में अच्छी २ पुस्तकें प्रकाशित करवाना इत्यादि।

अर्थ मन्त्री :—सम्मेलन की समस्त चल व अचल सम्पत्ति का हिसाब रखना।

कार्यालय मन्त्री :—सम्मेलन के कार्यालय और पत्रव्यवहार तथा सम्मेलन के लेख पत्रों को सुरक्षित रखना।

आय व्यय परीक्षक :—सम्मेलन की आय व्यय की पड़ताल करना तथा हिसाब को ठीक करवाना।

कार्य समिति की बैठकें :— कार्यसमिति की बैठक साधारणतया प्रति मास हुआ करेगी, विशेष अवस्था में प्रधान या प्रधान मन्त्री द्वारा सूचना देने पर २४ घण्टे की सूचना पर भी हो सकती है।

विशेष अवस्था में कार्य :—यदि किसी समय कोई ऐसी अवस्था उपस्थित हो जाये जो नियमावली की किसी धारा के अन्तर्गत न हो तो स्थायी समिति को अधिकार होगा कि अपने एक विशेष अधिवेशन में इस सम्बन्ध में निश्चय करके कार्य करे परन्तु इसकी सूचना सम्मेलन के आगामी अधिवेशन में देनी होगी और भविष्य में सम्मेलन द्वारा निश्चित सिद्धान्तोंके अनुसार कार्य करना होगा

प्रधान मन्त्री डा० सत्य प्रकाश कपूर,
पैप्सु हिन्दी सम्मेलन

पैप्सु के हिन्दी सेवक

भारत के अन्य प्रदेशों की भांति पैप्सु में भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रेमी चिरकाल से मातृ भाषा की सेवा कर रहे हैं। हिन्दी कवियों, लेखकों के परिचय के साथ २ इस छोटे से लेख में हिन्दी प्रचार की संस्थाओं का संक्षिप्त परिचय भी दिया जाता है।

संस्था—पैप्सु हिन्दी सम्मेलन

यह संस्था पिछले ५ वर्षों से पैप्सु में राष्ट्रभाषा का प्रचार कार्य कर रही है। यह इस प्रदेश की सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पुरानी प्रचार संस्था है। इससे सम्बन्धित हिन्दी लेखक संघ, सेवा समिति जेतो, प्रताप वाचनालय जेतो, तिलक पाठशाला, जेतो कला निकेतन कालिज पटियाला, साहित्य परिषद्, राष्ट्रीय कला मन्दिर भारतीय रंग शाला, विद्या मन्दिर भटिण्डा, आदि संस्थाएँ हैं। पैप्सु की भिन्न २ राज नैतिक, सामाजिक, साहित्यिक संस्थाओं के कार्य-कर्ता मिल कर इस कार्य को कर रहे हैं। सम्मेलन के अतिरिक्त राष्ट्र भाषा समिति जींद हिन्दी प्रचारणी सभा कपूरथला, आर्य समाज, सनातन धर्म सभा, राष्ट्रीय संघ, हिन्दी सभा भी अपने २ ढंग से हिन्दी प्रचार कर रहे हैं।

पैप्सु के लेखक व कवि

इस प्रदेश के सबसे प्रसिद्ध लेखक व कवि प्रो. माधोराम शैवाल हैं। आप हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी तथा संस्कृत और पंजाबी के भी महान् लेखक हैं। आपने एक दर्जन के लगभग पुस्तकें भिन्न २ भाषाओं में लिखी हैं। आप पैप्सु कवि सम्मेलन के दो बार सभापति बन चुके हैं। सम्मेलन द्वारा स्थापित हिन्दी लेखक संघ के संयोजक हैं।

श्री खुशीराम शर्मा वसिष्ठ :—आप पंजाब के हिन्दी के प्रसिद्ध लेखकों में से हैं। आपने आधी दर्जन के लगभग पुस्तकें लिखी हैं। आप सम्मेलन की भटिण्डा व बरनाला शाखाओं के प्रधान हैं।

श्री सत्यपाल गुप्त :—भारतीय संविधान के पंजाबी अनुवाद को देवनागरी लिपि में इन्होंने ही लिखा तथा मुंशी प्रेमचन्द के "गोदान" का पंजाबी में अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त अन्य पुस्तकें हिन्दी, पंजाबी में लिखी हैं।

इनके अतिरिक्त चौधरी हीरासिंह चिनारिया सदस्य लोक सभा। श्रीमती पद्मा सोमनाथ। श्रीमती कैलाश जगन्नाथ। श्री विद्यारत्न, आचार्य चन्द्रशेखर, आचार्य दुर्गादत्त पं० नेकीराम, आचार्य सुमन चन्द्रशास्त्री, श्री कृष्णचन्द्र भारद्वाज भटिण्डा, श्री रामदेव पण्डित. श्री भंवरलाल शर्मा, श्री रुलियाराम वसिष्ठ सुलतानपुर लोधी, श्री बनारसीदास सरहिन्द मण्डी, श्री सालिगराम सुलतानपुर लोधी आदि भी हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित लेखकों में से हैं।

इस प्रदेश के मुख्यहिन्दी सेवक निम्नलिखित महानुभाव हैं। चौधरी इन्द्रसिंह माल मन्त्री पैप्सु, उप प्रधान पैप्सु हिन्दी साहित्य सम्मेलन। श्री निहाल सिंह तक्षक, वित्त मन्त्री पैप्सु डा० सत्य प्रकाश कपूर प्रधान मन्त्री पैप्सु हिन्दी साहित्य सम्मेलन श्री शिवलाल प्रधान राष्ट्र भाषा समिति जेतो। श्री रामशरण चन्द मित्तल एम० एल० ए० नारनौल सूबेदार ओमकार सिंह उप मन्त्री पैप्सु राज्य,श्री सुरेन्द्रनाथ खोसला,प्रचार मन्त्रीपैप्सु हिन्दी साहित्य सम्मेलन, श्री पूरणचन्द एडवोकेट, श्री विद्यासागर बी०ए० श्री देवकीनन्दन एम० एल० ए० श्री चौधरी अतरसिंह मन्त्री उद्योग व धन्धे। श्री इन्द्रसिंह माल उप मन्त्री पैप्सु। श्री लाजपतराय एडवोकेट, व श्री रामप्रताप गर्ग सदस्य लोक सभा आदि महानुभाव भी राष्ट्रभाषा के अनन्य भक्त हैं तथा राष्ट्र भाषा प्रचार कार्य में सम्मेलन को पूरा २ सहयोग दे रहे हैं।

इस संक्षिप्त ब्यौरेमें मैंने उन्हीं व्यक्तियों अथवा संस्थाओं के परिचय देने का प्रयास किया है, जिन का सम्बन्ध पैप्सु हिंदी सम्मेलनसे है। हिन्दी सेवियोंसे प्रार्थना है कि वह अपना सम्बन्ध शीघ्र सम्मेलन से स्थापित करने का कष्ट करें, ताकि उनकी हिन्दी सेवाओं का वर्णन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो सके। आशा है कि पैप्सु के हिन्दी प्रेमी मेरी इस प्रार्थना पर ध्यान देते हुए राष्ट्र भाषा प्रचार के इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान् कार्य में सम्मेलन को पूरा २ सहयोग देंगे।

चौधरी इन्द्रसिंह माल विभाग मिनिस्टर पैप्सु गवर्नमैंट पटियाला उप प्रधान पैप्सु हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा डेलीगेट अखिल भारतीय हिंदी साहित्यसम्मेलन ने हिन्दी प्रेमियों को प्रेरित किया कि राष्ट्र भाषा का उत्थान देश की एकता तथा रक्षा के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हिंदी प्रेमियों को केवल अपना समय जलसे जलूसों तक सीमित न करते हुये रचनात्मक कार्यों की ओर भी लगाना चाहिये। ऐसी ही प्रेरणा पैप्सु हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान ने भी की। श्री म० हरिकृष्णदास डेरा इत्ता मगती राम पटियाला ने, जो कि हिन्दीके बड़े प्रेमी हैं और जिन्होंने हिन्दू जाति की बड़ी सेवा की है चौधरी साहिब तथा सत्यपाल जी गुप्त प्रधान पैप्सु हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रेरणा का उत्तर रचनात्मक रूप से देते हुये हिन्दी का उत्थान करने के लिये मुहल्ला फेर सोढ़ियों में एक उत्तम स्थान लड़कियों के विद्यालय के लिये बहेड़ा रोड पर शहर के मध्यस्थ मैदान में सम्मेलन को दान दिया है। का मूल्य आजकल लगभग एक लख है। पैप्सु की जनता में उनके इस हिन्दी प्रेम की बड़ी प्रशंसा की जा रही है। वह इन संस्थाओं का प्रबन्ध करने के लिये एक कमेटी भी नियत कर रहे हैं।

पैप्सु प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के लिये श्री सत्यपाल जी गुप्त प्रधान पैप्सु प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन व श्री चौधरी इन्द्रसिंह जी माल मन्त्री पैप्सु का चुनाव किया है; तथा सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के लिये श्री चौ० हीरासिंह जी चनारिया सदस्य भारतीय लोक सभा श्री राम शरणचन्द मित्तल सदस्य पैप्सु विधान सभा, श्री डा० सत्य प्रकाश कपूर, महाकवि प्रोफ़ेसर माधोराम शैवाल तथा श्री विद्यासागर बी० ए० को प्रतिनिधि रूप में चुना है।

सत्यपाल गुप्त प्रभाकर
प्रधान पैप्सु हिन्दी सम्मेलन

(पृष्ठ २३ का शेष)

—पं० बनवारीलाल जी चण्डीगढ़ में स्थानीय हिन्दी सभा संगठित कर रहे हैं तथा नए बन रहे मकानों पर हिन्दी नागरी में नाम धाम लिखाने का आन्दोलन कर रहे हैं।

—अम्बाला छावनी में सम्मेलन की ओर से भीमसेन विद्यालंकार तथा श्री जयप्रकाश जी वकील प्रतिदिन दुपहर १ बजे से दो बजे तक स्वयं सेवक हिन्दी अध्यापकके रूपमें अम्बाला कैंट डाकखाना के कार्य कर्ताओं को हिन्दी पढ़ा रहे हैं। धीरे २ यह क्रम अन्य सरकारी तथा व्यापारी कार्यालयों में भी जारी किया जाएगा।

हिन्दी की उच्च परीक्षाएं

१. हिन्दी विद्यापीठ देव घर (बिहार) जिसके कुलपति डा० राजेन्द्र प्रसाद हैं उसकी साहित्यालंकार आदि परीक्षायें अप्रैल, मई में होंगी। साहित्यालंकार परीक्षा का पाठ्यक्रम साहित्य रत्न से मिलता जुलता है।

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी द्वारा संस्थापित काशी की अखिल भारतीय विक्रम-परिषद् द्वारा इन परीक्षाओं का आयोजन किया गया है। आगामी परीक्षा १० जुलाई को होगी किसी भी विश्वविद्यालय के एम. ए. हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के साहित्यरत्न या शिक्षा रत्न, संस्कृत के आचार्य तथा समकक्ष परीक्षोत्तीर्ण व्यक्ति साहित्याचार्यमें प्रविष्ट होसकते है। हिन्दीके विशिष्ट लेखक। तथा अध्यापक इस परीक्षामें सीधे भी बैठ सकते हैं

साहित्याचार्य तथा साहित्य चक्रवर्ती

साहित्य चक्रवर्ती निःशुल्क परीक्षा है। यह उपाधि किसी ग्रन्थ के लिखने पर प्रदान की जाती है जो परिषद् द्वारा प्रमाणित किसी विद्वान की देख रेख में लिखना होगा।

विशेष विवरण के लिये इन परीक्षाओं के व्यवस्थापक प्रो० हंसराज अग्रवाल एम. ए., पी. ई. एस. २०० माडल टाऊन लुधियाना को लिखें। उत्तर के लिये टिकट साथ भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा मन्दिर—

प्रेमचन्द "गोदान" में

[ले:—श्री धर्मपाल जी पंजाब नैशनल बैंक अम्बाला छावनी]

जिस प्रकार हिन्दी साहित्य के इतिहास में गोस्वामी तुलसी को 'रामचरितमानस, सूरदास को 'सूर सागर' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को उनके नाटकों, गुप्त जी को 'साकेत' प्रसाद जी को 'कामायनी' और महादेवी वर्मा को 'दीपशिखा' ने अमर कर दिया है उसी प्रकार भारतीय वाङ्मय की युगप्रवर्तक कृति 'गोदान' ने, प्रेम चन्द को अमर कर दिया है। यह गोदान न केवल हिन्दी कथा साहित्य का एक चरम सीमा चिह्न है, अपितु प्रेम चन्द की कहानी कला के विकास की पराकाष्ठा व अन्तिम सीमा है। गोदान-भारतीय ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण है। ग्राम और किसान का अटूट सम्बन्ध है किसान की कथा ग्रामकी जीवन कथा है।

उपन्यास का नायक होरी किसान का सच्चा प्रतिनिधि चरित्र है। आधिकारक कथा का आरम्भ होरी की गाय पालने की चिरकालीन लालसा से होता है और अन्त भी गोदान से ही। उपन्यास का आरम्भ होरी और उसकी धर्मपत्नी धनिया के वार्तालाप से होता है और अन्त भी होरी की मृत्यु और धनिया की मूक व्यथा में होता है। होरी का चित्रण किसान वर्ग का चित्रण है। किसान जीवन की निराली विशेषता है। कि वह उधार को मुफ़त का माल समझता है। वह सोचता है कि उपस्थित काम तो होना ही चाहिए, उधार तो उतर ही जायगा। इसी धारणा के वशीभूत हो होरी भोला से गाय उधार ले आता है। दुलारी साहूकारिन माता दीन और यहां तक की भोला की स्त्री से भी उधार लेता रहता है।

होरी का चरित्र इतना उदार दिखाया गया है कि भोला के यहां भूसा न होने परवाह उसे पांच दस मन भूसा मुफ्त दे देता है। हीरा जिस ने उसकी गाय मार दी, उसकी इज्जत और मर्यादा को बचाने के लिए होरी ३० रु० जैसी बड़ी रकम उधार लेकर दारोगा को घूस में देने के लिए उद्यत हो जाता है, ताकि हीरा के घर की तलाशी न हो। दूसरी ओर दरिद्रता ने उसे इतना नीच बनने केलिए भी विवश किया है कि वह अपने भाइयों की ५ रु० की चोरी करने को भी उद्यत हो जाता है, भोला से गाय लेने के लिए झूठ ही उस से शादी का वायदा कर लेता है।

राय साहब अमरपालसिंह जी कांग्रेसी हैं और गांव के जमींदार हैं, वह भी अपने वर्ग के प्रतीक हैं। अफ़सरों की खुशामदों और पिछलगुओं की सेवा ने उन्हें इतना अभिमानी बना दिया है कि उनमें विनय और शील का बिल्कुल लोप हो गया है। उनके यहां सरदर्द या फुन्सी भी हो तो दिल्ली से वैद्य और कलकत्ते से सर्जन मंगाए जाते हैं। भले ही किसानों के बच्चे बिना चिकित्सा के मर जायें। होरी के तीन लड़के बचपन में ही मर गये। "धनिया का मन आज भी कहता है यदि उन की दवा दारू होती तो वे बच जाते"

होरी गांव के जमींदार रायसाहब को बिना किसी स्वार्थ के प्रायः सलाम करने जाता है। परन्तु किसान का एक ही मालक तो नहीं जिसे सलाम करके और सेवा शुश्रूषासे प्रसन्न करके वह निश्चिन्त हो सके। कारिन्दा, पटवारी, साहूकार और सब से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ कर धर्म के ठेकेदार ब्राह्मण भी तो किसान के खून के प्यासे हैं। कारिन्दा पटवारी और मुखिया सब किसानों को ही तंग करके पुलिस वालों को घूस देने के बहाने, उनसे रुपये ऐंठते हैं और सब कुछ आपस में बांटकर खाते हैं। साहूकार का व्याज द्रौपदी के चीर की तरह बढ़ता ही जाता है। किसान सारा साल परिश्रम करता मर जाता है, परम् फसल के मौके पर साहूकार खलिहानसे ही फसल उठवा लेता है और वह परिवार केलिये अन्न जुटानेमें परेशान हो जाता है। ब्राह्मणों का हाल यह है कि गांव के पण्डित दातादीनके पुत्र मातादीनने एक चमारन सिलिया रखैल रख ली है पर वह फिर भी ब्राह्मण ही है। परम् होरी ने यदि गोबर की पत्नी झुनिया को अपने घर में रख लिया तो धर्म के ठेकेदार ब्राह्मण और पंचायत ने दण्ड लगा दिया "मुझ से इतना जरीमाना इस लिए लिया जाता है कि मैंने अपनो बहू को क्यों अपने घर में रखा? क्यों उस को निकाल कर सड़क की भिखारन नहीं बना दिया? यही न्याय है, ऐ?—" विचारे किसान के यहां दण्ड के रुपये न होने के कारण उसके घर से दाना २ अनाज उठवा लिया जाता हैं भले ही उस के बच्चे भूखे मरें। यहां तक कि जो दातादीन सारी उम्र किसान होरी की चमड़ी उधेड़ता रहता है, उस किसान को मरते समय भी गोदान के रूपमें लूटता है। होरी की मृत्यु पर घर की सम्पत्ति २० आने भी धनिया से गोदान रूप में ऐंठ ली जाती है।

प्रेमचन्द ने होरी के चरित्र में आदर्शवाद का कैसा सुन्दर पुट दिया है। वह हीरा जिसने होरी की गाय को जहर दे दिया घर से निकल जाता है। होरी उसके खेत जोतता है। उस के धानों को रोपता है अपना काम भले ही पड़ा रहे पर उसका काम पहिले करता है। साहूकारों के हर जुलम को सहन करता है और जब तंग आकर मजदूरी करनी पड़ती है तो भी नहीं झिझकता। सब अन्यायों और कष्टों को सहता है पर अपने कर्तव्य पालना से नहीं चूकता। मजदूरी करना पाप नहीं मजदूर बिगड़ जाय तो किसान होता है और किसान बिगड़ जाय तो मजदूरी करता हुआ परिश्रम करता हुआ अपने जीवन को होम कर देता है। लू लगने से पहिले जब एक मजदूर उसे देख कर कहता है "तुम भी तो दुबले हो गये हो दादा! तो होरी हंस कर कहता है, "तो क्या अब मोटे होने के दिन हैं। मोटे वे होते हैं जिन्हें न ऋण की सोच होती है न इज्जत की। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन से क्या सुख? सुख तो जब है कि सब मोटे हों"

गोबर के चरित्र में प्रेमचन्द ने क्रान्तिकारी होने का अच्छा प्रमाण दिया है। गोबर के दिल में महाजनों और जमींदार के विरुद्ध बगावत की भावना काम करती है। होली के मौके पर नौजवान साथियों को साथ मिला गांव के महाजनों का मजाक उड़ाता है। प्रेम चन्द ने पूंजीपतियों की चालों को कितनी वास्तविकता से पाठकों के सामने रखा है। प्रेमचन्द ने किस तरह बताया है कि हड़ताल मजदूर नहीं करते। पूंजीपति मजदूरों को मजबूर करके हड़ताल स्वयम् करवाते हैं। बेरोजगारी जब जोरों पर होती है तो गन्ने की मिल के मालिक ६ मास का स्टाक करके, मजदूरी घटा देते हैं और मजदूरों को हड़ताल करने पर विवश करते हैं। कम वेतन पर दूसरे आदमियों की भरती कर ली जाती है। रू० के विवाह पर जब गोबर घर आता है तो घर की व्यवस्था को देख कर निराश हो जाता है, "वह गुलामी करता है लेकिन भर पेट खाता तो है। वह केवल एक ही मालिक का तो नौकर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां तो जिसे देखो वही रोब जमाता है। गुलामी है पर सखी! मेहनत करके अनाज पैदा करो और जो रुपये मिलें वे दूसरों को दे दो। आप बैठे राम २ करो। दादा ही का कलेजा है यह सब सहते हैं"। गोबर से कहे गये इन शब्दों में प्रेमचन्द ने होरी और गोबर, किसान और मजदूर या यूं कहिए कि सामन्तवादी पद्धति और पूंजीवादी पद्धति के शोषितों की बड़ी मनोरंजक तुलना की है।

जहां प्रेमचन्द ने दातादीन जैसे पुराने ढंग के लुटेरों का वर्णन किया है वहां समाचारपत्र के सम्पादक ओंकार नाथ जैसे नवीन युग के ठगों की भी:—जो धमकी देकर पैसे वसूल करते है, भली प्रकार से पोल खोल दी है। पूंजीपति के इशारे पर वह सब कुछ लिखने और कहने को तय्यार हो जाते है। सम्पादक ओंकारनाथ को रायसाहब के विरुद्ध, पत्र में प्रकाशित के लिए चिट्ठी मिलती है। परम् जब रायसाहब पत्रकी ३०० प्रतियां अपने खर्च पर जारी करवा लेते हैं और सम्पादक को १५०० रु० का फायदा हो जाता है तो वह जमींदार के विरुद्ध पत्र में सूचना प्रकाशित न करने पर राजी हो जाता है।

भोला की स्त्री जिस का नोखेराम के साथ अनुचित सम्बन्ध है, अपनी नेकनामी के लिए सोना की शादी के लिए २०० रु० देने के लिए तय्यार हो जाती है। इस रुपये के लिए होरी ने, जिस प्रकार ठकुरसुहाती की है वह प्रेम चन्द की यथार्थवादी कला की विशेषता का एक नमूना है। उपन्यास में सबसे बड़ी बात जिसने प्रेम चन्द को वस्तुवादी कला की चरमसीमा तक पहुंचा दिया वह है रुपिया का उधेड़ उम्र वाले रामसेवक महतो से व्याह हो जाना। पर वह यह नहीं समझ पाती कि इस शादी पर इस के साथ किसी प्रकार का अन्याय किया गया है और वह बहुत खुश है

उपन्यास की नायिका धनिया का चरित्र एक साहसी दबँग देहातिन का चरित्र है। एक साहसी ग्राम नारी का चरित्र है। वह सामाजिक शृङ्खलाओं की परवाह न करती हुई दया से विभोर है। झुनिया को स्वीकार ही नहीं कर लेती पर अपने पुत्र गोबर की कायरता को धिक्करती है। इसी प्रकार मातादीन ब्राह्मण की रखैल सिलिया को भी परित्यक्ता होने पर अपने घर में स्थान देती है।

गोदान में प्रेम चन्द ने ग्राम्य जीवन के सभी पहलुओं तथा समस्याओं का किसी न किसी रूप में वर्णन कर दिया है। गोदान एक दुखान्त उपन्यास है यह भारत के देहातों के प्रसुप्त शोषितों की हाय! है

गोदान बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध काल में अपने युग का अग्रदूतही नहीं,नये युग का क्रान्तिकारी सूत्रधार भी है।

गोदान केवल साहित्यिक मनोरंजन ही नहीं है अपितु ८० प्रतिशत शोषित जनताके जीवन का जीता जागता चित्र है।

गोदान भारतीय संस्कृति और लोक परम्पराओं को साथ लेकर चलने वाले भारतीय कृषक वर्ग के संघर्षण जीवन की तपस्या का यथार्थ चित्रण है

गोदान महाजनी सभ्यता और जमींदारों के काले अक्षरों में लिखे जाने वाले जुलमों का रोमांचकारी इतिहास है गोदान अपने युग का जीता जागता सुन्दर प्रतिनिधि चित्र है॥

——:०:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब की ५३ मार्च की मैट्रिक परीक्षा के

हिन्दी विद्यार्थियों के लिए

प्राय: विद्यार्थी प्रश्नों का उत्तर देते हुये शुद्ध लेख की दृष्टि से निम्न लिखित अशुद्धियां करते हैं।

(१) संयुक्ताक्षरों को संयुक्त रूप में न लिखकर पंजाबी उच्चारण के अनुसार पृथक २ लिखते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिये।

(२) छोटी इ के स्थान पर बड़ी ई का प्रयोग करते हैं और बड़ी ई के स्थान पर छोटी का। इस विषय में सन्देह को निवृत्त करने के लिये शब्द का प्रयोग दोनों प्रकार की ई के साथ लगाकर करना चाहिये।

(३) भगवान् बलवान् महान् आदि शब्दों में नकार हलन्त होना चाहिये। ज्ञानयज्ञ को प्राय: ग्यान व यग्य के रूप में बोलते हैं परन्तु यह अशुद्ध है। लिखते हुये ग्यान यग्य न लिख कर ज्ञान यज्ञ लिखना चाहिये।

(४) शब्द या शब्दांश के अन्त में रहने वाले अ का लोप होकर शब्द या शब्दांश उच्चारण की दृष्टि से व्यंजनान्त हो जाता है तब उपान्त्य स्वर पर जोर दिया जाता है। सब, आदमी, कमल। (य) संयुक्त व्यञ्जन के पूर्ववर्ती स्वर पर जोर पड़ता है। चन्दा, लज्जा, विद्या। (भ) विसर्ग युक्त स्वर का उच्चारण कुछ जोर से किया है। प्रायः, अन्तःकरण। (र) प्रेरणार्थक में आ पर स्वराघात आता है—कराना, बुलाना, चुराना। (त) एक ही शब्द के कई अर्थों का अन्तर स्वराघात से जाना जाता है। की (सम्बन्धकारक चिन्ह) और की (क्रिया) में दूसरी की का उच्चारण अधिक जोर देकर किया जाता है।

पद्यों का सरल अर्थ ठीक ठीक लिखकर संदर्भ-प्रसंग पूर्ण एवं स्पष्ट रूप से देना चाहिये। 'ने' का प्रयोग सकर्मक क्रिया के भूतकाल में होता है, इसका ध्यान रखना चाहिये; जैसे—राम ने आम खाया। इसमें 'आम' कर्म है और 'खाया' से भूतकाल का बोध होता है, अतः कर्ता (राम) के आगे 'ने' का प्रयोग हुआ है। ह्रस्व-दीर्घ पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। लिंग और वचन का भी उचित ध्यान रहे। प्रश्न का उत्तर लिखते समय उसका नम्बर, प्रश्न की क्रम संख्या अवश्य लिखनी चाहिये। पन्ने के दोनों ओर लिखना चाहिये। लिखावट सुन्दर, शब्द अलग २ तथा सुवाच्य हों। पुरवणी उत्तर पुस्तकें (सप्लिमेंटरीज़) आप चाहें जितनी ले सकते हैं। भाषा शुद्धि विषय प्रतिपादन तथा सुन्दर लिखावट—तीनों का समान महत्व है। ह, न, त, व, य, म, आदि अक्षर स्पष्ट लिखने चाहिये। अक्षर सुडौल और सम आकार हों (छोटे बड़े नहीं) अक्षर सीधे खड़े लिखने चाहिये तिरछे नहीं। दूसरी पंक्ति इतनी नजदीक न लिखी जाय कि दोनों पंक्तियाँ मिल मिल जायँ। अंग्रेजी की तरह रेखा (Line) के ऊपर नहीं, बल्कि नीचे लिखना चाहिये। तमाम पंक्तियों का पहला अक्षर एक सीधमें होना चाहिये। प्रत्येक अनुच्छेद (पेरेग्राफ) का पहला अक्षर किनारे से कुछ दूर लिखा जाय। किन्तु प्रत्येक अनुच्छेद के ये प्रथम अक्षर भी एक सीध में होने चाहिये। विराम चिह्नों का उचित प्रयोग हो।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब के लोक गीत

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के निश्चयानुसार पंजाब के विविध प्रदेशों—कांगड़ा, हरियाना, जालंधर, द्वाबा आदि के लोक गीत हिन्दी-सन्देश में क्रमशः प्रकाशित किये जायेंगे। हिन्दी-सन्देश के प्रेमियों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आजकल हिन्दी साहित्य में लोक गीतों के प्रसिद्ध संग्रह कर्ता श्री देवेन्द्रजी विद्यार्थी को सर्व प्रथम अपने लोक गीत प्रकाशित करने का अवसर १९३४ के लगभग हिन्दी-सन्देश में ही प्राप्त हुआ था। अब उसी क्रम को फिर जारी किया जा रहा है। इस अङ्क में प्रथम लेख श्री सन्तराम जी बी० ए० को प्रकाशित जा रहा है। आशा है अन्य महानुभाव भी अपने २ प्रदेशों के लोक-गीत हिन्दी अर्थ सहित भेजेंगे। —सम्पादक हिन्दी-सन्देश

हिन्दू जीवन में पुत्र-जन्म एक बड़े ही महत्व की घटना है। पुत्र की उत्पत्ति से माता-पिता पितृ-ऋण से उऋण होते हैं। इस समय उनको प्रसन्नता भी अपार होती है। पुत्र प्राप्ति के उपलक्ष्य में बड़ा उत्सव मनाया जाता है। कई दिनों तक स्त्रियाँ मंगलगान गाती हैं। इन गीतों को पंजाब में छुँजना कहते हैं। आगे लिखा गीत ऐसा ही है।

लोक गीत

लाला रे कोठे दे उप्पर कोट किन उसारेया ?
कोठे दे उप्पर कोट कि राम उसारेया।
बागे दे उप्पर बाग माली चम्बा लाया।
पुत्ते दे उप्पर पुत्त सुहागन जाया।
सुरियाँ चरेंदड़ा नाय कि घरे दी सार लवो ?
अन्दर बड़ेआ नाथ, नाजो ! तेरा क्यां दुखे ?
माई नू सद बुलाओ कलेजे दर्द होई।
माई जी, दाई नूँ सद बुलाओ, कलेजे दर्द होई।
आप घोड़े आसवार, पिच्छे चरवेदार,
अग्गे दो नरफ होए। लाला रे...........
पुछदा नगर बजार दाई माई केहड़ा घर है। लाला रे।
अंगन चंबे दा बूट, खलन्दड़ा पूत, दाई माई एहो घरे।
जे तेरे जन्मेगा पूत, दाई माई क्या मिले ?
इक पंज रुपैये रोक, सिर नूँ चोप, दाई माई एहो मिले।
जे तेरे जन्मेगी धी, घटे तेरा जी, घटे परिवार,
दाई माई क्या मिले ?
इक रुपैया रोक, सिर नूँ पुराना चोप,
दाई माई एहो मिले। लाला रे।
आप घोड़े असवार, दाई-माई पालकियाँ। लाला रे।
दाई माई दरवाजे, नौबत बाजे, बड़े बड़े शगुन होए।
जच्चा नी ! आ पलंग पर लेट, मलाँ तेरा पेट,
होलर तेरा जन्म लवे। लाला रे।
जच्चा नी ! सद तूँ अपना ढ़ोल, करे पूरा बोल,
दाई नूँ विदया करो।
दाई नी ! पुत्त दित्ता करतार, जाया मेरी नार,
तुसाँ मेरा क्या किया ? लाला रे।
पंज रुपैये रोक, नगारे दी चोट, दाई-माई विदया करो।

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध में संभव सामग्री एकत्र की गई है। हिन्दी परीक्षार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मू० ॥।≈)

'आलोचना' का इतिहास विशेषांक—

सम्पादक श्री शिवदानसिंह चौहान। राजकमल प्रकाशन लिमिटिड फैजबाजार दिल्ली। वार्षिक मूल्य १२) इस विशेषांक का मूल्य ५)। पृष्ठ संख्या २४१ २०×२६/८। पृथ्वीराज रासो से लेकर, प्रेमचन्द जी के गोदान निर्माण के मध्यवर्त्ती हिन्दी काव्य कला के विकास क्रम का विश्लेषणप्रधान मनोरंजक लेख संग्रह प्रकाशित करने पर हम आलोचना के संचालकों को बधाई देते हैं। इस समय अधिकांश हिन्दी साहित्यकार—चलचित्रों और साम्यवादी रशियन और सनसनी-प्रधान अमरीकन साहित्य-कारों के अनुकरण में अपनेपन को भूल रहे हैं। ऐसे समय में आलोचना के सम्पादक महोदय ने हिन्दी साहित्य की वर्तमान कालीन सब विचार-धाराओं का सुन्दर समन्वय करने की प्रेरणा देने के लिये इस विशेषांक को प्रकाशित कर— हिन्दी साहित्यकी परम्परागत विशेषता को, वर्तमान कालीन प्रगतिवाद की उच्छृङ्खलता से सुरक्षित कर, मध्यम मार्ग स्वीकार करने का सप्रमाण युक्ति-युक्त परामर्श देकर—उदीयमान लेखकों का मार्ग प्रदर्शन किया है। हिन्दी पुस्तकालयों हिन्दी अध्यापकों तथा हिन्दी के विद्यार्थियों को इस विशेषांक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

पंजाब के हिन्दी समाचार पत्र—इन दिनों पंजाब में अनेक हिन्दी प्रेमी अपनी २ भावना तथा योग्यता के अनुसार पंजाब निवासी हिन्दी प्रेमियों की साहित्यिक मनोवांछाओं को तृप्त करने के लिए साप्ताहिक व मासिक पत्र निकाल रहे हैं। हिन्दी मिलाप पंजाब का अकेला दैनिक पत्र अपनी परम्पराओं को कायम रखता हुआ, दिन प्रतिदिन उन्नति पथ पर अग्रसर हो रहा है। जालंधर से मासिक नवराष्ट्र—आचार्य विश्वनाथ के सम्पादकत्व में प्रकाशित हो रहा है। फरवरी १९४३ के अंक के मुख पृष्ठ पर नवराष्ट्र की जीती जागती मूर्ति सुभाष का चित्र दर्शनीय है। कविताओं कहानिओं और साहित्यक लेखों का उत्तम संग्रह है। नवराष्ट्र, कार्यालय सुराज गंज से प्राप्तव्य है। प्रति कापी का मूल्य।) है हिन्दी साहित्य परिषद् जालंधर का मुख्य पत्र है।

रंगीला मुसाफिर—जगाधरी से प्रकाशित है—राय साहेब के० एल० शर्मा एण्ड संस रईस एण्ड बैंकर्स जगाधरी वार्षिक मूल्य २) प्रति कापी।) संचालक महोदय खानदानी वैद्य हैं, इसका अधि-कांश भाग दवाइयों के विज्ञापन में व्यय होता है। कहानियां कविताएं भी दवाइयों की प्रचारक रूप से लिखी जाती हैं, "रंगीली कहानियां" वार्षिक मूल्य ४॥) प्रकाशक रंगीली कहानियां कार्यालय लुधियाना, इसी कार्यालय की ओर से एक मस्ती नाम की पत्रिका भी प्रकाशित की जा रही है। जनता की श्रृङ्गार प्रधान प्रवृत्तियों को साहित्यक धाराओं में परिणत करने का यत्न किया गया है। प्रत्येक अङ्क के प्रथम पृष्ठ पर किसी न किसी आकर्षक महिला का चित्र रंग बिरंगी शान के साथ दिया जाता है। इसी कार्यालय की ओर से वेनिस का व्यापारी तथा औरियण्टल सीरीज न-३ के पत्र के टुकड़े भी नाम की पुस्तकें भी प्रकाशित की जा रही हैं। संचालक महोदयों का प्रयत्न प्रशंसनीय है! यदि श्रृङ्गार की अधिकता को कम कर, इसे राष्ट्र की वर्तमान सांस्कृतिक साहित्यक तथा सामाजिक समस्याओं के हल करने का साधन बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया जाय तो इससे राष्ट्र के नैतिक स्वर को उन्नत करने में सहायता मिलेगी। ××××

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

 Regd. E. P. No. 372

पंजाब, हिमाचल, पैप्सु के शिक्षा विभागों ने स्कूलों, कालेजों के लिए "हिन्दी सन्देश" को मंज़ूर किया हुआ है !

—मैनेजर हिन्दी सन्देश

DIRECTORATE OF PUBLIC INSTRUCTION, PEPSU, NABHA.

The under Secretary to Government, Education & Helth Department vide his letter No, ED/ E-1 (72) 51/25618, dated 26-10-51 has conveyed the sanction of His Highness the Rajpramukh to the approval of books "Hindi Sandesh" for school libraries subject to availability of funds.

—Director of Public Instruction, 9/11.

No. Mis/83 (13) 51/P. 15. Dated 16/91-11-51

COPY FORWARDED TO THE :—

1. Divisional Inspector of Schools, Nabha/Sangrur.
2. Divisional Inspectres of Girls School, Nabha/Sangrur.
3. The Editor Hindi Sandesh, Nicholson Road, Ambala Cantt.

for information and necessary action.

—for Director of Public Instruction Nabha, 9/11.

Dr. K. C. Khanna, M A. Ph. D.

DIRECTOR OF PUBLIC INSTRUCTION, PUNJAB.

No. 29134-C. dated, Simla the 29th September, 1950

Dear Sir,

With reference to the correspondence, resting with your Post Card No. 100. dated the 7th June, 1950, I have the honour to inform you that the Hindi monthly journal "Hindi Sandesh" has been approved for use in school and college libraries in the Punjab. The Divisional Inspectors and Inspectresses of Schools and the Principals of all affiliated colleges in the Punjab are being informed accordingly.

Endorsement No. 29135-C.

Copy forwarded to the Inspectors and Inspectresses of Schools and the Principals of all affiliated colleges in the Punjab for information.

—Inspector of Training Institutions,
for Director of Public Instruotion, Punjab.

No. E. 99-82/49. Dated Simla-4, the 15th, Jnly 1950.

Approval of "Hindi Sandesh"

MEMORANDUM.

Reference your letter No. 11, dated the 5th July 1950, forwarding a copy of your paper, "Hindi Sandesh' for approval by the Education Department Himachal Pradesh.

'Hindi Sandesh' has been placed on the list of papers approved for the libraries of High Schools and Colleges in Himachal Pradesh.

No. E. 29-82/49. Dated Simla-4, the 15th July 1550.

COPY FORWARDED TO :—

It is not, however, necessary to contribute for this paper. Approvel only means that there is no objection to your purchasing this paper for your School/College libraries, if funds allow.

—Assistant Secretary 'General'
to the Chief Commissioner
Himachal Pradesh.

प्रिंटर पब्लिशर श्री प्रेमनाथ जी जोशी द्वारा आर्य प्रेस निकलसन, रोड में मुद्रित, तथा हिन्दी सन्देश कार्यालय निकलसन रोड, अम्बाला छावनी से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-सन्देश

पंजाब पैप्सु हिमाचल हिन्दी सम्मेलन का मुख-पत्र

अगस्त-सितम्बर १९५३ श्रावण-भाद्रपद २०१०

राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद जी

श्रीमान राष्ट्रपति महोदय ! पंजाब की राजधानी चण्डीगढ़ का उद्घाटन समारोह करते समय पंजाब सरकार को चण्डीगढ़ में कार्यालयों तथा स्थानों के नाम देवनागरी में लिखने का आदेश दीजिए ।

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
१.	छायावाद से प्रगतिवाद की ओर	१
२.	गिरिधर कविराय पंजाबी साधु थे	६
३.	ग्राम गीत (पंजाबी) (कविता)	१०
४.	तुलसी की सहानुभूति	११
५.	संत कवि सुन्दर दास का ईश्वर विश्वास	१५
६.	संघर्ष का लक्ष्य (कहानी)	१७
७.	बापू से दूर (कविता)	२०
८.	समुद्रगुप्त (वैकुण्ठनाथ दुग्गल) के पात्रों का चरित्र-चित्रण	२१
९.	हिन्दी देश की एकता का मुख्य साधन	२४
१०.	पागल का गीत (कविता)	२८
११.	छोटी सी बहन ! राखी बांध दो ! (कहानी)	२९

वार्षिक मूल्य छः रुपये

संचालक—स्वामी स्वतंत्रानन्द जी प्रधान सम्मेलन ।
प्रधान संपादक—भीमसेन विद्यालंकार ।
प्रबन्ध संपादक—श्री गणपतराय जी कोषाध्यक्ष ।

प्रति कापी आठ आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन का प्रचार कार्य

फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई जून, जुलाई और अगस्त ५३ के महीनों में पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन के प्रचार मंत्री श्री पं० बनवारी लाल जी ने पटियाला, शिमला, कालका, अम्बाला छावनी, अम्बाला शहर, लुधियाना, बटाला, गुरदास पुर, दीना नगर, धारीवाल में भ्रमण कर पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन के सदस्य बनाए हैं। दीनानगर में २४ अगस्त को हिन्दी जनपद सम्मेलन किया गया। राजपुरा में भी जनपद सम्मेलन किया गया। इसके इलावा जेतो में पैप्सु हिन्दी जनपद सम्मेलन किया गया। अब जालन्धर, लुधियाना तथा अम्बाला छावनी में जनपद सम्मेलन की योजना की जा रही है।

इसके अतिरिक्त पंजाब के मुख्य २ शहरों में सूर जयन्ती और तुलसी जयन्ती के समारोह धूमधाम से किये गये।

इसके अतिरिक्त हिसार सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्तावों को क्रियात्मिक रूप देने के लिये पंजाब सरकार के मन्त्रि मण्डल पंजाब युनिवर्सिटी के अधिकारियों के पास प्रस्ताव भेजे गये। उनकी सेवा में आवेदन पत्र भी भेजे गये, परन्तु पंजाब युनिवर्सिटी तथा पंजाब सरकार के शिक्षा विभाग ने पत्रोत्तर तक देने की बात तो दूर रही, पत्र प्राप्ति की सूचना भी नहीं दी। सच्चर फारमूले को कामयाब बनाने और पंजाबी को गुरुमुखी लिपि में जकड़ने की नीति सफल बनाने के लिये देव नागरी हिन्दी लिपि की गहरी उपेक्षा की जा रही है।

पंजाब म्युनिसिपेल कमेटियों को लिखा गया कि वह अपना कारोबार हिन्दी में करें। सिवाय हिसार म्युनिसिपेल कमेटी के और किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। शिमला म्युनिसिपेल कमेटी ने तो कहा कि जब तक पंजाब एसम्बली कानून बना कर हमें म्युनिसिपेल कमेटी का काम हिन्दी में करने की इजाजत नहीं देती, हम कुछ नहीं कर सकते। पंजाब सरकार तथा पजाब युनिवर्सिटी से निवेदन किया कि वह १५ वर्षों में अंगरेजी के स्थान पर हिन्दी को लाने की योजना को क्रियात्मिक रूप देने के लिये कमेटी बनाएं परन्तु उन्होंने भी कुछ नहीं किया। पंजाब की नई राजधानी चण्डी गढ़ में स्थानीय कार्यालयों गलियों तथा दफ्तरों के नाम हिन्दी देवनागरी में लिखने के स्थान पर अंग्रेजी में ही लिखे जा रहे हैं। क्या नई राजधानी बनने के १५ साल बाद फिर इन्हें हिन्दी में किया जाएगा? पंजाब सरकार की इस अदूर दर्सिता अन्धेर गर्दी को कौन दूर करे। अपने झगड़ों में उलझे हुओं का इस रचनात्मक कार्य की ओर ध्यान भी कैसे जाये।

राष्ट्र भाषा संबंधी केन्द्रिय सरकार के हिन्दी विभाग ने कैण्टोनमैण्ट बोर्ड को आदेश देकर रिपोर्ट मंगाई हैं कि उन्होंने अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को स्थान दिलाने के लिये क्या क्रियात्मक कार्य किया है।

पंजाब की जनता यदि शेष भारत के साथ संस्कृतिक और साहित्यिक सम्बन्ध स्थापित रखना चाहती है। तथोक्त पंजाबी संस्कृति तथा पंज बी साहित्य के स्तर को उन्नत तथा प्रगतिशील बनाना चाहते हैं तो उन्हें लोकमत संगठित करके स्थान २ पर पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन की शाखाएं स्थापित करनी चाहिए। भाषाओं का भविष्य जनता के हाथ में है। पंजाब निवासी हिन्दी प्रेमियों को प्रचार कार्य के साथ २ पंजाब की मानसिक साहित्यिक आत्मिक आवश्यकताओं को प्रतिबिम्बित करने वाला साहित्य निमाण करना चाहिए, और पंजाब को द्विभाषा भाषी प्रान्त बनाने के लिए सक्रिय यत्न करना चाहिए। इसके लिये पंजाबियों को सम्मेलन का साधारण सहायक तथा अजीवन सदस्य बनना चाहिए।

—भीमसेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-सन्देश

उत्तरी भारत का प्रमुख साहित्यिक मासिक पत्र

पंजाब, हिमाचलप्रदेश, पटियाला यूनियन के स्कूलों, कालेजों के लिये इन राज्यों के शिक्षा विभागों द्वारा स्वीकृत।

वर्ष ४] अगस्त-सितम्बर—१९५३, श्रावण-भाद्रपद—२०१० [अंक ७

सम्पादकीय :—

अपने सम्बन्ध में—हिन्दी सन्देश का पिछला अंक जनवरी १९५३ को प्रकाशित हुआ था। फर्वरी १९५३ को हिन्दी सन्देश के प्रिण्टर पब्लिशर श्री प्रेमनाथ जोशी के नाम, जम्मू प्रजा परिषद् के सिलसिले में वारण्ट जारी हुये। वह लापता हो गये। इस बीच में हमने डिप्टी कमिश्नर अम्बाला तथा पंजाब गवर्नमैंट से अनुरोध किया कि वह पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान मन्त्री भीमसेन जी को हिन्दी सन्देश का प्रिंटर पब्लिशर बनने के लिये डिक्लेरेशन देने की आज्ञा दें। परन्तु उन्होंने वर्तमान प्रैस एक्ट के अनुसार आज्ञा देने में असमर्थता प्रकट की और कहा कि जब तक पुराना प्रिंटर पब्लिशर, प्रिंटर पब्लिशर न रहने का प्रार्थना पत्र नहीं देगा तब तक नया प्रिंटर पब्लिशर नहीं बन सकता। श्री जोशी जी का पता नहीं मालूम था। अतः लाचारी हालत में प्रतीक्षा करनी पड़ी। अब जम्मू प्रजा परिषद् आन्दोलन के बन्द हो जाने और श्री जोशी जी के बाहर आ जाने पर हिन्दी सन्देश का यह अङ्क प्रकाशित किया रहा है। ग्राहक महोदयों को सूचनार्थ लिखा जाता है कि उनके वार्षिक शुल्क के ब्यौरे में यह अन्तर नहीं गिना जायगा।

यह अङ्क शीघ्रता में निकल रहा है अतः कई एक विषय रह गये हैं। आगामी अंकों में यह कमी पूरी हो जायगी।

पंजाव प्रान्त का भाषा संघर्ष—भाषाओं के आधार पर भारतीय राष्ट्र का विभाजन राष्ट्र में एकता के स्थान पर भिन्नता के बीज बो कर राष्ट्र में प्रान्तीयता मूलक असहिष्णुता को पैदा करेगा। राष्ट्र के दूरदर्शी नेता असहिष्णुता के वातावरण को शान्त करने का यत्न कर रहे हैं। राष्ट्र भाषा हिन्दी और मराठी बंगाली तामिलादि भाषाओं में परस्पर सहयोग पैदा करने का यत्न कर रहे हैं। परन्तु पंजाब में उलटी ही गंगा बह रही है। देश विभाजन से पहले हिन्दी पंजाबी भाषा भाषी मिल कर उर्दू और अंग्रेजी के प्रभाव को कम करने के लिये सम्मिलित यत्न किया करते थे परन्तु अब हिन्दी और पंजाबी में संघर्षमय वातावरण पैदा किया जा रहा है। पंजाब निवासी साधारण जनता तो इस संघर्ष से बचना चाहती हैं परन्तु पंजाब के राजनीतिक नेता अपने २ मन्त्रिमंडल तथा गुट के अस्तित्व को कायम रखने के लिये पंजाबी हिन्दी के संघर्ष को शान्त करने के स्थान पर, उग्र तथा तीव्र कर रहे हैं।

डा. गोपीचन्द भार्गव और श्री भीमसेन सच्चर दोनों ने पंजाब सरकार के शासनतन्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में क्रमशः अकाली सिक्खों को खुश करने के लिये और उन्हें अपने साथ रखने के लिये पंजाबी को मजहबी रूप दे दिया है। पंजाबी भाषा को सिक्खों की मजहबी लिपि गुरुमुखी से जकड़ कर, पंजाबी भाषा को सिक्खों की मजहबी भाषा बनाकर सच्चर फार्मूले द्वारा उसे गैरसिक्खों पर भी जबर्दस्ती थोपा जा रहा है! और पंजाबी गुरुमुखी को पंजाब की एक मात्र प्रादेशिक भाषा घोषित किया जा रहा है। यह घोषणा सर्वथा असत्य है। इसकी असत्यता को सच्चर फार्मूले में, पंजाब को हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश और पंजाबी भाषा भाषी प्रदेश में विभक्त करके स्वीकार किया गया है। कांगड़ा, फाजिलका, अबोहर, हरियाना अम्बाला प्रदेश की जनता हिन्दी बोलती है। इस प्रदेश की निवासी जनता की मातृभाषा, पितृ भाषा, प्रादेशिक भाषा हिन्दी है। परन्तु यहां वालों के लिये भी पंजाबी गुरुमुखी को प्रादेशिक भाषा घोषित कर कचहरियों तथा दफ्तरों में कार्य का माध्यम पंजाबी गुरुमुखी को घोषित किया जा रहा है। यदि सी. पी. सरकार की भांति जैसे वहां मराठी और हिन्दी दोनों को उस प्रान्त की राज भाषा, सरकारी भाषा स्वीकार किया गया है, यहां भी पंजाबी गुरुमुखी और देवनागरी लिपि को पंजाब की सरकारी भाषा हिन्दी स्वीकार किया जाय तो पंजाब का भाषा संघर्ष समाप्त हो सकता है। पंजाब का वातावरण सिक्ख साम्प्रदायिकता के विष से मुक्त हो सकता है।

असली बात यह है कि साम्प्रदायिक सिक्ख पंजाबी भाषा को, (संयुक्त पंजाब में उर्दू को जो स्थान प्राप्त था) वह महत्व या स्टेटस दिलाना चाहते हैं। पंजाबी गुरुमुखी को केवल पंजाबी मानना या समझना सिक्ख साम्प्रदायिकता की पराकाष्ठा है। हमें इन साम्प्रदायिक सिक्खों की मनोवृत्ति पर आश्चर्य होता है वह उर्दू फारसी लिपि में लिखी पंजाबी को तो पंजाबी मानने के लिये तैयार हैं परन्तु देवनागरी लिपि में लिखी पंजाबी को पंजाबी नहीं मानना चाहते। श्रीयुत सच्चर तथा पंजाब के कांग्रेसी राजनैतिक नेता अपनी नेतागीरी और राजनैतिक शक्ति को कायम रखने के लिये इस साम्प्रदायिक भाषाई असहिष्णुता को उत्तेजित कर रहे हैं। पंजाब को इस भाषाई साम्प्रदायिक असहिष्णुता से बचाने वाला ही पंजाब के सार्वजनिक वातावरण को शान्त कर सकता है। भारतीय संसद् में अभी श्री अम्बेडकर ने भाषाई प्रान्तों के सम्बन्ध में भाषण करते हुये निम्न लिखित चेतावनी दी है। देश के अन्य प्रान्तों के लिये शायद यह चेतावनी ठीक न हो, परन्तु पंजाब के सम्बन्ध में यह सर्वथा उचित है।

"स्विटजर्लैन्ड में बहु भाषा भाषी राज्य होने पर भी कोई दिक्कत नहीं; क्योंकि वहां इसका साम्प्रदायिकता के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु हमारे (देश) प्रान्त में भाषावाद द्वारा पंजाबी गुरुमुखी को साम्प्रदायिकता का रूप दिया जा रहा है।"

आशा है पंजाब की जनता विशेषतया हिन्दी भाषा भाषी पंजाबी भाई, इस अन्याय को दूर करने के लिए लोकमत को संगठित करके पंजाब सरकार तथा पंजाब युनीवर्सिटी को बाधित करेंगे कि वह पंजाब को पंजाबी भाषा भाषी प्रांत घोषित करने के स्थान पर, द्विभाषा भाषी प्रांत घोषित करे और यहां की कचहरियों तथा दफ्तरों में दोनों का प्रयोग करने की सुविधा उपस्थित करें।

—भीमसेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छायावाद से प्रगतिवाद की ओर

[लेखिका—कुमारी निर्मलारानी अजमानी प्रभाकर शिमला]

भगवान् की सृष्टि में मानव एक ऐसा प्राणी है जिसे एक वस्तु से कदाचित् न सन्तोष प्राप्त हो सका है, न हो रहा है और न ही होगा। इसके अन्दर नूतन सौन्दर्य सृजन की अतृप्त तृष्णा है, जो सदैव कठपुतली की भांति उसे अपने अज्ञात संकेतों से नचाती रहती है। जिस प्रकार मदारी बन्दर को अपने संकेतों पर नचाता फिरता है ठीक उसी प्रकार यह अदम्य-सौन्दर्य की वासना अखिल ब्रह्मांड को अपने शासन में लिए है। लेकिन सौन्दर्य का सृजन करने वाला, मानव उसका मूल भूत स्रोत मानव भी, इसके पीछे ऐसा भागता फिरता है जैसे जेठ माह की कड़ी दोपहरी में रेगिस्तान का पथिक दूर छाया की ओर भागता है। मानव की यह नव सृजन सौन्दर्यात्मकता केवल उसकी सौन्दर्य प्रियता ही नहीं अपितु उसकी प्रकृति की परिवर्तन शीलता की भी परिचायक है। हो सकता है कि मानव में यदि भगवान् यह प्रवृत्ति उत्पन्न न करता, तो संसार की गति रुक जाती किन्तु मानव की बुद्धि सदैव सौन्दर्य के अगम्य सागर में थाह लेने का अथक, किन्तु असफल प्रयत्न करती रहती है। उसका सृजनकारी मस्तिष्क ज्ञान के आलोक में नित्य नव-पथ का अन्वेषण करता रहता है। मानव को एक वस्तु से शान्ति नहीं उसकी अभिलाषाओं पर "और" की अप्सरा सदैव मोहक नृत्य से उसका ध्यान अपनी ओर केन्द्रित रखती है। सौन्दर्य, प्रियता का परिणाम ही यह विकास शील आधुनिक युग रूपी देवता है। मानव जीवन के खाने पीने उठने बैठने, इत्यादि के पहलुओं में एक आशातीत परिवर्तन हो चुका है और इसी परिवर्तन शीलता के पीछे एक अदम्य प्रेरक शक्ति डोरे से मानव को नचाती रहती है, जिसे हम "सौन्दर्य" की संज्ञा दे सकते हैं। पाठक सोचें कि जब मानव में परिवर्तनता और सौन्दर्य का इतना महत्व है जब उसके जीवन में क्षण २ में इनकी ज्वालायें धधक रही हैं तो 'साहित्य' का क्षेत्र इससे कैसे अछूता रह सकता है, जो कि मानव का मुख्य निर्माणक और पथ-प्रदर्शक है, जो मानव द्वारा निर्मित उसी के उद्गारों और मस्तिष्क जन्य विचारों का संकलन है। यही कारण है कि समय २ पर क्रान्ति की एक चण्डी साहित्य को भी अपना कलेवर बदलने के लिए बाध्य करती है।

हम यदि हिन्दी साहित्य पर विहंगम दृष्टि डालें तो हमें इस बात की सत्यता प्रत्यक्ष हो सकती है। किन्तु हमने अपने वाचक वृन्द के समने जो कुछ उपस्थित करना है वह केवल दो केन्द्र बिन्दुओं पर आधारित है जिसे हम क्रमशः छायावाद और प्रगतिवाद कह सकते हैं। हम केवल छायावाद का और प्रगतिवाद का स्वरूप बता कर पाठकों को अपने स्तर पर ले आएंगे इसका जन्म या विकास कैसे हुआ यह एक भिन्न विषय है। आधुनिक हिन्दी कविता की सरणी किस प्रकार अपना रुख बदलती हुई कल्पना के रंगीन प्रसादों पर नूतन उड़ान के स्वर्णमय स्वर्गों से प्रकृति की मधुरता और मृदुलता से वास्तविकता के रेतीले मैदान में उतर पड़ी। रीति कालीनशृङ्गारी, कविता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भांति जो सदैव प्रेम और विलास? को जीवन का सार समझती थी तो प्रगतिवाद के वीर रस पूर्ण, भूषण इत्यादि के काव्य, में अप्रतिहत रूप से बहने लगी। बिहारी की नायिका भूषण की वीरांगना बनकर अरि-दल रूपी आधुनिक भयानक अभाव रूपी यम दूतों का नाश करने वाली प्रगति वादी कविता इस महामरूस्थल में भी उतरी। जहां संसार की विषमता रूपी सूर्य के भयानक सूर्यातप से मरुभूमि के बालू कण हाहाकार से भगवान् की सृष्टि पर भी उपहास के तीखे व्यंग बाण छोड़ते दिखाई पड़ते हैं। किस प्रकार किसलय पीला पत्ता बना इसको जानने से पहले दोनों का स्वरूप और परस्पर भेद समझ लेना आवश्यक है। यह प्रत्येक पाठक जानता है प्रगतिवाद छायावाद की प्रति क्रिया स्वरूप उत्पन्न हुआ है।

छायावादः—

जब कवि अनुरंजित प्रकृति में अपने प्राण और उद्गार डालकर उससे आत्मसात् का अनुभव करके उसके सौन्दर्यमय और कोमल गीत का स्पर्श करके उल्लास और सुख का अनुभव करता हुआ उसके सूक्ष्म घूँघट के आवरण को उठा कर अपनी अज्ञात प्रियतमा से साक्षात्कार करके प्रेमालाप करता है, तो वह छायावाद कहलाता है। दूसरे शब्दों में जब मनुष्य या कवि प्रकृति के प्रत्येक वस्तु में अनन्त भगवान् की सत्ता का आभास पाकर उसको पाने के लिए उत्कंठित होकर उसका अन्वेषण कर जो कुछ अनुभूति प्राप्त करता है, साहित्य कोष में वही निधि छायावाद के नाम से सुरक्षित रखी गई है। क्योंकि छायावादियों को प्रकृति में प्रियदर्शन होते हैं, अतः छायावाद में प्रकृति का मुख्य स्थान है।

साधारण मनुष्य अपने सांसारिक बन्धनों में बंधा हुआ सदा संकुचित और सीमित क्षेत्र में रहता है। वह अपनी आत्मा में विश्वव्यापकता और विशालता का अनुभव नहीं कर पाता। उसके लिए नदी-नाले निर्झर फूल प्रकृति इत्यादि सब ऐसे प्राण जगत् हैं, जो केवल उसको भौतिक कार्य में ही प्रेरणा दे सकता है, किन्तु कवि जब उस अनन्त की सत्ता का अनुभव करता है, तो वह फूल में, दूरागत समीरण में निर्झर की अविरल गति में, अर्थात् सर्व प्रकृति में एक मौन संकेत मयी करुणा पाता है, जो उसे सदा कोई नूतन संदेश देती है. वह अधिक से अधिक उसका शृङ्गार करता है, वह उसको प्राणवान् मूर्तिमान् सजीव रूप में देखता है और उसके दुःख सुख का भागी बनता है। वह अपने सुख में भी जब फूल को हंसता और दुःख में रोता पाता है, तो वह आत्मोल्लास के साथ गुनगुना उठता है। उदाहरण के लिये देखिए संसार रात्रि को भयावह रूप में देखता है, पर रामकुमार वर्मा जी गाते हैं:—

इस सोते संसार बीच,
सज कर जग कर रजनी बाले।
कहां भेजने ले जाती हो,
यह गजरें तारों वाले।

रात्री "रजनी बाला" छायावादियों के लिये प्रियतमा स्वरूप है। छाया वादी युग युगान्तर तक अपनी प्रेयसी के विरह में तप कर एकान्त वास में लीन रह कर अपने व्याकुल अन्तर के गीतों को विहंगम सा स्वतंत्र और कलरवमय देखना चाहता है, यही कारण है कि छायावाद में इतनी कोमलता, मधुरता मृदुलता वेदना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसक, पीड़ा और करुण-पूर्ण भाव पाए जाते हैं।

प्रगतिवाद:—

सामाजिक क्षेत्र में जिसे यथार्थवाद, राजनैतिक क्षेत्र में साम्यवाद और समाजवाद कहते हैं, साहित्य क्षेत्र में उसी को प्रगतिवाद कहते हैं। उदाहरण के लिए अन्धे को सूरदास न कह कर अन्धा कहना ही प्रगतिवाद है। दूसरे शब्दों में नग्नता का प्रदर्शन या जैसे का वैसा वर्णन ही प्रगतिवाद है। प्रगतिवाद नीति पर विश्वास नहीं करता वह समाज को क्रांति से हिला देना चाहता है, उसका समूल नाश करके नव-निर्माण करना चाहता है। उसका विश्वास है कि पुरानी और जर्जर नींवों पर नए प्रासाद का निर्माण मूर्खता है, उसका कहना है कि पुरानी वस्तु कभी की नष्ट हो गई है। सम्भव है यही सोच कर बालकृष्ण शर्मा जी नवीन अपनी लेखनी रूपी वीणा से झंकार निकाल रहे हैं:—

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जग में उथल पुथल मच जाये।

और आगे नवीन महाराज कहते हैं:—

प्राणों के लाले पड़ जाएँ,
त्राहि त्राहि नभ में जाए
नाश और सत्यानाशका
धुंआधार जग में छा जाए॥

और इस क्रांति का कारण प्रगतिवाद की समता की, और समाज को उस की व्याप रही त्रुटियों और रूढ़ियों का बंधन तोड़ने की प्रवृत्ति है। न तो उनका अहिंसा पर विश्वास है, और उनका विश्वास है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते। यह सत्य है कि प्रगतिवाद जर्जरित मानवता और समाज के संकीर्णता के बन्धनों को तोड़कर, उन्मुक्त हो कर स्वच्छन्दता से अपार धरती पर विचरण करना चाहता है।

छायावाद और प्रगतिवाद में अन्तर:—

१. छायावाद जहां केवल व्यक्ति गत भावना को महत्व देता है, प्रगतिवाद वहां समष्टि भावना के अस्तित्व को स्वीकार करता है। यही कारण है कि छायावादी जहां केवल अपनी और अपनी प्रिया के दुःख सुख हास्य रुदन को लिपिबद्ध करता है, प्रगतिवादी वहां समस्त समाज का चित्रण करता है।

२. छायावाद परलोक और उस पर लोक के सुख को महत्व देता है, जबकि प्रगतिवाद भौतिक और इसलोक का सुख को ही सर्वस्व मानता है।

३. प्रगतिवादी सुधार नहीं, बल्कि नव-निर्माण चाहता है।

४. छायावाद आत्मचिन्तन में सुख अनुभव करता है, जबकि प्रगतिवाद विश्वचिन्तन में सुख शान्ति और उल्लास का चिन्तन करता फिरता है। छायावादी प्रियतमा के केश और कुचों का चन्द्रमयी रात्रि द्वारा वर्णन करता है, प्रगतिवादी निर्धन, किसान मजदूर और बुभुक्षित के करुण क्रन्दन पर अपनी लेखनी की नोक टिकाता है।

५. छायावाद व्यक्ति को संसार से उन्मुख करने में सहायता देता है, और प्रगतिवाद उसको संसार की ओर आकर्षित करता है।

६. छायावाद में कला का अधिक प्रयोग है, वह बुरी से बुरी वस्तु को कलात्मक ढंग से सजा कर सौन्दर्य की प्रतिभूति का निर्माण करता है, और प्रगतिवाद सत्य को कड़वे शुष्क और नीरस चुभने वाले रूप में प्रस्तुत करता है।

(७) छायावाद के समस्त कवि प्रायः भारतीयता के उपासक हैं, और वह अतीत को महत्व देते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी लेखनी सुन्दरी अधिकतर अतीत की सुनहली पृष्ठभूमि पर सुन्दर नृत्य करती है किन्तु इसके विपरीत प्रगतिवादी विदेश-विशेष रूप से रुस से अधिक प्रभावित है। वह अतीत की ओर न जा कर वर्त्तमान को अधिक सुखकर बनाना चाहता है।

(८) छायावाद श्रृङ्गार रस प्रधान है प्रगतिवाद वीर रस से परिपूर्ण है।

(९) दोनों को भाषा शैली छन्द की दृष्टि से स्वच्छन्दवादी है। किसी प्रकार का बन्धन कविता के विषय में नहीं मानते।

(१०) प्रायः दोनों का काव्य, गीति काव्य है, जिस में अतुकान्त और लयात्मकता पर अधिक बल दिया गया है।

(११) संसार में तीन वस्तुओं का महत्व प्रायः सभी स्वीकार करते हैं। आत्मा आनन्द और प्रकृति दूसरे शब्दों में सत् चित् आनन्द। छायावादी ब्रह्मानन्द की ओर बढ़ने की ओर अग्रसर करता है, और प्रगति वादी चित् की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

सार रूप में छायावाद आदर्शवाद और प्रगतिवाद यथार्थवाद है। छायावाद नवनीत है तो प्रगतिवाद प्रस्तर। एक सुमनों के मृदु कोमल और मधुर दलों का पुंज है, तो दूसरा शूल। एक शुभ्र ज्योत्स्नामयी तारिकाओं से सुसज्जित शीतल और सरस रात्रि है, शरद् शर्वरी है तो दूसरा कुहूतम का माता अन्धकार मयी अमावस की काल रात्रि छायवाद वसन्त है, तो प्रगतिवाद पतझड़ एक प्राची है तो दूसरा प्रतीची। छायावाद "सौन्दर्य" है तो प्रगतिवाद उसकी नग्न प्रदर्शनी। सारांश रूप में छायावादी "हृदय वादी" के रूप में विरह और करुणा के भर भावनाओं के पुष्प लेकर आता है, प्रगतिवादी उसी वस्तु को मस्तिष्कवाद और बुद्धिवाद के चश्मे से देखने आता है। यही कारण है कि प्रगतिवाद में उपयोगिता को सुन्दरता की अपेक्षा उच्च आसन पर आसीन किया गया है। देखिये "ताज महल" के प्रति छायावादी और प्रगतिवादी कवियों के भाव :—

वह शाहजहाँ था एक व्यक्ति,
जिसने तो इतना किया काम।
दे दिया विरह को एक रूप,
है ताज उसीका व्यथित नाम। (रामकुमार वर्मा)

पर पन्त की प्रगतिवाद से रंगी लेखनी इसकी उपयोगिता ढूंढ रही है। गत युग के बहु धर्म रूढ़ि ताज मनोहर; मानव ऐसी भी विरक्ति क्या जीवन के प्रति मानव को मोहान्ध हृदय में किये हुए घर आत्मा का अपमान प्रेत और छाया से रति आर देखिये श्रीपन्त क्या फरमाते हैं :—

पर प्रेयसी की स्मृति पवित्र,
कितनी कोमल कितनी अनूप,
फिर शाहजहां ने बन कठोर,
क्यों दिया उसे पाषाण रूप॥
यदि फूलों से निर्मित आलान,
यह ताज मनोहर होता सहास।
तबतो स्मृत्ति का, का था उचित चिन्ह,
मैं क्यों रहता इतना उदास॥

यह है प्रगतिवाद और छायावाद की रूप रेख और उनका अन्तर है। किन्तु हमें देखना य है, कि किस भांति कवि-समूह छायावाद प्रगतिवाद की ओर प्रवृत्त हुये हैं। पहले छायावा के मुख्य आधार स्तम्भ पन्त और निराला ही देखिये। जो पन्त उपयोगिता के नाते उ लिखित विचार, जो "ताज महल" के ऊपर लि हैं, वही पन्त प्रकृतिमय हैं। अर्थात् प्रकृति क से पन्त की ओर पन्त कहने से प्रकृति की कोमल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आभास मिलता है। किसलय से सुकुमार, समीरण की अन्थर गति सा पराग या मोहक मय धन के बीच चमकती हुई सुसज्जित भावना के समान पन्त जो बसन्त की श्री, कोकिल की आवाज़ को सदैव अपनी अज्ञात मधुबाला का चिरन्तन संदेश समझता था, वही पन्त महाराज जो अपनी वीणा रूपी लेखनी की झंकार सदैव अलमोड़ा प्रकृति के झिलमिलाते अंचल के एकान्त प्रांगण में अपनी प्रियतमा के अन्वेषण में तल्लीन थी, वह पन्त जो कल्पना के सुनहली कुंजों में प्रिया के साथ केलि-क्रीड़ा करते थे। एक दिन अनायास उन्होंने मृत्युलोक की ओर झांका उन्होंने देखा कि संसार में संघर्ष है, दुखी मानवता हाहाकार कर रही हैं, उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि वह चीत्कार उस पर उपहास स्वरूप है संसार की करुणामयी मूक आंखें मौन संकेत करों से उसे बुला रही थी। उसी कोयल के कोमल स्वर में पन्त शंखनाद की विश्व को कँपा देने वाला अमोघ घोष स्वर सुनने लगे और अनायास उनके मुँह से—

गा कोकिल, बर्षा पावक कण,
नष्ट भ्रष्ट हों जीर्ण पुरातन।
पावस पग धर आवे नूतन,
हो पल्लवित नयन मानवपन॥

सुन कर जगत चित्र लिखे से पागलों की भाँति मुँह में अंगुलियां डाले एक टक उन्हें घूरता रहा।

किन्तु पन्त जहां प्राचीन समाज नाशक रूढ़ि बन्धनों से छुटकारा पाना चाहते हैं, वहां वह आधुनिक विषमता के रुई अम्बार को जगत क्रान्ति की चिंगारी से भस्म कर देना चाहते हैं। पन्त जी इस सामाजिक विषमता के संघर्षण से तंग आकर कहते हैं—

क्या वह सामाजिक संघर्षण, केवल मानव का जीवन ?

सुन्दरता आनन्द प्रेम के स्वप्न चिरन्तन,
क्या केवल प्रभात के उड़ गया ? रिक्त शरद घन ?

अब पन्त को संसार के अभाव भी खलने लगे और इसी 'चिन्तन' कविता में समाज की विषमता का चिन्तन करता हुआ कवि कहता फिरता है—

आज अभाव शक्तियां जग में
कांटे बोती हैं पग पग में।
सामाजिक समता का कटु विष,
दौड़ रहा जग की रग रग में।

अपनी "वीणा" पर "उच्छ्वासों" की 'पल्लव' के समान कोमल "ग्रन्थि" गुंजान वाले पन्त "युगान्त" "ग्राम्या" और "युग वाणी" में मस्त करेणु से दहाड़ उठा।

आगे चलिये किंचित् निराला जी का हाल भी पूछिये। अल्पायु में पत्नी वियोगी श्रीमान् निराला जी निर्झर के रूप में आंसू और समीरण के रूप में कानन के किसी छोर में छिप कर आहें निकालते रहे। आज तक वह कागज़ पर डर कर लिखते रहे कि कहीं उसकी प्रिया के प्रति गाये मधुर और कोमल उद्गार लेखनी की नोक से पीड़ित न हो जायें। निराला जी स्वयं पीड़ा के कन्दुक से क्रीड़ा कर मन बहलाया करते थे। एक दिन कहीं दूर किसी हथौड़े की चोट का स्वर कानों में गूँजा। आकर देखा कि एक नव-युवती जिसके बाल चिथड़े हैं। अर्धनग्न है। धूप में बैठी सड़क के किनारे पत्थर कूट रही है। निराला जी की सब तानें बिखर गईं। उनका युवक हृदय विषमता की ज्वालाओं की चपेट में लिपट गया और वह चिल्ला उठे—वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोड़ती पत्थर देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर—

तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार। श्याम तन भार, बद्ध यौवन। संसार के रुदन मय मौन अट्टहासों ने उन्हें झकझोर कर जगा दिया। "अनामिका परिमल" और गीतिका के लेखक" "कुकुर मुत्ता" में नई क्रांति का नव सन्देश लेकर आया। प्रेम को पूर्ण रूपक मय सजीव मूर्तिमान् करके उसमें अपने हृदय के संचित प्रेमोद्गारों से अपने प्राणों को उडेल कर प्रिय संग मधुर राग गाने वाला निराला—

प्रेम चहक कर उठा नयन नव
विधु चितवन मन ए मधु कलरव
मौन पान करती अधरासव,
कंठ लगी उरसी
मधुर स्नेह के मेह प्रखर तर
बरस गये इस निर्झर झर झर।
लगा अमर अंकुर उर भीतर,
संसृति भीर भई।

कह उठा—

दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिल कर हैं एक
चल रहा लुकुटिया टेक
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता।
वह आता।

निराला जी आज के पूंजीपतियों की कूट नीति भी पहचान गये हैं।

खुला भेद विजयी कहाये हुये जो
लहू दूसरों का पिये जा रहे हैं।

निरन्तर अपने साकी के आलिंगनों और चुम्बनों में उलझे रहने वाले बच्चन मियां जो आठों याम अपनी 'मधुबाला" की 'मधुशाला" में "मधुकलश" के पास बैठ कर साकी के हाथों अनगिनत "मधुप्यालों" का जाम चढ़ा चुके थे। जो कालमयी अंधेरी रात्रि के "निशा-निमंत्रण" में अपने "आकुलान्तर के सौन्दर्य प्रेम और यौवन के मधुगीत एकांत संगीत में झंकृत कर साकी को अभिसार के लिए निमन्त्रित करते थे, वही बच्चन जी जब प्रगतिवाद के, चका-चौंध सूर्यातप से झुलसे विश्व के व्याकुल प्रांगण में आए तो उनका आकुलान्तर व्याकुल विश्व में परिणत हो गया। वह बच्चन जो अपनी मधुर तानों के प्रवाह में बह कर गाया करते थे:—

मैं निज उर उद्गार लिए फिरता हूं, मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूं, है यह अपूर्ण संसार मुझको न भाता मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूं। उन्हीं बच्चन महाराज का रोम रोम बंगाल के अकाल का दुःख अनुभव कर तड़पने लगा। जो मुख पहले मधुप्यालों से लाल रहता था। वह दुखियों के करुण क्रन्दन से पिघल और तड़प कर आवेश से लाल होने लगा, और विवश हो कर उनकी लेखनी एक दिन यह पंक्तियां लिख गईं:—

दीनता के असाध्य अवतार
पेट खाली, हाथ पसार,
पाँच ऊंगलियां बांध, मुह दिखला
भीतर घुसी आखों से आंसू डार
मानव होने का सम्मान बिसार,
घूमती गांव-गांव नगर-नगर,
बाजारों हाटों दर-दर द्वार-द्वार।

आरम्भ में प्रगतिवाद अपने कार्य में सफल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। क्योंकि जिस छायावाद पर कटूक्तियां व्यंगोक्तियां कसी जाती थीं जिसकी प्रतिक्रिया में यह उत्पन्न हुआ था यह उससे ऊंचा न उठ सका। क्योंकि कवि गगन चुम्बी प्रासादों के गुदगुदे बिछौनों पर, बैठ कर अपनी कल्पना परी को बरबस जो कि स्वर्गलोक की ओर जाती थी, उसे धरती पर लाते। इस प्रकार कविता में वह सहानुभूति पीड़ा और कसक न थी। बल्कि वह बनावट और अस्वाभाविकता के नकली ठीकरों से सुसज्जित थी। किन्तु देर तक यह अवस्था न रही। और अब जहां वह वास्तविकता के बिल्कुल पास है, वहां उसमें आशा की सुनहली किन्तु अभी तक धुंधली आलोक रेखा दिखाई पड़ती है। और प्रगतिवादी कवियों के दर्शन कीजिए।

प्रगतिवाद के अधिनायक "रामधारी सिंह" दिनकर की कुछ रचनाओं पर छायावाद का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। 'गीत-अगीत कौन सुन्दर है" नामक कविता इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। जहां कवि के मस्तिष्क में कभी इस बात पर द्वन्द्व होता था, कि मूक और मुखरित पुण्य में से कौन उच्च और सुन्दर हैं, वहां अब कवि लोई क्रांति मय नयी चीज देखता है:—

एक मनुज संचित करता है,
अर्थ, पाप के बल से।
और दूसरा भोगता उसे दूसरा,
भाग्य वाद के छल से।
नर समाज का भाग्य एक है,
वह श्रम, वह भुजबल है।

विभ्राट् वासना के स्वामी "रामेश्वर शुक्ल अचल" जी जिन के विचार में:—

चिर तृष्णा में प्यासे रहना,
मानव का सन्देश ही है।

वही अंचल "उस मजदूर की अन्धी लड़की" में मानवता का मौन और करुण चित्र खींचते दृष्टिगोचर होते थे। उनके भीतर निरीहों और शोषित वर्ग के प्रति मानवता और कवि के नाते अच्छी सहानुभूति है, यही कारण है कि वह उनका वास्तविक चित्र उतारने में सफल हुए हैं:—

और कई बच्चों की मां,
आ रही उधर से अन्न बटोर।
आंचल में कुछ लिए चबाती,
कुछ बिखरे धोती के छोर॥
वह देखती पेड़ तले यह,
खड़ी मानवी कृश तन जर्जर।
लेती बांध फटे दामन में,
थोड़े से दाने अकुला कर॥

हरिकृष्ण प्रेमी जिन्हें सदैव किसी के मौन संकेत बुलाया करते थे। और यह उसी का पागल दीवाना कवि गाता फिरता था।

यह हृदय न जाने किस की,
सुधि में बेसुध हो जाता।
छिप-छिप कर कौन हृदय की,
वीणा के है तार बजाता॥

उन्हें भी संसार की विषमता को देख कर अनुभव हुआ। और मस्ती टूटने के साथ ही वह अपनी प्रिया से अपने मन की व्यथा कह उठे:—

हमने देखा पास हमारे,
महल खड़े हैं भारी-भारी।
उनके आगे प्रिये! दीखती,
एक व्यंग सी कुटी हमारी॥

आगे चल कर कवि स्वयं इस क्रांति की ज्वालाओं में मिल जाना चाहता है। इस वैषम्य को मिटाने के लिए और नव-सृजन के नूतन महायज्ञ में निज प्राणों की आहुति हँस २ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना चाहता है। या इससे पहले वह प्रत्येक जन के अन्दर, इसके विरोध में विद्रोह की चिनगारी रखना चाहता है। और कवि इसमें सफल भी होता है : प्रेमी जी के शब्दों में ही: –

हमने जन-जन के मन में,
रख दी चुपके से चिनगारी।
चिन्ता क्या है आज घिरी,
जो चारों ओर अन्धियारी॥

भगवती चरण वर्मा भी "मानव" की विषमता रूपी पंक में फंसी "भैंसा गाड़ी" को दूर शान्ति और सौरभ पूर्ण शस्य श्यामला भूमि में ले जाना चाहते हैं।

नरेन्द्र शर्मा दिनकर और भट्ट जी इत्यादि की रचनाओं में प्रगतिशीलता और सृजनात्मकता दोनों का सुन्दर समन्वय मिलता है। भट्ट जी कहीं यह कहते हैं—

अरे फैंक दो सुधा रसीली,
मैं विष पीने आया हूँ।
किसी नशे की चाह नहीं है,
वो सर्वनाश जीने आया हूं।

वहां उनमें पूर्ण आशा का संचार भी हैं:—

महानाश में महासृजन का,
एक बार ही रव भर दूँ क्या?

नरेन्द्र जी की भी आशा देखिये उनका विश्वास है—

मिटने में ही बनना है अब,
सहना है तो लड़ना है।

वह इस क्रांति को अग्नि की तपस्या और साधना मानते हैं तभी वह आगे चलकर कहते हैं–

सृजनत्व बन कर निकलेगा,
तत्व आज का संहारी।

इस प्रकार कवि शलभ पुंज द्रुतगति से प्रगतिवाद के प्रदीप की ओर बढ़ रहा है। इस प्रकार के अनगिनत उदाहरणों की मणियों से हिन्दी साहित्य आलोकित हो रहा है। 'दिनेश' अरुण 'कमलेश' सुमन, सुधीन्द्र इत्यादि कई कवि गण इस माला में अपने बहुमूल्य हीरे पिरोने का अकथनीय प्रयास कर रहे हैं। आज का युवक हृदय और प्रगतिशील लेखक समूह, जनता के करुणा क्रन्दन, रुदन दुःख और अशान्ति को, सजीव देवता प्रगतिवाद पर ही अपने सहानुभूति युक्त उद्गारों के पुष्प चढ़ा कर प्रसन्न होता है।

उपरोक्त कवियों की प्रथम रचनाओं पर छायावाद का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है, किन्तु प्रधानता प्रगतिवाद की है। क्योंकि उनका उदय प्रभात बेला में हुआ जब कि छायावाद का चन्द्र अपनी शीतलता सौरभता और शुभ्र ज्योत्स्ना लेकर अस्त हो गया और प्रचण्ड उद्दण्ड अखिल विश्व को तप्त और आलोकित करने वाले प्रगतिवाद का सूर्य उदय हुआ।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से सिद्ध है कि समय समय पर संसार को सौन्दर्यमय दृष्टि उसके विचारों के सागर को क्षुब्ध कर देती हैं और साहित्य को भी अपना कलेवर बदलना पड़ता है। युग-निर्माता युग संचालक और पथ-प्रदर्शक कवि भी समय समय पर अवश्य अपना कर्तव्य पूरा करता है किन्तु जैसे मानव परिस्थितियों का दास है, वैसे ही साहित्य और कवि भी। किस प्रकार कल्याणमयी पावन और विमल आकाश गंगा मृत्युलोक के अपार पापों को धो कर इस लोक को पीयूष प्लावित कर के स्वर्ग बनाना चाहती है, यह तो इतिहास के पन्ने अपने मुँह से स्वयं बता रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरिधर कविराय पंजाबी साधु थे

[लेखक—श्री स्वतंत्रानन्द जी महाराज प्रधान पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन]

गिरिधर जी की कुंडलियां अधिक प्रसिद्ध हैं। किन्तु उनके रचे और छन्द भी हैं। यथा सवैया, और कुछ छन्द ऐसे हैं, जिनको विषय के नाम से ही कहा जाता है। जैसे 'मस्तियां' इसके अंत में प्रायः पाठ आता है। 'खुद मस्त बिन अवर मस्त सब' इसी भांति इनके लेख, अनेक प्रकार के हैं।

आश्चर्य यह है, कि साहित्यिक व्यक्ति इनके विषय में कुछ नहीं जानते हैं और जो कुछ जानते हैं, वह ना के बराबर है अथवा वह ठीक नहीं है।

कविता कौमुदी कार ने इनका वर्णन किया है, वह भी ठीक नहीं है, मुझे वही पढ़ कर पुराने संस्कार उद्बुद्ध हुए थे। तदनन्तर मैंने उनका पता जानना चाहा, उस खोज का जो परिणाम है वह सन्देश के पाठकों की जानकारी के लिये लिखता हूं।

श्री त्रिलोक रामजी धराचोंवाले अपने समय के प्रसिद्ध महात्मा थे। वह भाषा पढ़ाने की मंडली के मण्डलेश्वर थे। उनके दो पारिभाषिक शब्द थे। पण्डित जी तथा कवि जी। वह पण्डित जी श्री निश्चलदास जी को कहा करते थे। और उनके कवि जी, श्री गिरिधर कविराय जी थे। वह बातचीत में यदि पण्डित जी शब्द का अथवा कवि जी शब्द का प्रयोग करते थे, तो इन्हीं के लिये किया करते थे।

उस समय मैंने एक दिन उनसे पूछा था। कवि जी अर्थात् गिरिधर जी कौन थे। उन्होंने जो बातें बताईं, उनमें यह बात भी थी। इनका नाम हरिदास जी था और वह द्वाबा निवासी थे। कविता कौमुदी में इनका वर्णन पढ़ कर यही संस्कार उद्बुद्ध होने पर इसके निश्चय का यत्न करना पड़ा।

श्री स्वामी वेदानन्द जी के साथ अंतिम निश्चय करने का विचार करके मैं दसूहा गया, वहां से उस ग्राम में गए, जहां के निवासी कवि जी थे। वहां वृद्ध पुरुषों से पूछा, उन्होंने जो कुछ बताया, वह संक्षेप से लिखता हूं।

ज़िला होशयारपुर में तहसील दसूहा में दसूहा के समीप एक झंगडकलां (बड़ा झंगड) नाम का ग्राम है। गिरिधर कविराय वहां के निवासी थे। इनका गृह का नाम देवीदास कौड़ा था। यह कौड़ा जाति के खत्री थे। इनका विवाह हुआ था, परन्तु इनके सन्तान नहीं थी। गृहस्थ से वैराग्य होने पर वह उदासी साधु बने। साधु होने पर उनका नाम देवीदास हटा कर साधु हरिदास रखा गया। और गिरिधर कविराय उनका उपनाम था इस प्रकार गिरिधर कविराय जी जन्म से पंजाबी तथा कौड़ा खत्री थे। उनका नाम देवीदास था। ग्राम झंगड कलां तहसील दसूहा ज़िला होशयारपुर था। साधु नाम हरिदास था। उपनाम गिरिधर कविराय था। यह उनका परिचय है। यह निश्चित बात है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम गीत (पंजाबी)

[लेखक—अजीतसिंह जी कृति, ग्राम खुतरावां, ज़िला हिसार]

(भ्राता के पुत्र होने पर भगिनी गीत गाती है)

चन्द चढ़िया बाप दे खेड़, वीर घर पुत्त जम्मिया।
पुत वीर दा भतीजा मेरा, निउं जड़ बाबल दी॥

(भगिनी भ्राता के स्नेह को प्रगट करने वाले गीत)

वीर नदियां चीर के आए, ताए चाचे बाहरों मुड़ गए।

(भ्राता भगिनी के पास आया, भगिनी की सास ने उसका सत्कार न किया भगिनी बेबस है। अपने भाव प्रगट करती है, मन में यह भाव हैं)

ससे तेरी महि (महिषी मझ) मर जाय, मेरे वीर नू मिठा न पाया।
वीरा दाल दा गिला न करना, अड्ड होके खण्ड पाऊंगी।
वे की बोल दी अन्दर सस मेरी, सुण के तूं जाईं वीरना।
जे मैं मरजां धर्म धाह मारी, वीरा तेरी धिर टुटजू।

(निर्धन पिता की पुत्री का मुकलावा (गौणा) है उस समय पुत्री पिता से कहती है। भली प्रकार कुछ देकर विदा करना, कोई यह न कहे कि कंगाल की कन्या है। पिता अपनी अवस्था का वर्णन करता है)

काई आखेन नंगां दी धी जांदी, नक्कलावे तोरीं बाबला।
मेरी लग गया कोर नूं हाला, चन्द किथों पावां बच्चीए।
मेरी इक्को टग्गे दी खेती, किथों पावां चन्द डंडीयां।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी की रसानुभूति

[लेखक—श्री देवदत्त शास्त्री]

रस काव्य की आत्मा है रस-सिद्ध कवि वस्तु के हृदय को पहचानने में समर्थ हुआ करता है। कवि और वैज्ञानिक में यही एक अन्तर है, कि वैज्ञानिक वस्तु की वास्तविकता तक पहुँच कर रुक जाता है और कवि वस्तु की वास्तविकता को परखते हुए उसके हृदय तक पहुंच जाता है। गोस्वामी तुलसी दास जी ऐसे ही रस सिद्ध कवि थे, जिन्हों ने अपने राम चरित्र मानस में वस्तु और शिल्प को एक दूसरे का पूरक सिद्ध किया है। उनकी रसानुभूति इतनी तीव्र इतनी सूक्ष्म और इतनी विलक्षण थी कि रामायण का हर पात्र लौकिकता से एकदम ऊपर उठ कर अलौकिकता की उस मंजिल तक पहुंचा हैं, जिसे वेदों में तमसः परस्तात् एवं यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमंमन कहा गया है। तुलसीदास जी के एक-एक शब्द रस से शराबोर भीगे हुए और लौकिकता से अलौकिकता की ओर उठते हुए-से जान पड़ते हैं।

कंकण किंकिणि नूपुर ध्वनि सुन इस एक चरण के सभी ध्वन्यात्मक शब्द स्वयं बोलते हुए संगीत मय जान पड़ते हैं। मनीषी कवि परिभू और स्वयंभू इसलिए कहा जाता है, कि उसके काव्य में ऐसा रसोद्रेक रहता है, ऐसी रसानुभूति रहती है, कि जिसके सामने ब्रह्मानन्द भी फीका पड़ जाता है। कवि की कृति में कवि का दिल रहता ही नहीं, बोलता भी है, इसका अनुभव रामचरित मानस पढ़ने से सहज ही हो जाता है। राम चरित मानस १-शृङ्गार २-हास्य ३-करुण ४-भयानक ५-वीर ६-रौद्र ७-वीभत्स ८-अद्भुत और ९-शांत नौ रसों का निधि है। इन नौरसों द्वारा कवि की रसानुभूति फूट २ कर बहती हुई सी जान पड़ती है। भाव जगत् शब्द चित्रों द्वारा साकार सा प्रतीत होने लगता है जैसे:—

शृङ्गार—

भूप बाग वर देखेउ जाई,
जहं बसन्त ऋतु रही लुभाई।

और— लागे विटप मनोहर नाना,
वर्ण-वर्ण वर बेलि बिताना।
नव पल्लव फल सुमन सुहाये,
निज सम्पति सुरपतिहिं लजाये।
चातक, कोकिल, कीर चकोरा,
कूजत विहंग नचत कलमोरा।

यह तो शृङ्गार का उद्दीपन है, जहां मानस के नायक राम आत्मविभोर होते हैं। उस अवसर पर चन्द्रमा भी कैसा सत्कार करता है:—

प्राचीदिशि शशि उगेउ सुहावा,
सियमुख सरिस देखि सुख पावा।
बहुरि बिचार कीन्हें मन माहीं,
सीय बदन सम हिम कर नाहीं।

क्यों—

जन्म सिन्धु पुनि बन्धु बिष, दीन, मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि, चन्द्र बापुरो रंक॥

उपर्युक्त इस वर्णन से तुलसीदास जी की अन्वीक्षण शक्ति, रसानुभूति और रस-परिपाक का सुन्दर परिचय मिलता है। चन्द्रमा को शृङ्गार रस का आलम्बन उद्दीपन मानना कवि परम्परा है। शायद संसार के सभी कवियों ने शृङ्गार वर्णन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रमा को अपनाया है, किन्तु गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने इस वर्णन में वस्तु और शिल्प दोनों की मर्यादा की ऐसी सुन्दर रक्षा की, साथ ही शृङ्गार रस को ऐसी अनवद्यता प्रदान की जिसके लिये कदाचित् किसी कवि ने अब तक विचार भी न किया होगा। शृङ्गार के सभी भावों, विभाव, और अनुभावों पर काव्य की रसानुभूति का अन्तः साक्षात्कार कर एक अप्रतिम और अनिन्द्य सौन्दर्य की सृष्टि की है।

भये विलोचन चारू अचंचल,
मनहुं सकुचि निमि तजेहु दृगंचल।

इस शब्द कटाक्ष में कितना सुकुमार अनुभाव है। सीता जी के हृदय में उगा हुआ प्रेम-रस बीज का भाव कार्य बन कर व्यक्त हो रहा है। शृङ्गार रस की चपलता को मर्यादा और शील के बन्धन में बांध रखना बड़ा ही मुश्किल है, किन्तु तुलसी दास जी ने इसे किस चातुरी से बांधा है:—

लोचन मगु रामहिं उर आनी,
दीन्हें पलक कपाट सयानी।

आंखों के रास्ते में हृदय के जेलखाने में पलकों के किवाड़ बन्द कर सीता जी राम को बन्दी बना लेती है। गोया कच्चे धागे में बांध कर उन्हें बधुँआ बना रखा है। यह शृङ्गार का संचारी भाव है, जिसे मर्यादा के अन्दर रखने में कवि सफल हुआ है। विदेह वाटिका से ले कर विवाह प्रसंग तक संभोग शृङ्गार और सीताहरण के बाद से लंका-विजय तक विप्रलम्भ शृङ्गार की जो रसवती धारा रामचरित मानस में बहायी गई है, वह कभी सूख नहीं सकती। विप्रलम्भ शृङ्गार का वर्णन जितना मर्मान्तक है, उतना ही निगूढ़ और रहस्यमय भी है। इस वर्णन में साहित्य का अजर, ओजस्वी चमत्कार झलकता है।

वीर रस—

मधुर रस मधुर भाव के उपासक तुलसीदास जी ने वीर रस के वर्णन में जो कमाल दिखाया है, वह उन्हीं की अद्‌भुत शक्ति और प्रतिभा केवल बूते की बात हो सकती है। वीररस में नौरसों की अभिव्यक्ति "जीकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी" इस एक अर्धाली में ही करके सीपी में सागर भर दिया है। धनुषयज्ञ का प्रसंग वीर रस की साकार सृष्टि करता हुआ सा दीख पड़ता है।

हास्य—

रामचरित मानस में हास्य रस का आधिक्य नहीं है, फिर भी जितना है, वह शिष्ट श्लाघ्य और अनिन्द्य है। नारद के विवाह का मजाक हास्य रस का सफल उदाहरण है :—

कहहिं कूर नारदहिं सुनाई,
नीक दीन्ह हरि सुन्दरताई।
रीझहिं राज कुँवरि छबि देखी।
इनहिं बरहिं हरि जाति बिसेखी।
× × ×
पुनि पुनि मुनि उकसहि अकुलाहीं।
देखि दशा हर गण मुसकाहीं॥
× × ×
तब हर गण बोले मुसकाई,
निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई।

उपर्युक्त चौपाइयां हास्यरस के शुद्ध उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हुई हैं। इन उदाहरणों में हास्य रस का स्थायी भाव हँसी है, हँसा देने वाला आकार, चेष्टा आदि विभाव बने हैं. आंखों का संकोच और आंखो आंखों हँसना, इशारा करना आदि अनुभव बन गये हैं।

करुण—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुतः करुणा वही है जो हृदय में हलचल, स्पन्दन, परिवर्तन पैदा कर दया के भावों का उदय करे, भारतीय करुण रस की परम्परा में त्याग और तप का अविच्छन्न प्रच्छन्न हाथ रहता है। तुलसी ने ऐसी करुणा उत्पन्न की है, कि मानस के धीरोदात्त नायक राम को उस करुणा का निभाना मुश्किल हो गया है। जगह जगह गोस्वामी जी ने करुणा की मर्यादा रखी है। दशरथ राम के वियोग में करुणाप्लुत हो निराशा और मृत्यु के शिकार होते हैं, लेकिन तत्काल भरत के आ जाने पर करुणा की मर्यादा की टूटती हुई दीवारें फिर खड़ी हो जाती हैं। लक्ष्मण जी के शक्ति लग जाने पर शोकाकुल राम के मुँह से—

जो जनतेउँ बन बन्धु बिछोहू,
पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू ॥

ऐसे अवहेलना सूचक शब्द निकलते अवश्य हैं, लेकिन इसका अनुबन्ध तुलसी दास जी ने पहले ही यह कह कर—"वहां राम लछिमनहिं निहारी। बोले वचन मनुज अनुहारी॥" बांध देते हैं। करुणा और नायक की मर्यादा बड़ी सफाई से बचा लेते हैं। इतना ही नहीं बल्कि शोक लीला में निरत भगवान राम जहां करुणाप्लुत हैं वहीं यह भी कहते दिखायी दे रहे हैं कि तुम कृतान्त भक्षक जनत्राता हो। वस्तुतः गो स्वामी जी काव्य, समाज और अपनी मर्यादा की रक्षा में सदैव सतर्क रहे हैं।

रौद्र—

हृदय के भावों का सूक्ष्म विश्लेषण करने से ही रौद्र रस का स्वरूप पहिचाना जा सकता है। जहां इस मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त को नहीं स्वीकार किया गया है, वहां के साहित्य में वीर रौद्र और भयानक रसों को एक ही रस में अन्तर्लीन कर लिया गया है। तुलसी दासजी ने शास्त्रीय पद्धति के अनुसार इन तीनों रसों की अलग अलग अनुभूति का आस्वादन किया है—

मारहिं चपेटन दांतन डारि लातन मीजहीं।
चिक्करहिं मरकट भालु दल, फल करहिं जेहि खल छीजहीं ॥

भयानक—

रामायण में भयानक रस की ऐसी ओजमयी निष्पत्ति हुई है, उसे पढ़ कर "राम रावणयोर्युद्धं राम रावणयोरिव" कहावत सत्य प्रतीत होती है। विश्व के घटनाचक्रों के इतिहास में तुलसी दास जी द्वारा वर्णित भयानक रस पूर्ण रामरावण युद्ध एक अद्वितीय घटना है।

प्रभु कहु वार बाहु सिर हये,
कटत झटित पुनि नूतन भये।
पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा,
अति कौतुकी कोशलाधीशा।
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू,
मानहु अमित केतु अरु राहू।
जनु राहु केतु अनेक नभपथ
श्रवत शोनित धावहीं।
रघुवीर तीर प्रचण्ड लागहि
भूमि गिरन न पावहीं।
एक एक सर सिर निकर छेदे
नभ उड़त इमि सोहहीं।
जनु कोटि दिन कर जहां तहँ
विधुतुद पोहहीं।

वीभत्स—

घृणात्मक भावों की व्यंजना ही, वीभत्स रस है। हृदय में घृणा, जुगुप्सा का उत्पन्न होना घृणा, गन्ध से थूकना, मुँह फेर लेना' आंखें बन्द कर लेना और विभ्रम में पड़ जाना आदि भाव वीभत्स के द्योतक हैं। तुलसी दास जैसे पवित्र, सात्विक और मधुर रस से निष्पन्न कवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने वीभत्स रस के वर्णन में भी कमाल किया है!

मज्जहिं भूत पिशाच वैताला,
केलि करहिं योगिनी कराला।
धीरु संक धरि भुजा बढ़ाहीं,
एक ते एक छीन धरि खाहीं।

अद्भुत—

तुलसीदास जी आस्तिक, सगुणोपासक भक्त थे। भगवान् की अद्भुत' अलौकिक लीलाओं पर उन्हें अटल विश्वास था, उनके अद्भुत रस के वर्णन को आज का बुद्धिवादी व्यक्ति कोरी कल्पना, गप या दकियानूसीपन ही समझ कर अवहेलना कर सकता है। किन्तु तुलसीदास जी ने हृदय और मस्तिष्क के सन्तुलन को बनाये रख अपनी अन्वीक्षण शक्ति और आत्मनिरीक्षण भावना से साक्षात्कार कर के ही लिखा है, ऐसा उनके वर्णनों से स्पष्ट विश्वास होता है।

दिखराया मातहिं निज, अद्भुत रूप अखण्ड।
रोम रोम प्रति राजहिं, कोटि कोटि ब्रह्मण्ड॥

तुलसीदास ने इस पद्य में स्वानुभूत राम दर्शन का वर्णन किया है।

शान्त—

संसार की अनित्यता, शाश्वत शान्ति, साकार उपासना तपोवन में निवास करना, तप, स्वाध्याय नियम से युक्त रहना, हरि गुणगान सुन कर रसाप्लुत रोमांच होना, हर्ष, दया का उद्रेक होना आदि शान्तरस के भाव अनुभाव विभाव आदि हैं। तुलसीदास शान्त रस के स्वयं प्रतीक थे। उनकी यह आध्यात्मिक और भौतिक पूँजी थी, यही कारण है कि शान्तरस के वर्णन में उनकी आचारनिष्ठा, वाक्सम्पृक्तता शिष्टता और आत्म समर्पण की भावना मुखरित होती हुई देखी जाती है—

मोसम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर।
अस विचार रघुवंश मणि, हरहु विषम भव भीर॥

इस प्रकार उपर्युक्त मानस गत नौ रसों के संक्षिप्त विवेचन से यह स्पष्ट बोध होता है, कि तुलसीदास जी की रसानुभूति व्यापक थी। उसमें उनकी साधना सम्पुटित हुई सी जान पड़ती है। रसोवै सः का मानो उन्होंने साक्षात्कार करने के बाद अपने काव्य की आत्मा में रस परमात्मा को प्रतिष्ठापित किया है।

※ विश्व कवि तुलसी दास ※

गोस्वामी जी की वे पंक्तियां भी कितनी सुन्दर बन पड़ी हैं जब वे कहते हैं:—

"मोरे मन प्रभु अस विश्वासा, राम ते अधिक रामकर दासा
राम सिंधु, घन सज्जन धीरा, चन्दन तरुहरि, सन्त समीरा॥"

जिस तरह राम से बढ़कर राम के दास का महत्व है, गोविन्द से बढ़कर गुरु का महत्व है, उसी तरह कवि के वर्ण्य आदर्श से बढ़कर उस कवि का महत्व है जिसने अपने उस आदर्श नायक को अपनी कवि प्रतिमा के बल पर सर्वजन-सुलभ कर दिया।

काव्यकला के क्षेत्र में गोस्वामी जी की देन बहुत महत्वपूर्ण है; परन्तु उस कला की लपेट में उन्होंने जो लोकाभ्युदयकारी सर्वजनग्राह्य तत्व दिया है और उस तत्व को राम में साकार करके उनकी मनोमोहिनी मूर्ति अक्षर अक्षरों में उतार कर जिस प्रकार खड़ी करदी है वह देन और भी अधिक महत्व पूर्ण है। गोस्वामी जी हिन्दी के नहीं, भारती के नहीं; भारत के नहीं किन्तु विश्व के कवि हैं। वे इस युग अथवा उस युग के नहीं किन्तु युग-युग के—सभी युगों के—कवि हैं। उनके ऋण से हम लोग कभी उऋण नहीं हो सकते। उनके श्रीचरणों में श्रद्धाञ्जलपूर्वक जितने प्रणाम अर्पित किये जांय, वे सब थोड़े हैं। इसवर्ष १७ अगस्त ५३ को देश के कोने २ में तुलसी जयन्ती मनाई गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संत कवि सुन्दर दास का ईश्वर विश्वास

[लेखक—डा० योगध्यान अहूजा, एम० ए०, पी० एच० डी० द्वाबा कालेज जालंधर शहर]

अन्य कई सन्तों की भान्ति सुन्दर दास जी की रचनाओं में भी ईश्वर विश्वास की उस पराकाष्ठा के दर्शन होते हैं जो उन-साधारण के लिए स्पष्ट ही आलस्य और अकर्मण्यता के भावों का पोषण करती है। वैसे भक्कर सुन्दर दास जी अवश्य ही यह मानते हैं कि मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। कवि अशुभ कर्म से बचने का आदेश देते हैं और इस प्रसंग में कहते हैं :—

—जो बाहै लुनियेगा सोई[1]।
—जैसा करै सु तैसा पावै[2]।
— भोजन करै तृपति सो होइ।[3]
और —
—अपनी करनी पार उतरना।

परन्तु जहाँ तक इस संसार में जीवन-निर्वाह का सम्बन्ध है संत सुन्दर दास मनुष्य को सर्वथा तथा सर्वदा भगवान् पर ही निर्भर रहने का उपदेश देते हैं।

उनका दृढ़ विश्वास है कि एक बार जब ईश्वर ने जन्म प्रदान कर दिया है तो फिर मानव को अपने पेट की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। भगवान् ही सब के प्रति पालक हैं। अपने ग्रन्थ 'सवैया'[4] अथवा 'सुन्दर विलास' और अपनी "साखी"[5] में भी "विश्वास को अंग"[6] के अंतर्गत कवि ने ऐसे ही विचारों को व्यक्त किया है।

वह भगवान् ही नित कुंजर, कीट[7] आदि, को आहार देने वाले हैं। 'खेचर, भूचर, जलचर'[8] समस्त चराचर का पोषण करने वाले वही हैं। कवि के कुछ और विचार इस प्रकार है :—

—सुन्दर चिंता मति करै पांव पसारे सोइ।
पेट कियौ है जिनि प्रभू ताकौं चिंता होइ।[9]
—सुन्दर तू मति सोच करै कछु,
चंच दई सोइ चूंनि हु दै हैं।[10]
—होहि निचिंत करै मत चिंतहिं,
चञ्च दई सोई चिंत करै गौ।
पांव पसारि परयौ किन सोवत,
पेट दियौ सोइ पेट भरै गौ॥[11]

सन्त सुन्दर दास जी प्रारब्ध पर ही आश्रित रह कर आजीविका के विषय में निश्चिन्त रहने का आदेश देते हैं। भाग्य-लिपि में जो कुछ लिखा जा चुका है वह मिटाया या हटाया नहीं जा सकता।[12] और फिर कवि के विचार में पूर्ण और दृढ़ विश्वास रखने वाले को तो भगवान् आकर स्वयं खिलाते हैं :—

---

(१) सुन्दर ग्रन्थावली, सम्पादक पुरोहित हरिनारायण, राजस्थान रीसर्च सोसाइटी, कलकत्ता, भाग प्रथम, पृ० ३३६/२८ (२) वही, पृ० ३३६/२९ (३) वही, पृ० ३३६/३० (४) वही, दूसरा भाग पृ० २८३ से ६६१ तक। (५) वही, पृ० ६६३ से ८१८ तक। (६) [अ] वही, सवैया पृ० ४ से ३० से ४३५ तक। [ब] वर साखी पृ० ७१७ से ७१९ कत। (७) वही, पृ० ४७६/४ (८) वही, पृ० ४३२/७ (९) वही, पृ० ७१७।२ (१०) वही, पृ० ४३१।२ (११) वही, पृ० ४३०।१ (१२) वही, पृ० ८३३।३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर जो मुख मूंदि कै बैठि रहै एकंत।
आनि पाकवै रामजी पकरि उधारै दंत ॥[१३]

कवि और भी स्पष्ट शब्दों में भगवान् पर निर्भर रहते हुए, उद्यम तथा परिश्रम के त्याग की प्रेरणा करते हैं :—

जगत में आइ तैं बिसार्यौ है जगत पति,
जगत कियौ है सोइ जगत भरतु है।
तेरै चिंता निशदिन औरई परी है आइ,
उद्यम अनेक भांति भांति के करतु है ॥[१४]

अथवा :—

काहे कौं परिश्रम करै जिनि भटकै चहुँ ओर।
घर बैठै ही आइ है सुन्दर सांझ कि भोर ॥[१५]

कवि कहते हैं कि इस अल्प से जीवन के लिए इतने उद्यम की क्या आवश्यकता :—

काहे कौं करत नर उद्यम अनेक भांति।
जीवनौ है थोरौ तातैं कल्पना निवारिये ॥[१६]

सुन्दर दास जी पशु पक्षियों, अजगर आदि के उदाहरण देकर यह उपदेश देते हैं कि उन्हीं की भांति मनुष्य के पालन पोषण का सारा भार भी उसी भगवान् पर ही है :—

कीट पशु पंखि अजगर मच्छ कच्छ पुनि,
उनकैं न सौदा कोऊ न तौ कछु खेत है।[१७]

और :—

सुन्दर अजिगर पि रहै उद्यम करै न कोइ।
ताकौं प्रभु जी देत हैं तूं क्यौं आतुर होइ। [१८]

कवि की यह पंक्तियां सहसा हमें मलूकदास जी के निम्नलिखित प्रसिद्ध दोहे का स्मरण कराती हैं जिससे उद्धृत करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल[१९] लिखते हैं कि यह आलसियों का मूल मन्त्र बन चुका है :—

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कहि गए, सब के दाता राम ॥

---

(१३) वही, पृ० ७१८/१२ (१४) वही, पृ० ४३५/१४ (१५) वही, पृ० ७१७/६ (१६) वही, पृ० ४३३/६ (१७) वही, पृ० ४३४/१२ (१८) वही, पृ० ७१८/१६ (१९) हिन्दी साहित्य का इतिहास, ले० आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, सं० २००३ वि० पृ० ९० ।

याचक !

जब किसी ने यूँ हाथ पसारा, ठुकराना अब धर्म नहीं !
अधम है वह जो मांगे भिक्षा, पापी है जो देता नहीं !
जब वह अपना धर्म गंवा कर, तुम से दुखड़ा रोता है !
लज्जा, मान, व तेज हीन हो, दोनों के सम तकता है !
नीचों से भी नीच कहलाये, जो मुख से "न" कहता है !
धर्म गंवाता यदि एक है, धर्म कमाना-धर्म यही है !

—वीरेन्द्र मोहन 'कांत' प्रभाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघर्ष का लक्ष्य

[लेखक—श्री जीतेन्द्र शारदा, प्रभाकर गुरदासपुर]

मृत्यु शय्या पर वह विमूढ़ सा पड़ा अतीत का मनोविज्ञान सुलझा रहा था। कुछ क्षण भर बाद उसे अपना अन्तर ही पुकार कर कहेगा आनन्द! अब जीवित नहीं रह सकता। पर क्या आनन्द जीवित नहीं रहना चाहता। उसके चाहने से क्या होता है? सारे ब्रह्माण्ड की सत्ता क्या किसी के चाहने पर आधारित है? एक बार उसने सोचा था इस संसार में क्या धरा है परन्तु प्रेम आई थी उसके जीवन में। वह आई भी शायद प्रेम लेकर ही थी। उनका प्रेम दो आंखें लड़ जाने का अमेरिकन प्रेम नहीं था। इसकी पृष्ठ भूमि में एक पवित्रता और रहस्य छिपा है।

क्या है प्रेम? आनन्द अब भी यही सोच रहा है क्या आनन्द की 'प्रेम' रसिक कवियों के भावना लोक की एक कल्पना मात्र है, अथवा बन जाएगी। उसके जीवन में अभाव था—प्रेम पूरक थी। यही वह 'प्रेम' है जो आनन्द में अब भी मरने की इच्छा उत्पन्न नहीं होने देती।

आनन्द की प्रेम वस्तुतः प्रेम की साकार प्रतिज्ञा है। पर यह आंसू कैसे उसकी आंखों में? प्रेम वहीं बैठी सोच रही थी—एक दिन था वह आनन्द के साथ छाया पट देखने गई थी। न जाने क्यों स्वभावतः ही आनन्द ने उसके कन्धे पर हाथ रख दिया था। प्रेम को भी एक शरारत सूझी, उसने कन्धे से उसका हाथ उठा अपने हाथों में ले लिया। शायद आनन्द को यह अच्छा लगा। प्रेम ने एक अंगुली से आनन्द की हथेली पर लिख ही दिया "प्रेम" आनन्द कुछ समझ न सका। बहुत गम्भीर हो कर उसने फिर लिखा प्यार!! पर अब न जाने क्यों' आनन्द झटपट उठ कर बाहर चला गया। बोल पट तो चल ही रहा था—

नीरस और अस्पष्ट

प्रेम बड़ी देर तक सोचती रही मैंने यह क्या किया। क्या मैं हीन हूँ मैंने कोई बुरा काम किया है? वह भी उठी और बाहर आ गई। आनन्द पहले मुस्काया फिर कुछ हँस दिया।

प्रेम भी कुछ हँसी परन्तु विकृत सी।

आनन्द ने प्रेम का हाथ पकड़ा और उसे फिर लाकर सीट पर बिठला दिया। तब से प्रेम और आनन्द का जीवन प्रेम के आनन्द में लीन सा हो गया।

एक दिन आया—वह दिन दुःख का ग्लानि का दिन था? नहीं वह तो नये जीवन का प्रारम्भ था। वास्तविक जीवन संघर्ष का सूत्र पात जीवन उपन्यास का धारावाहिक आरम्भ था।

प्रेम ने सोचा मैं क्या हूं? एक मानव!

नहीं केवल मानव नहीं एक नारी हूं! फिर उसने सोचा यह समाज क्या है? उसका मन घृणा से भर गया। पर उसे लगा यह घृणा अस्वाभाविक सी है। समाज पर तो दया आनी चाहिये। माता पिता वह भी मुझसे क्यों घृणा करते हैं। इसलिये कि मैं वह प्रेम नहीं रही जिसे सब गुड्डो कह कर पुकारते थे। यह प्रेम किसी को अब प्यार करती है। किसी को अपना सर्वस्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे चुकी है क्योंकि अब गर्भवती भी है? क्या इसी लिये ही?

पर आनन्द भी तो चिन्तित रहता है। प्रेम को ऐसा लगता है जैसे वह भी चिन्तित है।

फिर आनन्द आया था। उसने हँस कर कहा चिन्ता न करो प्रेम!

एक काम तुम्हें करना होगा।

तुम अपना जीवन मेरे लिये ही रहने दो। यह सोच भुला दो कि प्रेम क्या है?

सोचो प्रेम आनन्द है! जीवन में प्रेम और आनन्द विलग नहीं हो सकते।

प्रेम कुछ समझ नहीं रही थी उसने कहा—मैं तो अपना जीवन तुम्हें समर्पण कर चुकी हूं। आनन्द को कुछ क्रोध आया लगा कहने—तो तुम्हें अब उस पर कुछ खेद है। तुम अपने को उससे कुछ हीन समझने लगी हो।

इस क्रोध ने प्रेम के मन को सात्वना दी। वह मन ही मन खिल उठी। नहीं आनन्द! मैं पूर्ण स्वाभिमान से कह रही हूं। प्रेम की आंखों में दो आंसू आ गये थे।

यह कैसे?

नारी दुर्बलता! आनन्द।

तुम केवल नारी नहीं हो; प्रेम कुछ और भी हो।

इस प्रकार समाज की घृणा के पात्र, समाज की घृणा से दूर जाने का प्रण कर चुके थे किसी भी प्रकार दोनों ने मिल कर चार हजार रुपये का प्रबन्ध कर ही लिया था उसने नूतन जीवन के स्वप्नों का संसार बसाया।

आनन्द कहेगा—मुन्नू तुम कहां से, कैसे आये?

प्रेम लज्जा से कहेगी—रहने भी दो न। क्या शिक्षा देते हो।

मुन्नू ज़िद करेगा—मां! बताओ न मां! मैं कहां से आया हूँ।

तुम आये हो बेटा—परियों के देश से—वह देखो न तितली।

तो मां तितली कहां से आयी है?

वह भी तो वहीं से आई है।

मुझे तो याद नहीं आता।

"तुम अभी छोटे हो न"!

"तो यह उड़ती क्यों है"?

फिर इसके लिये आनन्द और प्रेम दोनों प्रकृति के इस गूढ़ प्रश्न का उत्तर सोचने केलिए एक दूसरे का मुंह देखेंगे!

और यही था उनका आगत सुखद संसार। कल्पना के परिधान में और भी सुन्दर, सुखद रोचक! पर यह सब मृग तृष्णा भी हो सकती है—आनन्द इसमें विश्वास नहीं रखता। वह बस जानता है—संघर्ष ही एक लक्ष्य है!—अटल और अपूर्व! संघर्ष की इच्छा क्यों?

अपने जीवन को कठोर और नीरस बनाने के लिए?

दुःख आह्वान के लिए?

फिर किस लिए संघर्ष?

वह इच्छा जिसने आनन्द को प्रेम के समीप लाकर बांध दिया—फिर एक नया संसार बसाया—उसी संसार के एक कोने में जिसे घृणात्मक समझा वह भागे थे और अब उसकी इच्छा तो यही थी कि वह सदा के लिए प्रेम आलिंगन में आबद्ध रहे। उसके हृदय की धड़कन सुन सके, पर केवल चाहने से क्या होता है।

आनन्द संसार में न रहा—इस लिए कि उसे नहीं रहना था! नहीं इस लिए कि प्रेम अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को और आनन्द को अभी तक समझ नहीं सकी थी। अब आनन्द को तो वह समझ भी नहीं सकेगी। अब तो उसे अपने जीवन को समझना है! जीवन संघर्ष को जानना है! पर संघर्ष को जानने-समझने का तो कोई अर्थ नहीं होता। संघर्ष में तो केवल उलझा जा सकता है! सदैव के लिये-और शायद यही इसका समझना भी है! प्रेम के लिए अब सुख कहां और किसमें है? आनन्द के बिना आनन्द कहां से मिलेगा पूरक के अभाव में पूर्ति कैसी?

पर उसे शांति मिलेगी ही? आनन्द ने उस पर एक उत्तरदायित्व सौंपा है-[(बालक अथवा बालिका) संघर्ष का संचालक ही जाने!] उसको आनन्द में परिवर्तित करने का यत्न ही सुख है।

वह बाजार गई-उदास और सन्तुष्ट-अपने में ही! पुस्तकों की एक बड़ी दुकान में वह खड़ी थी। उसने कुछ पुस्तकें खरीदीं।

१. आत्महत्या के १०० उपाय!
२. शृङ्खला और जीवन।
३. सत्य और जीवन।
४. वेद और शांति।

चारों पुस्तकें उसके पास थी वह चारों में से आनन्द के लिए संघर्ष; संघर्ष के लिये जीवन और जीवन संघर्ष के लिये लक्ष्य ढूंढने में व्यस्त हो गई!

लक्ष्य स्पष्ट सा लगा! जीवन चाहिये इसलिये कि जीना है और वास्तविक जीवन है संघर्ष में और संघर्ष है सुखमय अस्तित्व के लिये एक मानव का नहीं, अपितु मानव मात्र का ही!

इसके लिये 'वेद' ने प्रेम को शांति का संदेश दिया। हृदय शांति के मूल मन्त्र को वह एक बार उच्च स्वर में पढ़ गई:—

असंतापं मे हृदय मुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा!! (अ० १६।३।६)

* पंजाब हिन्दी सम्मेलन का अमृतसर अधिवेशन *

आपको यह जान कर अतीव प्रसन्नता होगी कि पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आगामी वार्षिक अधिवेशन इस वर्ष के अंत में २६-२७ दिसम्बर को अमृतसर में होना निश्चित हुआ है। पंजाबप्रदेश की विशेष स्थिति में इस अधिवेशन के महत्व पर कुछ कहना व्यर्थ सा है। पंजाबमें हिन्दी पर अपनों और परायों दोनों की ओर से आघात हो रहे हैं। यदि पंजाब के राष्ट्रभाषा प्रेमी इस समय न जागे तो सम्भव है इस प्रदेश में हिन्दी पर ऐसा प्रहार कर दिया जाए जिस से यह कई दशाब्दियों तक स्वास्थ्य लाभ न कर सके। अतः आप से सविनय अनुरोध है कि आप इस सामयिक और अत्यावश्यक अधिवेशन की सफलता के लिए जितना योग दे सकें दें। अस्थाई स्वागत समिति बन चुकी है जिसमें कुछ सभारूढ़ प्रविष्ट भी हो चुके हैं कृपया आप अपनी सभा का विशेष अधिवेशन बुला कर इस अवसर का महत्व प्रतिपादन करें और जितने अधिक से अधिक सदस्य स्वागत समिति प्रतिनिधि सदस्य केलिए बना सकें बनाकर उनकी सूची इस कार्यालय को भेज दें इसके अतिरिक्त आप अपने विशेष उत्सवों जलसों इत्यादि में साधारण जनता को भी इस के सम्बन्ध में सूचित करें और पंजाब में हिन्दी प्रचार की आवश्यकता जतला कर अधिवेशन को सफल बनाने के लिए उन्हें प्रेरित करें इस प्रचारकार्य के लिए आप इस कार्यालय से जो सहायता चाहेंगे सहर्ष दी जावेगी।

कृपया इस पत्र को आवश्यक समझ कर कार्य करें और भी कार्य इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए करें उसकी सूचना भेज कर कृतार्थ कीजिएगा।

भवदीय—चिमनलाल सेठ

मन्त्री स्वागत समिति पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापू से दूर

[लेखक—श्री आनन्द रंक बन्धु, "पानीपत"]

हम राह तुम्हारी भूल गये।

तुम ने थी जो राह दिखाई।
वह ना समझ किसी के आई॥
पथ में जो थे फूल हमारे—
वह हैं अब बन शूल गये।
हम राह तुम्हारी भूल गये॥

यह हम सब की है नादानी।
करते हैं हम जो मनमानी॥
जब समय जागने का आया—
जब ही हम सब टूल गये।
हम राह तुम्हारी भूल गये॥

हम मिनिस्टरी के दीवाने।
ओहदों के हम हैं परवाने॥
जनता की सेवा करने के—
हैं हम सब प्रतिकूल गये।
हम राह तुम्हारी भूल गये॥

तुम सत्य अहिंसा के आराधक।
हम सत्य अहिंसा में हैं बाधक॥
करना था क्या लगे करन—
हम "रंक" यूँ खो सब भूल गये।
हम राह तुम्हारी भूल गये॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्न परीक्षोपयोगी :—

समुद्रगुप्त (बैकुण्ठनाथ दुग्गल) के पात्रों का चरित्र-चित्रण

[लेखक—प्रो० योगेन्द्र मोहन "गुप्त" बी० ए०, प्रभाकर, ज्ञानी, साहित्यरत्न]

"समुद्रगुप्त" के पुरुष-पात्रों में से मुख्य नायक समुद्रगुप्त के अतिरिक्त कांची नरेश विष्णुगोप और महाश्रमण वसुबन्धु हैं। स्त्रीपात्रों में कञ्चन ही मुख्य है।

समुद्रगुप्त—बैकुण्ठनाथ दुग्गल विरचित 'समुद्र गुप्त' नामक नाटक का नायक है और भारत-वर्ष का सम्राट् था। सारे भारत पर (सिवाय कुछ नगण्य राज्यों के) आपका अधिकार हो गया था फिर भी आपकी भुजाएँ विश्राम करने की इच्छुक नहीं थीं। युद्ध को आप अपनी खेल समझते थे और किसी राज्य या व्यक्ति के विद्रोह का संकेतमात्र पातेही आप उसे दबानेको चल पड़ते थे।

आप वीर योद्धा और उदार हृदय शासक थे, परन्तु राज्य वृद्धि के लिये कोई बात यदि नियम विरुद्ध भी हो जाय तो आपको बुरी न लगती थी। कांची नरेश विष्णुगोप के साथ युद्ध करते समय जब सेनापति को सफलता प्राप्ति न हुई तो आप स्वयं सेनापति के स्थान पर युद्ध में आ गये। पीछे से अवमुक्त राज्य पर आक्रमण करना शास्त्रों के विरुद्ध है, परन्तु अपने देश के कल्याण के लिये समुद्रगुप्त उसकी भी अनुमति दे देता है।

हिन्दू धर्म का अनुयायी होते हुये भी समुद्रगुप्त किसी धर्म या सम्प्रदाय का विरोध नहीं करता। बौद्ध महाश्रमण का आपके दरबार में जितना आदर हुआ वह आपका निष्पक्षता और कवि प्रियता का प्रमाण है। गया में बौद्ध मन्दिर स्थापित करने की अनुमति आपने बिना संकोच के दे दी। आप स्वयं सरल हृदय थे यही कारण है कि दूसरों को भी सरल हृदय समझते थे। महाश्रमण के षड्यन्त्र को आप बिलकुल न समझ सके और उसे शिव मन्दिर में जाता देख कर प्रसन्न ही हुये।

सम्राट् समुद्रगुप्त स्वयं वीर थे इसलिये वीरों का आदर करते थे, स्वयं कवि थे। इसलिये कवियों का सम्मान करते थे। कृष्णानदी के किनारे कञ्चन की निर्भीकता देख कर अपनी मोतियों की माला उसे दे दी, चाहे अपना हृदय भी उसी के साथ ही खो बैठे। युद्ध में युवराज अखिल को कुशलता से लड़ता देख कर आपके हृदय में उसके प्रति श्रद्धा उमड़ पड़ी, और तत्काल आपने उसे दक्षिण का राज्य सौंपने की इच्छा प्रकट की। वीर सत्कार के साथ ही आप राजनीति को भी भली भांति समझते थे। अखिल के आप को कहने पर कि 'मैं या तो प्राण दण्ड चाहता हूं या पिता की मृत्यु का प्रतिशोध' आपने उसी समय उसको न तो प्राणदण्ड ही दिया और न प्रतिशोध का अवसर। उचित समय आने पर जब आपने देखा कि अखिल के हृदय में जल रही प्रतिशोध की अग्नि अब ठण्डी होती जा रही है, आपने उसे प्रतिशोध का अवसर दिया।

आप भावुक प्रेमी थे और सच्चे प्रेमी प्रथम मिलन के अवसर पर कञ्चन की निर्भीकता पर मुग्ध होकर आपने अपनी मोतियों की माला उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे दी और नाटक के अन्त तक कञ्चन को न भूल कर अखिल के पास अपनी वही माला देखकर आप को कुछ निराशा हुई। परन्तु कञ्चन आपके हृदय से फिर भी न निकली। जब आपको पता चला कि कञ्चन ने अपनी रक्षा के लिये अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी है, तो आप हताश हो गये। सम्राट् समुद्रगुप्त भारत के गौरव थे।

विष्णुगोप—काञ्ची प्रदेश का राजा विष्णुगोप वीर और स्वाभिमानी शासक था। अपने देश की स्वतत्रता की रक्षा करना अपना जन्म सिद्ध कर्तव्य व अधिकार समझ कर यह किसी के अधीन नहीं रहना चाहता था। समुद्रगुप्त द्वारा विजित हो कर जब इसे समुद्रगुप्त के पास राज्य कर भेजना पड़ता था तो इसके हृदय को दुःख हुआ करता था। आपने अपने देश की स्वतन्त्रता के लिये ही दक्षिण भारत के सभी राजाओं को एकत्रित कर लिया और उनकी ओर से स्वयं समुद्रगुप्त के साथ जूझ पड़ा। युद्ध में सेनापति का काम प्रायः इसी के हाथ में रहा करता था।

विष्णुगोप बौद्ध का पुजारी था और उसके नियमों का पालन भी करता था। छल से किसी को पराजित करना या निहत्थे पर प्रहार करना उचित न समझ कर ही इसने अखिल से उलझे हुये समुद्रगुप्त पर बाण न चलाने को बुरा नहीं माना। भगवान् बुद्ध की प्रतिमा से आपको शांति का अनुभव होता था। धार्मिक नियमों का पालन करते हुये, स्वतन्त्रता के लिये युद्ध लड़ना बौद्ध धर्म में क्षम्य है।

विष्णुगोप स्वयं वीर था और दूसरों में वीरता का सञ्चार किया करता था। इसकी एक मात्र सन्तान कञ्चन थी, परन्तु स्वतन्त्रता के लिये उसे भी पीछे न रहने दिया और युद्ध में संचालन का एक बड़ा भाग उसके हाथों में सौंप दिया। एक नारी का युद्ध में जाना शायद उचित न समझा जाय, यही सोचकर कञ्चन को सैनिक वेश में ही युद्ध में भेजा और उसे कञ्चन से 'युवराज अखिल' बना दिया। विष्णु गोप स्वयं युद्ध में लड़ते लड़ते तीरों से शरीर के छलनी हो जाने पर वीर गति को प्राप्त हुआ। विष्णुगोप एक आदर्श राजा था।

महाश्रमण वसुबन्धु—बौद्ध धर्म पवित्र और आदर्श धर्म था। परन्तु भगवान बुद्ध की मृत्यु के बाद उसमें अनेक भयानक दुराचारों का समावेश हो गया था, इसका प्रमाण महाश्रमण वसुबन्धु के चरित्र से मिलता है। अपने आप को बुद्ध का पुजारी कहने वाला वसुबन्धु अपने हृदय की शान्ति को किसी रमणी में खो बैठा था, और उसी शान्ति की खोज में इधर-उधर भटकता फिर रहा था। पहले तो संसार से विरक्त होकर यह अजन्ता की गुफाओं में चला गया। परन्तु वहां भी इसे शान्ति न मिली। जब इसे पता चला, कि विष्णुगोप युद्ध में मारा गया है और कञ्चन समुद्रगुप्त के बन्दीगृह में हैं, और जिस समय भिक्षुणी ने आकर धर्मसंघ में जाकर रहने का संकेत किया तो यह धर्म की आड़ में अपनी स्वार्थ सिद्धि करने के लिये समुद्रगुप्त के पास आ गया। और कवि होने के नाते समुद्रगुप्त के दरबार का "रत्न" चुन लिया गया।

इसे पता चला, कि युवराज अखिल, सम्राट् समुद्रगुप्त से अपने पिता से मृत्यु का बदला लेने की सोच रहा है। स्वार्थ से अन्धा होकर और कञ्चन पर अपना अधिकार जमाने के उद्देश्य से इसने कञ्चन को इस बात में सहायता देनी चाही। यद्यपि कञ्चन (उस समय युवराज अखिल) ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे स्वीकार नहीं किया, फिर भी विजयोत्सव के मण्डप में इसने अहिंसा के नियमों का पूरा उल्लंघन करते हुए समुद्रगुप्त पर धोके से प्रहार किया। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए यह शिव के मन्दिरों में भी जाने लगा था, जो कि बौद्ध-धर्म के प्रतिकूल है।

वसुबन्धु धूर्त, लम्पट, कपटी, स्वार्थी और बौद्ध धर्म के नाम को कलंकित करने वाला श्रमण (बौद्ध-सन्यासी) था।

कञ्चन—"समुद्रगुप्त" नाटक की नायिका कञ्चन काञ्ची-नरेश विष्णुगोप की एक मात्र सन्तान है। अपने पिता के ही समान कञ्चन भी निर्भीक, वीर, आत्माभिमानिनी और स्वतन्त्रता की दीवानी थी। पिता के संकेतमात्र करते ही यह युद्ध के लिए तैयार हो गई, यद्यपि जानती थी, कि समुद्रगुप्त की सेनाओं से युद्ध करना है, जिसने उसे क्षमा कर दिया था और निर्भीकता के पुरस्कार में अपने गले से उतार कर मोतियों की माला दी थी। देश के लिए प्राणों का खेल खेल जाना तो इसके लिए मामूली सी बात थी।

पिता के समान ही युद्ध में कञ्चन ने कोई भी बात नियम विरुद्ध नहीं की। समुद्रगुप्त की तलवार वृक्ष से उलझ गई थी, उस समय समुद्रगुप्त का अन्त करके कञ्चन विजय प्राप्त कर सकती थी, परन्तु इसे नियम-विरुद्ध समझ कर उसके हाथ रुक गए। सम्राट् की उदारता का परिचय उसे प्रथम मिलन में ही मिल गया था, इसलिए उसके हृदय में सम्राट् के प्रति श्रद्धा थी।

वह देश भक्त होने के साथ २ कुशल कवयित्री भी थी और यदा कदा वीरता से भरे हुए गाने गाती रहती थी। समुद्रगुप्त के बन्दी-गृह में जब उसे शान्ति नहीं मिलती थी, वह गीतों में ही अपना मन बहलाया करती थी। कञ्चन एक आदर्श वीर रमणी थी।

कञ्चन का आत्म संयम उसके चरित्र का सब से बड़ा गुण है। युवराज अखिल के रूप में वह समुद्रगुप्त के सन्मुख आई। एक साधारण रमणी ऐसे समय में अपने प्रियतम से अपना रूप छिपाने में असमर्थ हो जाती, परन्तु कञ्चन का हृदय उसके अधिकार में था। निर्भीकता के साथ उसने सम्राट् को कह दिया, "मैं या तो प्राणदण्ड चाहता हूं या पिता की मृत्यु का प्रति शोध !" उसकी वाणी में उस समय इतनी दृढ़ता थी, कि कोई उसके नारी होने का सन्देह नहीं कर सकता था।

कञ्चन के भेद को केवल वसुबन्धु जानता था परन्तु कञ्चन ने उसे भी कह दिया, कि यह भेद सम्राट् के सामने खुलना नहीं चाहिए। शनैः २ उसके हृदय से प्रतिशोध की भावना भी कम होती गई और सम्राट् से इस बात का अवसर मिलने पर उसने अपने आपको प्रतिशोध लेने में असमर्थ पाया। वास्तव में माला को भूमि पर गिरा देख कर सम्राट् के इस विषय में पूछने पर कञ्चन ने कह दिया था, कि किसी युवती ने उसे वह माला दी थी। इस पर सम्राट् के भावों को देख कर उसे विश्वास हो गया था, कि समुद्रगुप्त उससे प्रेम करते हैं और तब उसने वह अपना रूप प्रकट कर देना ही उचित समझा।

उसी समय वसुबन्धु की धूर्तता का उसे पता चला और उसने सम्राट् को बचाने के लिये कटार का प्रहार अपने वक्षस्थल पर लेकर सम्राट् की प्राण रक्षा की। वह उसके शुद्ध और पवित्र हृदय का प्रमाण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी देश की एकता का मुख्य साधन

प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू की घोषणा

नई दिल्ली, २८ अगस्त–संसदीय हिन्दी परिषद् के शानदार प्रथम वार्षिकोत्सव समारोह के अवसर पर भाषण करते हुए नेहरू जी ने हिन्दी भाषा भाषियों को सलाह दी कि वे अहिन्दी भाषा भाषियों के बीच हिन्दी प्रचार करने में बहुत सतर्कता से काम लें, किसी प्रकार का दबाव न डालें और विज्ञान अर्थशास्त्र, चिकित्सा, इंजिनिरिंग तथा विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखें न कि कविता करते रहें।

इस अवसर पर मन्त्रिगण, संसद के सदस्य, तामिल के विद्वान तथा कितने ही अन्य व्यक्ति उपस्थित थे। संसद् भवन के केन्द्रिय हाल में सायंकाल यह समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह में न केवल संसद के हिन्दी सदस्य किन्तु अन्य भाषाएं बोलने वाले सदस्य भी अच्छी संख्या में उपस्थित थे।

समारोह बहुत सफल रहा। इसकी विशेषता यह थी कि देश की अन्य भाषाएं बोलने वाले व्यक्ति प्रभावित होकर लौटे कि हिन्दी भाषा-भाषी हिन्दी सिखाने के लिए किसी तरह का दबाव नहीं डालना चाहते और वे प्रादेशिक भाषाओं की उन्नति में किसी तरह की बाधा नहीं डालना चाहते।

मंच पर नेहरू जी, हिन्दी परिषद के अध्यक्ष सेठ गोविन्द दास और शिक्षा मन्त्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद थे। नेहरू जी इस वातावरण से बहुत प्रसन्न दिखाई पड़ रहे थे।

सभापति के पद से भाषण करते हुए नेहरू जी ने कहा कि इस समारोह से पहले इसी स्थान पर एक दूसरी सभा हुई थी जिसमें कोरिया जाने वाले भारतीय सैनिकों के सम्बन्ध में बात चीत हुई। मैंने कोरिया जाने वाले भारतीय सैनिकों –थोरट से पूछा कि क्या आप सब लोग हिन्दी जानते हैं। तब उन लोगों ने बताया कि कोरिया में हम लोगों ने आपस में हिन्दी में ही बात चीत करने का फैसला कर लिया है। यह ठीक भी है। गैर मुल्कों में जाकर हम अंग्रेजी जबान में बोलें, उचित नहीं मालूम होता है, वहां के लोगों को ताज्जुब होता है। जब कभी मुझे युरोप जाने का मौका हुआ और वहां हिन्दुस्तानी विद्यार्थीयों से मिला तब उनसे पहले मैंने हिन्दी में बातें की चाहे वे हिन्दी समझते थे या नहीं समझते थे (तालियां) क्या हमारी अपनी जबान नहीं है कि हम विदेशों में भी आपस में अंग्रेजी में बोलें।

भाषा का सवाल नाज़ुक है।

उन्होंने कहा कि मुल्क में बहुत सारे सवाल हैं लेकिन बुनियादी सवाल है हिन्दुस्तान के अलग २ हिस्सों को मिलाना। यह ससद् इसीकी एक निशानी है। लेकिन असली काम सभी हिस्सों में मानसिक एकता पैदा करना है, यह मुश्किल काम है। कभी प्रांतीयता, कभी सम्प्रदायिकता और कभी जातीयता का सवाल इसमें रुकावट पैदा करता है। इससे देश की ताकत कम होती है और उन्नति रुक जाती है। जाहिर है हमें बहुत सी बातें करनी हैं। भाषा का सवाल खास है। यह मिलाने की चीज है और लड़ाने की भी। भाषा के सवाल पर एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशों में लड़ाई हो गई है भाषा का सवाल नाजुक होता है। अगर थोड़ी भी लापरवाही दिखायी तो एकता के बजाय झगड़ा पैदा कर सकता है। अभी सेठ गोबिन्ददास और श्री रघुवीर ने कहा कि देश की सभी भाषाएं अपनी ही हैं; उनकी भी तरक्की करना अपना फर्ज है यह सुन कर मुझे खुशी हुई। मैं चाहता हूं कि हिन्दी किसी पर लादी न जाय हिन्दुस्तानी लेखकों की किताबें पढ़ कर बी० एस० सी० की परीक्षा नहीं पास कर सकते। वह तभी हो सकता है जब हम काफी किताबें लिखें और विज्ञान की भी किताबें लिखें।

क्यों पिछड़े हैं ?

नेहरू ने ने कहा कि हम एक जमाने में बहुत बढ़े चढ़े थे। हमें बड़ा गरूर था लेकिन किताबें नहीं छापीं। यूरोप में सैकड़ों वर्षों से किताबें छप रहीं हैं लेकिन हमारे देश में तब तक किताबें नहीं छपीं जब तक अंग्रेज नहीं आये। पहली किताब यहां अकबर के जमाने में पुर्तगाली पादरियों के जरिये आयी। लेकिन उसे देखने के बाद भी कितने ही वर्षों तक हमारे देश में किताबें छापने कोशिश नहीं की गई। घड़ी को ही लीलिये यहां लाखों घड़ियां विदेशों से आती हैं। लेकिन बनाता कोई नहीं है, वह कोई मुश्किल नहीं है, बनाते ही नहीं हैं। अंग्रेजों के जमाने में देशी रियासतों में बड़ी धूम धाम रहती थी। अंग्रेज गये कि वे गिर गये क्योंकि उनकी जड़ें नहीं थीं।

कई देशों में ३–३ राष्ट्रीय भाषायें

उन्होंने कहा कि हिन्दी की तरक्की विरोधियों से लड़ कर नहीं कर सकते उन्हें समझाना हमारा फर्ज है। आखिर हिन्दी तो राष्ट्रभाषा बन ही गई, बहस की बात तो रही नहीं। भाषा का सवाल दुनियां में सबसे कठिन सवाल है। इसी लिये कई देशों में कई राष्ट्रीय भाषाएँ हैं। स्विट्जरलैंड और हालैंड में ३-३ राष्ट्रीय भाषाएँ और चौथी भाषा अंग्रेजी अनिवार्य नहीं है फिर भी सीखनी पड़ती है। वहां शोर गुल नहीं मचता कि इतनी भाषाएँ क्यों पढ़ें युगोस्लाविया को लीजिये। वह देश हमारे एक राज्य के बराबर है। उसके अन्दर ६ गणराज्य है, ४ राष्ट्रीय भाषाएँ हैं, ३ मजहब हैं और दो लिपियां है। यह सब सरकारी तौर से स्वीकार हैं।

हिन्दुस्तान बड़ा देश है। अंग्रेज कहते थे कि हिन्दुस्तान में ४७० भाषाएँ हैं, वे दुनियां को बनाते थे कि वे जन गणना में लिखा है। एक अंग्रेज ने एक हिन्दुस्तानी के सामने यही बात कही तो उसने पूछा कि जर्मनी में कितनी भाषाएँ हैं। हिन्दुस्तानी ने उन्हें बताया कि जर्मनी की जन गणना में लिखा है कि वहां ६० भाषाएँ हैं। छोटी छोटी सभी भाषाएँ लिख दी जाती हैं। मेरा खयाल है कि बर्मा और हिन्दुस्तान की सीमा पर ही ३०० भाषाएँ हैं, कबाइलियों की भाषाएँ हैं तो ४७० में से ३०० तो वही निकल गई। मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि देश में कितनी भाषाएँ हैं—हल्के २ सब भाषाएँ मिल जायंगी। मैं यह भी नहीं चाहता कि देश की छोटी छोटी भाषाएँ दबा दी जांय। जरूरत इस बात की है कि लोगों के दिलों में हिन्दी को अपनाने का विचार पैदा कीजिये न कि उनकी भाषा को ढकेलने की। छोटी छोटी सभी भाषाओं की रक्षा कीजिये बाद में कुछ भी हो सब लोग हल्के २ हिन्दी जान लेंगे। बर्मा के पास के कुछ लोग मेरे पास आये और कहने लगे कि हवारी भाषा खासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। रोमन लिपि में हमें पढ़ाई जाती है। उन लोगों ने कहा कि हम आसामी और हिन्दी भी सीखना चाहते हैं, ४ भाषाएँ तीन लिपियों में सीखना चाहते हैं अच्छा होता कि आसामी भाषा हिंदी में पढ़ते। मैंने यही कहा कि तुम लोग ऐसा करो। नहीं तो झगड़ा हो जाता। सो इस तरह से हमें करना चाहिये। भाषा नाजुक चीज है कानून से या शोर गुल से उसका नही प्रचार होता। पौधे को खींचा तानी कर नहीं बढ़ा सकते। मिल्टन ने लिखा है कि मुझे किसी देश की भाषा सिखा दो और उस देश के किसी भी व्यक्ति से न मिलने दो, भाषा को देख कर मैं बता दूँगा कि उस देश के लोग कितने तगड़े हैं, किस दिशा में आगे बढ़े हैं या बुजदिल हैं। कहने का मतलब यह है कि किसी देश की भाषा को पढ़ कर उस देश के लोगों के बारे में राय बनाई जा सकती है बात सही है अंग्रेजी भाषा बढ़ी तो अंग्रेज भी जोरों से बढ़े। संस्कृत को ही लीजिये उसका एक एक शब्द ताकत से भरा है। इसके बाद के जमाने की किताबों में कोई जान नहीं रही, उसमें शोभा बढ़ाने की लचक है, उसमें ए है हो है लेकिन जान नहीं है। तो मेरा कहने का मतलब यह है कि अगर हिन्दी को बढ़ाना है तो हमें जरूर बढ़ाना है तो हमें उसकी जड़ मजबूत करनी चाहिये उसकी अन्दरूनी ताकत को बढ़ाइये

आचार्य कृपलानी का भाषण

इसके पश्चात् आचार्य कृपलानी ने हिन्दी में भाषण करते हुये कहा कि मैं समझता हूँ कि हिन्दी ही हमारे देश की राष्ट्रभाषा हो सकती है। उसके बगैर काम नहीं चल सकता। लेकिन आज भी ऐसे कितने ही लोग हैं जो हिन्दी नहीं सीखते। अभी भी कितने ही लोग समझते हैं कि अंग्रेजी भाषा इस देश में रह जायगी। बहुत से प्रोफेसर व उपकुलपति समझते हैं कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम नहीं चलेगा। अंग्रेजी के बिना जापान का काम चल सकता है, चीन का काम चल सकता है लेकिन भारत का काम नहीं चलेगा। वे समझते हैं कि अंग्रेजी के बिना दुनियां की तरक्की नहीं हो सकती। वे समझते हैं कि अगर हिन्दी चल पड़ी तो प्रान्तीय भाषाएँ खत्म हो जायेंगी और हमारे बीच में अन्तर बढ़ जायगा। जो समझते हैं कि अंग्रेजी के बगैर देश का उद्धार नहीं हो सकता, उनसे मैं कहूंगा कि अंग्रेजों को वापस ले आओ क्योंकि अंग्रेज नहीं आयेंगे तो अंग्रेजी कैसे रहेगी।

उन्होंने कहा कि सब से पहले हमारे स्कूलों व कालेजों में अंग्रेज अध्यापक अंग्रेजी पड़ाते थे, फिर विलायत के पढ़े हिन्दुस्तानी अध्यापक आये और उसके बाद यहीं के पढ़े हिन्दुस्तानी अध्यापक हुए। अब के अंग्रेजी पढ़ाने वाले हिन्दुस्तानी अध्यापकों का नमूना बताते हुए कहा कि एक लड़की एम० ए० पास अध्यापक से अंग्रेजी पढ़ने केलिये गई तो उस अध्यापक ने कहा 'आई एम नाट एम्पटी नाऊ, कम बिहान्ड।' 'मैं अभी खाली नहीं हूँ पीछे आओ' पार्लमेंन्ट में भी ऐसी अंग्रेजी बोलने वाले आते हैं। अभी तक तो बाबू अंग्रेजी बोली जाती थी अब न मालूम कौन सी अंग्रेजी बोली जाएगी।

उन्होंने नहरूजी से अनुरोध किया कि जैसे संयुक्तराष्ट्रीय संघ की बैठक में होता है पार्लमेंट में भी वैसे ही हो-सदस्य प्रांतीय भाषाएं बोलें और उसका साथ ही साथ अनुवाद होता जाय।

कृपलानी जी ने कहा कि नेहरूजी कहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि बाहर जाकर अंग्रेजी में बोलने में शर्म आती है तो उससे ज्यादा शर्म तो यहां बोलने में आनी चहिए। इतनी हिन्दी कम से कम सबको आनी चाहिए जितना मैं बोल सकता हूं अंग्रेजी सीखने में सालों लग जाते हैं लेकिन हिन्दी तो ६ महीने या साल भर में सीखी जा सकती है।

महत्वपूर्ण सुझाव

उन्होंने सुझाव रखा है कि हिन्दी प्रचार का सरल और उपयोगी तरीका यह है कि प्रांतीय भाषाओं के व्याकरण में ३-४ सफे हिन्दी के छाप दिये जांय। दूसरा सुझाव उन्हों ने यह दिया कि अगर हमारी लिपि एक हो जाय तो अच्छा हो। उन्होंने प्रधान मन्त्री से अपील की कि वे इन पर विचार करें। उन्होंने कहा कि समूचे देश के लिए नागरी लिपि स्वीकार की जा सकती है, थोड़ा बहुत बदला जा सकता है। अगर ऐसा हो जाय तो हमें कोई तकलीफ नही होगी।

उन्हों ने कहा कि अंग्रेजी के समर्थक कहते हैं कि यदि अंग्रेजी नहीं पढ़ाई जाएगी तो अन्तर्राष्ट्रीय बातों में हम कैसे हिस्सा ले सकेंगे जैसे कि समूचे देश के लोग अन्तर्राष्ट्रीय बातों में हिस्से लेने जाएंगे। हमारे प्रधान मन्त्री अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भाग लेते हैं वही काफी है।

उन्होंने कहा कि हिन्दी के बगैर हमारा काम चल नहीं सकता। उन्होंने कहा कि केरल, कर्नाटक से पहले से ही साधू हरिद्वार आते रहे हैं और वे हिन्दी में काम चला सकते हैं तो दूसरे भी क्यों नहीं चला सकते

उन्होंने अन्त में कहा कि भाषाई राज्यों में सीमा वर्ती क्षेत्र के लोगों को दो भाषाएं सीखना आवश्यक होगा। इसके सिवा हिन्दी भी सीखनी होगी। २-३ भाषाएं सीखने से दिमाग का विकास होता है।

श्री चैटर्जी का भाषण

श्री एन० सी० चटर्जी ने कहा कि बंगाल को बंगाली भाषा पर बहुत गर्व है लेकिन फिर भी राजाराम मोहन राय रवीन्द्रनाथ आदि ने कहा है भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी ही हो सकती है। मेरी प्रार्थना है कि देश के सभी लोग हिन्दी सीखें और हिन्दी वालों से मेरी प्रार्थना है कि वे हिन्दी को थोड़ा सरल बनाएं जिससे दक्षिण भारत वाले भी सीख सकें।

अन्त में उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि भारत में एकता हो और अखण्ड रहे। अगर हिन्दी राष्ट्र भाषा नहीं हुई तो भारत में एकता नहीं रह सकती अखण्ड नहीं रह सकता।

श्री ए० के० गोपालन ने भी हिन्दी की सफलता की शुभकामना भेजी थी।

अन्त में तामिल के विद्वानों का सम्मान किया गया और एक तमिल विद्वान ने भाषण करते हुए कहा कि राष्ट्रभाषा के समारोह ने स्वागत कर हमारा प्रेम बढ़ाया है। राष्ट्रभाषा का समारोह प्रादेशिक भाषाओं का भी समारोह है।

सेठ गोविन्द दास का भाषण

प्रारम्भ में हिन्दी परिषद् के सभापति सेठ गोबिन्ददास ने भाषण करते हुए परिषद् की गत १४ मास की प्रगति पर प्रकाश डाला और कहा कि "देव नागरी" पत्रिका निकालकर सभी प्रादेशिक भाषाओं को प्रोत्साहन दिया गया है। उन्होंने बताया कि इस परिषद् का उद्देश्य न केवल हिन्दी की उन्नति करना है बल्कि सभी प्रादेशिक भाषाओं की उन्नति करना है।

उन्होंने बताया कि परिषद् ने संसद के अहिन्दी भाषा भाषियों को हिन्दी सिखाने के लिये ४ कक्षाएं खोली हैं और एक कक्षा तामिल सिखाने के लिये खोली है।

उन्होंने बताया कि प्रादेशिक भाषाओं का दबाना हमारा उद्देश्य नहीं है बल्कि तरक्की करना है। हम चाहते हैं कि हिन्दी अंग्रेजी का स्थान ग्रहण कर लें। उन्होंने बताया कि दुनिया के किसी देश में विदेशी भाषा को नहीं अपनाया जाता।

संस्था के मन्त्री श्री रघुवीर ने संस्था की प्रगति तथा आय-व्यय का विवरण दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान हिन्दी काव्य के प्रगतिवाद अथवा यथार्थवाद की एक झलक—

पागल का गीत

[कवि श्री रामभरोसे पाठक]

पागल पन्थी चलता जाता।
टूटे अरमान लिये दिल में, मन मारे युग युग से चलता;
दिल की धड़कन में सुधि—सुख ले, प्राणों से सोया मधु बहता;
मीठा अतीत आंखों में आ, खारे मोती बिखरा देता;
नश्वर जीवन का दुर्बल पथ नीरस सुख स्वाद बसा लेता।

उभरी सी सुधि से स्नात तरल, ले बोझा आगे पथ डगरैं;
कल्पित आशा कङ्काल लिये, मानस में कटु आघात सहे;
नचतीं रहतीं बीती बातें, मादक ज्वाला जलती रहती;
छट—पट प्राणों में लिये प्यास, श्वासों में पगली सुधि बहती;

उन आंखों में वर्षा घिरती, मधु स्वप्न अजाने खो जाते,
प्रियतम की स्मित में स्मृति घुलकर, पुलकन से शान्ति लुटा आते;
स्मृति की मधुर पिटारी ले, एकाकी मैं खोला करता;
टीसों गूँजों सन्देशों से कानों में नित झरना झरता;

मीठे सपने फिर घिर घिर के, जी में स्पन्दन भर देते;
अन्तस् में एँटन ले सुधि की, पगले समझौते चल उठते;
मुकरे अतीत कानों में आ, गुन गुन गुन कर कुछ कह जाते;
रिसते अन्तर के घाव हरे, पीड़ाएँ दुःख बर्षा लाते;

साहस करता बढ़ चलने का, क्षण में असफल हो गिर जाता.
जलते स्नेहिल लघु दृग दीपक, इन हारों का स्वागत करता;
चलते जाना उस देश जहां पर, जन्म मृत्यु की क्षितिज बनी;
सुख दिन खो के जी भर रोले, यह पीड़ा भी प्यारी कितनी।

क्षण भर को भी थिर रहना कब, जग को चाहे विश्वास न हो,
हँसते नभ का उर मसल मसल, बढ़ चलना कभी निराश न हो।
यह दुःख भी तो आबाद रहे यह पागलपन बरबाद न हो;
मस्ती से बढ़ते जाना है, अरमानों का अवसान न हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी सी बहन ! राखी बांध दो !

[ले० – श्री जयदेव अग्रवाल अम्बाला छावनी]

आज सुबह से ही प्रत्येक घर में हल-चल मची हुई है। बच्चे, युवा वृद्ध क्या सभी प्रसन्न हैं। बच्चे फूले नहीं समाते। नये नये वस्त्र धारण कर रहे हैं। सूर्य देव अपनी अरुण रश्मियों से अठखेलियाँ कर रहे हैं। घरों से सुगन्धित पदार्थों के बनने की गन्ध आ रही है। बाजारों में चहल पहल है। बच्चे पैसे लिये बाजार की ओर भागे जा रहे हैं। बहिनें प्रसन्नचित्त अपने भाइयों की बाट जोह रही हैं।

ललना भी आज बहुत प्रसन्न है क्योंकि उस का भैया भी परदेस से आयेगा। वह अपनी मां का केवल एक मात्र सहारा है। उसकी मां लोगों की मेहनत मजदूरी करके अपना तथा अपनी बच्ची का पेट भरती है। एक बार मां ने ललना को दो पैसे दिये थे उसने यह पैसे आज के लिये रख छोड़े थे। ललना जब दो साल की थी तब उसके भैया रघु का देहांत हो गया था। जब कभी उसकी याद आती तो मां एकांत में बैठ दो आंसू बहा लिया करती जब-जब ललना मां से पूछती भैया कहां गये वह यही कहती परदेस गया है, तेरे लिये बहुत से खिलौने लायेगा। आज ललना दस वर्ष की हो चुकी थी और इस दिन की प्रतीक्षा में थी। दो पैसे लिये वह खुशी २ बाजार से राखी लेने दौड़ी। वहां हर प्रकार की सुन्दर तथा कीमती राखियां थी। यह देख वह फूली न समाई, उसके मन में आया वह भैया के लिये अच्छी तथा कीमती राखी ले। परन्तु जब उसने अपने हाथ में दो ही पैसे देखे तो उसकी खुशी जाती रही। सोचती थी, झपटा मार लूं, पर बिचारी बेबस थी। उसने साधारण सी राखी ली और घर की ओर चली। रास्ते में उसे उसकी सहेलियां मिल गईं बोलीं–किस के लिये ये राखी लिये जाती हो। ललना बोली–मेरे रघु भैया आयेंगे। सब खिल-खिला कर हंसीं। एक बोली दूसरी दुनियाँ से थोड़े वापिस आ जायेगा। दूसरी बोली–नहीं आयेगा, तो यही चली जायेगी। यह सुन सब बड़े ज़ोर की हंसी। ललना बेहताश हो कर भागी २ घर आई। बोली–मां सच २ बताओ भैया कहां गये हैं। मां ने कहा ! बेटा ! परदेस गया है कितनी बार तो कह चुकी हूँ। मां मेरी सहेलियां कहती हैं दूसरी दुनियां में गये हैं। यह सुन मां के नेत्रों में आँसू झलक आये। मां ! मैं भी भैया के पास जाऊंगी। ऐसा न कहो मेरी बच्ची ! मां मैं भैया को राखी बांधूंगी वह मुझे अच्छे २ खिलोने देंगे न ! मां की आंखों में आंसुओं की बाढ़ आ गई। उसने ललना को अपनी छाती से लगा लिया और सोचने लगी कैसे समझाऊं क्या बताऊं। मां तुम रो क्यों रही हो ! बोलती क्यों नहीं, बताओ न मां। जब ललना ने बहुत हठ किया तो मां विवश हो कर बोली–बेटा जब तू दो वर्ष की थी तब तेरा भैया इस दुनियां को छोड़ कर दूसरी दुनियां में चला गया। ललना (प्रश्न की दृष्टि से) अब कभी नहीं आयेंगे। मां–नहीं, मेरी बच्ची कभी नहीं। ललना का कमल सा मुख मुरझा गया। वह चौखट पर बैठ कर भैया की याद में आंसू-मोती गिराने लगी।

❋ ❋ ❋ ❋

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानन्द नगर के प्रतिष्ठित, धर्मात्मा तथा धनी पुरुष थे। उनकी आयु ३० से अधिक न थी। उसकी पत्नी का देहांत हो चुका था। वह उसके वियोग से कुछ पागल हो गया था। सारे दिन गाता फिरता रहता। लोग उसे पागल सदानन्द कहा करते थे। अचानक वह गाता हुआ इधर आ निकला। ललना को इस प्रकार आँसू बहाता देख बोला! आज तो त्यौहार का दिन है, तू रो रही है? ललना की मां बोली! सदानन्द तू सब कुछ जानता है आज राखी है। मैंने इसे बहकाए रखा कि तेरा रघु भैया परदेश गया है। तेरे लिये बहुत से खिलौने लायेगा। परन्तु आज रघु होता तो·········यह कहते २ उसका गला रुंध गया। आँखों से नीर की धारा बह चली। सदानन्द समझ गया, उसकी आंखों से भी दो मोती लुढ़क पड़े। बोला! ललना मैं हूं तेरा भैया लो बांध दो राखी, मेरी अच्छी छोटी सी बहिन बाँध लो। ललना का मुख गुलाब की तरह खिल उठा, आज वह कितनी प्रसन्न है जैसे:—उसे स्वर्ग का राज्य मिल गया हो। जाते जाते, जो कुछ जेब में था, उसे देता गया।

गीत

ओ! मेरे भावों के बादल,
जगती की नीरस धरती पर,
रस की सुखमय वर्षा कर दे,
उमड़ घुमड़ तू जगती नभ में,
द्युति भर दे तू कण निश्रम में,
घोर तिमिर मय जगती पथ में,
अपने उर की ज्योति जला कर,
मञ्जिल की तू झलक दिखा दे॥

ओ! मेरे गीतों के अम्बर
जन जीवन की शुष्क धरा पर,
स्वर्गिक मधुवन लाकर धर दे,
पुष्प नये विकसे मधुवन में,
भाव नये हुलसें जन मन में,
लहरें प्रीति लहर जीवन में
नव भावों की वर्षा करके,
मानवता को मधुर बना दे॥

—सुन्दरलाल रवनक गली मण्डी, हिमाचल प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समालोचना

पागल के गीत—प्रकाशक साहित्य मण्डल सेवढ़ा दतिया विन्ध्यप्रदेश कीमत ।।=) । कवि लेखक राम भरोसे पाठक । भूमिका लेखक श्री अम्बाप्रसाद श्री वास्तव । अश्लील ग्रामीण शृंगारी भावनाओं से पृथक् रह कर, प्रेम की कहानी कविता और गद्य में किस प्रकार लिखी जा सकती है इसका अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत पुस्तिका में हैं। श्री रामभरोसे पाठक ने यह गीत अपनी स्वर्गीय रजनी के वियोग में गाये हैं। उनके नशीले मतवाले धुएँ ने श्री अम्बाप्रसाद जी श्री वास्तव के हृदय में जिस सरसगुण ग्राहकता तथा रसानुभूति को पैदा किया है, वह पढ़ने लायक है। उदाहरणार्थ उन्होंने भूमिका अवतरणिका में लिखा है "कि प्राचीन साहित्य में नायिका प्रेयसियां नायक की प्रतीक्षा में गीत गाती थीं। तड़पती थीं परन्तु वर्तमान युग में पुरुष हृदयप्रेयसियों तथा नायिकाओं के लिये तड़पता है।" पागल के गीत की एक कविता इसी अंक में उदाहरणार्थ प्रकाशित की जा रही है। भूमिका तथा कविता की भाषा सरल स्वाभाविक और मुहावरेदार है सहसा हृदय पर चोट करती है। अनुभूति प्रधान कविता का आस्वाद इसमें स्थान २ पर मिलता है।

तपोवन—वैदिक साधना आश्रम देहरादून की सचित्र मासिक पत्रिका। मुख पृष्ठ तिरंगा। आत्म सम्मान-सामर्थ-विश्वास—आत्मज्ञान और आत्म संकल्प की भावना को जगाने वाला। वैदिक अध्यात्मवाद के प्रेमियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। वार्षिक मूल्य ५) । संचालक सम्पादक मण्डल श्री बाबा गुरु गुरमुख सिंह। स्वामी सत्यव्रत वैखानस, पं० दौलतराम शास्त्री, श्री बृजलाल जी बी. ए. एल. एल. बी., श्री के. सी. खन्ना। हम पत्रिका का स्वागत अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि तपोवन राष्ट्र के नैतिकस्तर को उन्नत करने में प्रशंसनीय भाग लेगा।

विन्ध्य शिक्षा—शिक्षा विभाग विन्ध्यप्रदेश रीवा। सम्पादक श्री अम्बाप्रसाद श्री वास्तव एम. ए.। वार्षिक मूल्य साढ़े चार रुपया। हमारे सामनें मार्च १९५३ का अंक उपस्थित है। विन्ध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है। प्रान्त भर के शिक्षणालयों के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का मार्गप्रदर्शन करने के लिये इसमें सर्वांगीण सामग्री का आम संग्रह किया गया है। लेखकों से निवेदन किया गया है कि वह विन्ध्य शिक्षा में प्रेम कहानियां व प्रेम गीत न भेज कर मनोविज्ञान अर्थ शिक्षा प्रबन्ध विषयों पर ही लेख भेजें। प्रस्तुत अंक में 'विन्ध्य प्रदेश का इतिहास' मेरे गणित सम्बन्धी अनुभव, अमरीका की माध्यमिक शिक्षा लेख पठनीय हैं। कविताएँ भी आदर्शवाद की प्रेरिका हैं। हम पत्र का स्वागत अभिनन्दन करते हैं। शिक्षणालयों को अवश्य अपनाना चाहिये।

पंजाब स्पोर्टस्—(इंगलिश में) संचालक सम्पादक श्री चमनलाल सोंधी। एन. सी. कोट किशनचन्द जालन्धर शहर, वार्षिक मूल्य ५) । श्री चमनलाल सोंधी स्वयं खिलाड़ी हैं। जीवन में क्रियाशीलता, आशावाद और स्फूर्ति पैदा करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये खेलों के सामुख्य अत्यन्त उपयोगी हैं। इस मासिक पत्र में देश तथा विदेशों के राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय खेलों (हाकी, फुटवाल आदि आधुनिक खेलों) के साम्मुख्यों पैचिस का सचित्र वर्णन रहता है। शिक्षणालयों तथा खिलाड़ियों के लिये पत्र उप-है। हमारे सामने इसके तीन अंक। हैं तीनों आकर्षक और क्रीड़ा सम्बन्धी जानकारी देने वाले हैं। अगस्त मास के अंक में 'जगदेश एण्ड गीतावाल एण्ड केदारशर्मा गुनाह की फिल्मीशृगारी तस्वोर भी दी गई है। हमारी सम्मति में खेलों के असली चित्रों के होते हुथे फिल्मी तसवीरों की आवश्यकता नहीं। विशेषतः ऐसे मासिक पत्रों में जो विद्यार्थियों के हाथों में जाना हो। आशा है पत्रिकाके संचालक फिल्मी विज्ञापनों तथा स्त्रीप्रधान तस्वारों का बहिष्कार करेंगे। नकली से असली अधिक आकपक होना है के अनुसार असली खिलड़ियों के आकर्षक वीर भावोत्तेजक चित्र ही प्रकाशित किया करेंगे।

कोर्ट फ़ीस एक्ट का हिन्दी अनुवाद—हिन्दी के राष्ट्र भाषा बनने के बाद इस बात की आवश्यकता है कि कचहरियों तथा सरकारी कारोबार के लिए सब कानूनों का हिन्दी में अनुवाद किया जाय श्री गिरधारी लाल जी सग्गर सोढ़न रोड जालंधर ने कोर्ट फ़ीस एक्ट का हिन्दी में अनुवाद किया है। अनुवाद बोल चाल की सरल भाषा में किया गया है। इस विषय के साथ सम्बन्ध रखने वाले वकीलों तथा कार्यकर्ताओं ने इसकी प्रशंसा की है। भूकिका पंजाब के नैशिचल कमिश्नर ने लिखी है हिन्दी प्रेमियों को इसका अधिक से अधिक प्रचार करना चाहिये जिससे हिन्दी भाषा यथार्थ में राष्ट्र भाषा बन सके।

आवश्यक सूचना

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्य कारिणी की बैठक रविवार १३-९-५३ दुपहर दो बजे सम्मेलन कार्यालय आर्य प्रैस निकलसन रोड में होगा। निम्नलिखित विषयों पर विचार होगा अवश्य दर्शन दें।

१. पंजाब हिन्दी सम्मेलन के अमृतसर वार्षिक अधिवेशन का कार्य क्रम।
२. इस वार्षिक अधिवेशन के लिये सभापति पद के लिये प्रस्तावित नामावली का निश्चय।
३. पण्डित बनवारीलाल जी प्रचार मन्त्री की रिपोर्ट तथा सम्मेलन के आय-व्यय का ब्योरा।
४. सच्चर फार्मूला के विरोध में आन्दोलन।
५. शोक प्रस्ताव।

इसी समय हिन्दी प्रचारिणी सभा अम्बाला छावनी का भी अधिवेशन होगा। अतः आप उसके सदस्य होने के नाते भी अवश्य पधारें। अम्बाला जनपद हिन्दी सम्मेलन की योजना।

भवदीयः—

स्वतंत्रानन्द	**भीमसेन**
प्रधान हिन्दी सम्मेलन	प्रधान मन्त्री

आर्य का स्वाध्याय अंक—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख्य पत्र 'साप्ताहिक आर्य का स्वाध्याय विशेषांक' रक्षाबन्धन और कृष्ण जन्माष्टमी के सप्ताह में प्रकाशित किया हुआ है। विशेषांक सचित्र तथा खोजपूर्ण विद्वत्तापूर्ण लेखों से सुशोभित है। आजकल हमारे देश में भारतीय संस्कृति के पुनरुज्जीवन की भाषणों तथा लेखों में बहुत चर्चा रहती है। परन्तु इसके पुनरुज्जीवन के लिये आवश्यक साहित्य निर्माण की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। आर्य के विशेषांक द्वारा इस कमी को पूरा किया है। विशेषांक की कीमत ।–) नाम मात्र है। वार्षिक मूल्य ६) पता—आर्य कार्यालय निकलसनरोड अम्बाला छावनी।

—भीमसेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का काया पलट

भारतीय प्रतिनिधि की प्रेरणा से संसार के मुख्य २ राष्ट्रों ने कोरिया में युद्ध समाप्ति की घोषणा कर दी है। कोरिया युद्ध के कैदियों को अपने २ देशों में वापिस जाने की व्यवस्था करने का मुख्य कार्य भारत को सौंपा गया है। भारतीय सेना, संरक्षक सेना संरक्षक सेना के रूप में इसकी व्यवस्था कर रही है। अमरीका और रूस का तनाव भी कम हो रहा है। कोरिया में भारतीय सेना शिविर का नाम शान्ति नगर रखा गया है। रूस ने हाइड्रौजन बम्ब का आविष्कार तथा विस्फोट कर, अमरीका के अणु बम के एकाधिकार को समाप्त कर दिया है। अब दोनों के तुल्य बल होने से शान्ति की स्थिर सम्भावना हो रही है।

इन्हीं दिनों ईरान में वहां के प्रधान मन्त्री मुसादिक और बादशाह के शक्ति संघर्ष में दो दिन पहले बादशाह को भागना पड़ा। मुसादिक सर्वे सर्वा बन गया। परन्तु दो ही दिन में मुसादिक कैदी बन गया और बादशाह ईरान का बादशाह बन गया। अमरीका ने मुसादिक के गिरफ्तार होते ही ईरान को करोड़ों रुपये की सहातया देना स्वीकार किया है।

इन्हीं दिनों उत्तरी अफ्रीका में फ्रांस ने ट्यूनिशिया में मोरक्को के सुलतान को गद्दीच्युत कर अपना मन भाया नया सुलतान बनाया है। मिस्र वाली राजनीति मध्य एशिया में दुहरायी जा रही है। यू. एन. ओ. में अमरीका और इंगलैण्ड में अनेक बातों में मत भेद हो रहा है। धीरे धीरे ब्रिटिश जाति अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में खोया हुआ स्थान प्राप्त कर रही है।

इन्हीं दिनों इटली यूगोस्लेविया से ट्रीस्ट पर अधिकार जमाने के सम्बन्ध में संघर्ष हो रहा है। दक्षिण अफ्रीका तथा ईस्ट अफ्रीका में गोरी जातियों और काली जातियों के संघर्ष के खूनी बादल छा रहे हैं। अमरीका भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपना स्थान बनाये रखने के लिये एशियायी राष्ट्रों को खुली आर्थिक सहायता दे रहा है।

काश्मीर की समस्या के सम्बन्ध में भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री मि. महम्मद अली के बीच में, १९५४ ई० अप्रैल को प्लीबिसाइट (सार्वमत) लेने का निश्चय हुआ है बशर्ते कि दोनों राष्ट्रों में अनुकूल वातावरण रहे। शेख अब्दुल्ला के (स्वतन्त्र कश्मीर के नारे) ने भारतीय सरकार को चौकन्ना कर दिया है। यह समझा जा रहा है कि इसमें अमरीका का हाथ था। अब पाकस्तान वाले अमरीकन प्लीबिसाइट एडमिनिस्ट्रेटर निमिज को रखने पर जोर दे रहे हैं। भारतीय सरकार किसी अन्य राष्ट्र के प्रतिनिधि को। पाकस्तान वाले कश्मीर के प्रान्त को यू० एन० ओ० द्वारा हल कराने पर जोर दे रहे हैं और भारतीय सरकार परस्पर मिल कर। अमरीका तथा इंगलैण्ड के राजनीतिज्ञ, इस उलझन से काफी परेशान हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक स्थिति के इस काया पलट से यह तो स्पष्ट है कि अभी कई सालों के लिये तीसरा महायुद्ध स्थगित हो गया है। मानवजाति के कल्याण के लिये यह स्थिति संतोषजनक है। तीसरा युद्ध यदि होगा तो अफ्रीका की गोरी [illegible] काली जातियों में होगा। युरोप, अमरीका तथा एशिया की कौमें युद्ध से थक [illegible] दिया। [illegible]सक अभी युद्ध का मार्ग छोड़ने को तैयार नहीं प्रतीत होते। विश[illegible] गोरों की विषैली नीति का प्रतिकार करने की योजना बनानी [illegible]

———

[illegible]न्द्र जी प्रधान सम्मेलन।

[illegible]लंकार।

[illegible] जी कोषाध्यक्ष।

प्रति कापी आठ आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब का साहित्यिक सचित्र मासिक पत्र Regd. E. P. No. 372

हिन्दी सन्देश

पंजाब, पैप्सू, हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभागों ने स्कूलों और कालेजों की लायब्रेरियों के लिये, इसे समाचार पत्रों की स्वीकृत सूची में अंकित किया हुआ है।

जिसमें—

हिन्दी रत्न, भूषण प्रभाकर परीक्षाओं के विषय में प्रामाणिक लेख प्रकाशित किये जाते हैं। स्कूलों के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिये उपयोगी है। विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा सम्बन्धी शंकाओं के समाधान भी अंकित किये जाते हैं। साथ ही रसीली कविताएँ और मनोरञ्जक कहानियां भी प्रकाशित की जाती हैं।

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन का मुख्य पत्र है। वार्षिक मू० ६) एक प्रति का ।।)
पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन के सदस्यों को ४) में दिया जाता है।

मैनेजर—
हिन्दी सन्देश
निकलसन रोड, अम्बाला छावनी।

विज्ञापन देने का उत्तम साधन

टाइटल के द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ पृष्ठ पर ४०) प्रति पृष्ठ प्रति बार
अन्य पृष्ठों पर ३०) प्रति पृष्ठ प्रति बार

"हिन्दी सन्देश" की एजन्सी लेने के लिये निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें।

मैनेजर—
"हिन्दी सन्देश" विज्ञापन विभाग

अधिक प्रचार करना चाहि...
यथार्थ में राष्ट्र भाषा बन सके।

आर्य का स्वाध्याय अंक—आर्य प्रतिनि...

सभा पंजाब के मुख्य पत्र 'साप्ताहिक आर्य' द्वारा आर्य प्रेस निकलसन, रोड में मुद्रित, तथा ... रोड, अम्बाला छावनी से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-सन्देश

पंजाब पैप्सु हिमाचल हिन्दी सम्मेलन का मुख-पत्र

नवम्बर-दिसम्बर १९५३--आश्विन-कार्तिक २०१०

१७ नवम्बर को [स्वर्गीय लाला लाजपतराय] का बलिदान दिवस मनाया गया

हिन्दू बच्चे के कानों के लिये इससे अधिक और कोई मधुर भाषा नहीं हो सकती जिसमें वेदों की ऋचाओं का गान हुआ हो, जिस भाषा में बाल्मीकि ने रामायण रची हो, जिसमें कालिदास ने शकुन्तला नाटक लिखा हो। इसके अतिरिक्त यदि और कोई दूसरी भाषा हिन्दुओं को स्वीकृत है तो वह वह भाषा है जिसमें तुलसीदास ने अपने भजन गाये हैं। लाजपतराय

१४ नवम्बर को भारतीय राष्ट्र ने आपकी ६४वीं गिरह मनाई गई।

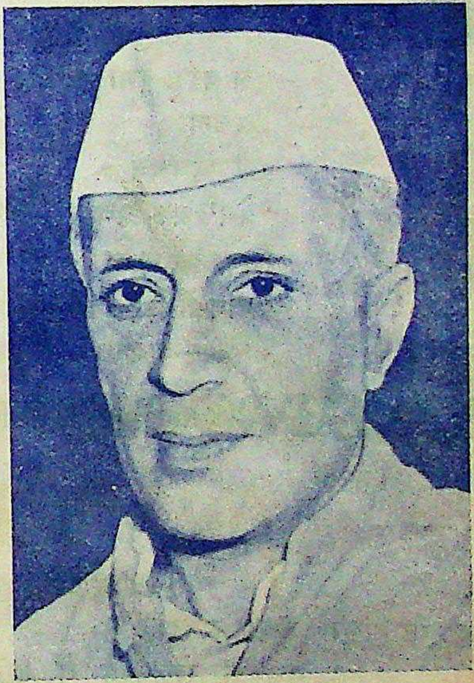

[प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल]

आपकी सम्मति में राष्ट्रीय एकता के लिये भारतीय भाषाओं को देवनागरी लिपि अपनानी चाहिए। भारतीय संसद् के इस अधिवेशन में सेठ गोविंददास के हिन्दी प्रश्नों को आपने हिन्दी में ही उत्तर दिया।

वार्षिक मूल्य छः रुपये

संचालक—स्वामी स्वतंत्रानन्द जी प्रधान सम्मेलन।

प्रधान संपादक—भीमसेन विद्यालंकार।

प्रबन्ध संपादक—श्री [illegible] जी कोषाध्यक्ष।

प्रति कापी आठ आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
१.	सम्पादकीय	१
२.	साहित्य—समालोचना	३
३.	पैप्सू और हिन्दी	४
४.	पंजाब के सरकारी दफ्तरों से बहिष्कार करो !	६
५.	लाला लाजपतराय जी का बलिदान (कविता)	८
६.	पंजाबी साधु हिन्दी कवि निश्चलदास जी	९
७.	कल बदल देगा ज़माना (कविता)	११
८.	प्रेमचन्द	१५
९.	रस विवेचन	१७
१०.	"प्रेम" एक अध्ययन—और साधना	१९
११.	भिड़ों का छत्ता (कहानी)	२२
१२.	पंजाब में हिन्दी प्रचार आन्दोलन की प्रगति	२९
१३.	कल्कि—अवतार (कविता)	३२

❋ गीत ❋

[श्री छोटेलाल "वशिष्ठ" सहारनपुर]

उड़ जा पंछी हुआ सवेरा !

नभ में खेल रहे थे तारे, सोये सभी नींद के मारे ॥
यह प्रभात, वह गया अन्धेरा ,उड़ जा पंछी हुआ सवेरा ॥

मत्त कोकिला कू-कू बोले, उस कू-कू से मनवा डोले।
शीतल मन्द पवन का घेरा, उड़ जा पंछी हुआ सवेरा ॥

साथी तुझको छोड़ गये हैं, मुझसे नाता तोड़ गये हैं।
अब भी क्यों फिर तुझे बसेरा, उड़ जा पंछी हुआ सवेरा ॥

कुड्मल करवट ले मुसकाया, सुमन सुमन में सौरभ छाया,
जिसने मस्त मधुप दल टेरा, उड़ जा पंछी हुआ सवेरा ।

फूल फूल पर भौंरा डोले, चित्त प्रसन्न पपीहा बोले।
चक्र वाक उर हर्ष घनेरा, उड़ जा पंछी हुआ सवेरा ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाहौर में संस्थापित १९३४ १९४९ मार्च में अम्बाला छावनी से पुनः संचालित

हिन्दी–सन्देश

उत्तरी भारत का प्रमुख साहित्यिक मासिक पत्र

पंजाब, हिमाचलप्रदेश, पटियाला यूनियन के स्कूलों, कालेजों के लिये इन राज्यों के शिक्षा विभागों द्वारा स्वीकृत।

वर्ष ४] अक्तूबर नवम्बर १९५३, अश्विन कार्तिक २०१० [अंक ७

सम्पादकीय--

पंजाब का रंग मंच

अक्तूबर नवम्बर महीनों में पंजाब के सार्वजनिक जीवन का रंगमंच अनेक संघर्षों की गर्मी से काफी विक्षुब्ध और अनेक सार्वजनिक लोकसेवकों की तू, तू, मैं, मैं, की चिनगारियों से संतप्त रहा। पञ्जाब की नई राजधानी चण्डीगढ़ में हुये पंजाब एसम्बली के अधिवेशन में श्रीराम शर्मा और चीफ मिनिस्टर भीमसेन जी के गुटों की परस्पर निन्दा की होली तथा लोड़ी ने पंजाब के राजनैतिकस्तर को काफी नीचा कर दिया। राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी, ने ७ अक्टूबर १९५३ को, चण्डीगढ़ राजधानी का उद्घाटन समारोह किया। १०००० से ऊपर की तादात में उपस्थित जनता के साथ मिलकर जलपान किया। खुशी में आतिशबाजियों, अग्नि क्रीड़ाओं के प्रदर्शन भी किये गये। राष्ट्रपति ने अपने भाषण में पञ्जाबियों को सीमा प्रान्तीय प्रदेश होने के नाते, पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान पर संगठन बल का प्रभाव डालने के लिये मिलकर काम करने की प्रेरणा भी की। परन्तु 'सच्चर गनी सहगल' देवताओं पर इसका कोई असर नहीं हुआ। परस्पर बदला लेनेकी भावना चरम सीमा तक पहुंच गई। पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी तथा पंजाब एसम्बली की कांग्रेस पार्टी ने नियन्त्रण सम्बन्धी अनुशासन के आधार पर सहगलगनी मोतासिंह, को कांग्रेस संगठन से बहिष्कृत करने का दण्ड दिया। बहिष्कृत दण्डित देशभक्तों की त्याग तपस्या की रोमांचकारी स्मृतियों ने, कांग्रेसी हाई कमांड को इस समस्या को सुलह द्वारा निपटाने के लिये प्रेरित किया। परन्तु पंजाबी स्वभाव पर इसका कोई असर नहीं हुआ। इन्ही दिनों चीफ मिनिस्टर और पंजाब कांग्रेस के प्रधान ने कांग्रेस प्रैजिडैण्ट प्रधान मन्त्री जवाहरलाल को पंजाब में निमन्त्रित किया। ७ नवम्बर से ९नवम्बर तक प्रधान मन्त्री, कांग्रेस के प्रधान जवाहरलाल के तूफानी दौरों और दौरे में दिये गये भाषणों की फटकार ने, मामले को कुछ समय के लिये शांत कर दिया है। दंडित व्यक्तियों की अपील हाई कमांड अखिल भारतीय कमेटी द्वारा सुनेगी। पं० जवाहरलाल नेहरू ने चंडीगढ़ में सेक्रेटरीयट का उद्घाटन करते हुयेजनता को राष्ट्र के निर्माण में अपना २ भाग, आशावाद के साथ देने की प्रेरणा की। साम्प्रदायिकता संकीर्णता तथा परस्पर नुकताचीनी से बचने की प्रेरणा की। इस प्रेरणा के साथ साथ अकाली सिक्खों द्वारा साम्प्रदायिक मांगों को पूरा करने के लिये किये जाने वाले मोर्चा भूख हड़ताल आदि का प्रयोग करने वालों को चेतावनी दी कि सरकार इनभबकियों से नहीं दबती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। आशा है चेतावनी के इन भाषणों से पंजाब में कुछ समय तक शान्ति रहेगी। ❀ ❀

इसी सिलसिले में अमृतसर में १ नवम्बर को अखिल हिन्दुपरिषद् की गई। अकाली सिक्खों की, पञ्जाबी सूबा बनाने तथा सिक्खों की हरिजन जातियों को विशेषाधिकार दिलाने के आन्दोलन का विरोध किया गया। हिन्दुओं की पुरानी परम्पराके अनुसार इस हिन्दु परिषद् में भी कुछेक हिन्दु सभाइयों ने इस मामले में अकाली सिक्खों की साम्प्रदायिक मांगों का समर्थन, केवल इसीलिये किया कि वह अकालियों के साथ मिलकर कांग्रेसी सरकार का विरोध कर सकें। अब हिन्दुओं में भी इस मामले में घरेलू झगड़ा शुरू हो गया है। पंजाब में अन्तःकलह, बहिःकलह साम्प्रदायिक तथा राजनैतिक ईर्ष्या की भट्टी गरम हो रही है। इस गर्मी को जनता की चेतना ही नियन्त्रित कर सकती है। इसके लिये पञ्जाबी जनता को नए नेताओं का निर्माण करना चाहिये। और पुराने स्वार्थी अदूरदर्शी नेताओं को विदा देनी चाहिये।

आन्ध्र राज्य की स्थापना—दो अक्टूबर को पृथक आंध्र राज्य की स्थापना हो गई है। इस घटना के परिणाम स्वरूप, राष्ट्र के विविध भागों में भाषा के आधार पर प्रान्त निर्माण की मांगें की जा रही हैं। भारतीय सरकार ने इस पर विचार करने के लिये विशेष कमीशन आयोग नियत करने का निश्चय किया है। भारत के विविध राजनैतिक दल इस प्रश्न पर अपनी २ दृष्टियों से आंदोलन रहे हैं। महाराष्ट्र कर्नाटक पञ्जाब आदि भाषा के आधार पर पृथक् प्रान्त निर्माण क के लिये अनेक प्रकार के उपायों को अपना हैं। राष्ट्रीय एकता के समर्थक इसके विरोध संगठन कर रहे। आज भारत की अनेक समस्या ओं से यह समस्या उग्र रूप धारण कर रही हैं।

विश्व का रंग मंच—यू० एन० ओ० अमरीकन रंग मंच भी अपनी पुरानी चाल चल रहा है। इस बार यू० एन० ओ० के अ पद पर भारतीय राष्ट्र प्रतिनिधि श्रीमती वि लक्ष्मी पंडित निर्वाचित हुई हैं। श्रीमती वि लक्ष्मी पण्डित प्रथम महिला हैं जिन्हें अंतर्रा राजनैतिक संगठन का दायित्व पूर्ण पद हुआ है। इससे अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर भारत गौरव और भी अधिक चमक उठा है। को के मैदानों में भारतीय सेनापति तिमैय्या प पक्षों के कैदियों को स्वेच्छा तथा स्वतन्त्रता पू आजाद होने का अवसर देने की व्यवस्था कर हैं। विश्व के राष्ट्र, भारतीय सेनापति तथा उ सहायकों के प्रयत्न की सराहना कर रहे युगोस्लेविया इटली संघर्ष उग्र हो गया है। एन०ओ०में एशियाई युरोपियन, और गोरे काले संघर्ष के कारण सदस्यों में तनाव बढ़ रह रशिया अमरीका पूर्ववत् एक दूसरे को नी दिखाने में व्यग्र हैं।

—श्रीम

हिन्दी विरोधी भार्गव सच्चर फार्मूले को खतम करने के लिये

आप अपने शहर व गांव के सरकारी गैरसरकारी स्कूलों में कम से कम स्कूल की प्रत्येक श्रे में १० विद्यार्थी ऐसे तैयार करें जिनके माता पिता हिन्दी भाषा माध्यम द्वारा अपने बच्चों को शि दिलाना चाहते हैं। सारे स्कूल में ऐसे विद्यार्थियों की ४० संख्या हो जाने पर स्कूल के संचालकों हिन्दी भाषा माध्यम द्वारा शिक्षा देने का मुकम्मल प्रबन्ध करना पड़ेगा। यदि कोई हैडमास्टर ऐ करने से इन्कार करे तो उसकी रिपोर्ट शिक्षा विभाग सेक्रेटरी के पास की जावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समालोचना

सूक्ति कुसुमावलि—लेखक श्री चौ० रामसिंह जी घण्डरां जिला कांगड़ा कीमत ॥) । यह प्रथम स्तवक संस्कृत ग्रन्थों के व्यवहारोपयोगी सुभाषितों का उत्तम संग्रह है। संस्कृत सुभाषितों का हिन्दी अनुवाद भी साथ दिया गया है। भारत के स्वतंत्र हो जाने के बाद, संस्कृत भाषा का महत्व बढ़ रहा है। शिक्षा पद्धति में भी इसको विशेष स्थान दिया जा रहा है। यह स्तवक स्कूलों के विद्यार्थियों अध्यापकों तथा लेखकों और व्याख्याताओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है। लेखक महोदय द्वितीय तथा तृतीय स्तवक भी, शीघ्र प्रकाशित कर रहे हैं। अकारादि वर्ण क्रम से सुभाषित संग्रह किये गये हैं। इसके साथ यदि इन सुभाषितों का वर्गीकरण विषय क्रम से भी किया जाता तो उसकी उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है। आशा है लेखक महोदय द्वितीय संस्करण प्रकाशित करते हुए इस सुझाव पर भी विचार करेंगे।

झूला—लेखिका शकुन्तला परांजये बी. एस. सी., एम. ए. कैण्टब आनरेरी सुपरवाइजर फैमिली-प्लैनिङ्ग क्लिनिक्स पूनाम्युनिसिपल कोर्पोरेशन मूल्य ।।।) परांजपे रोड पूना नं० ४। पुस्तिका श्री धो कर्वे जी को समर्पित की गई है। आजकल हमारे देश में प्रतिवर्ष बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण अन्न संकट, बेकारी, भुखमरी तथा गरीबी बढ़ रही है। इस बाढ़ को रोकने के लिये नैतिक तथा यांत्रिक उपायों का प्रयोग करने की शिक्षा देने के लिये केन्द्र खोले जा रहे हैं। इन केन्द्रों में आंखों देखी आपबीती जगबीती घटनाओं के आधार पर विवाहित स्त्री पुरुषों को सन्तान निरोध के लिये मार्ग प्रदर्शन किया गया है। इस विषय में स्त्री जाति की विशेष दिक्कतों का हल लेखिका द्वारा इसमें निर्दिष्ट किया गया है। संतति नियन्त्रण आन्दोलन में रुचि रखने वाले स्त्री पुरुषों के लिये पुस्तिका उपयोगी है। वर्णनशैली रोमांचकारी और सरल है। गृहस्थियों के लिये पुस्तक संग्रहणीय है।

रेडियो संग्रह— त्रैमासिक (जुलाई, सितम्बर १९५३) प्रथम वर्ष का प्रथम अंक है। एक प्रति का मूल्य आठ आने। सम्पादक श्री शंकर गौर। प्रकाशक डिस्ट्रीब्यूशन आफीसर पब्लिकेशन्स डिविजन मिनिस्टरी आफ इन्फर्मेशन एण्ड ब्रौडकास्टिंग ओल्ड सैक्रेटरियट दिल्ली ८। भारतीय आकाशवाणी द्वारा प्रसारित, अपने २ विषय के प्रामाणिक योग्य व्यक्तियों द्वारा उच्चारित किए गये भाषणों का संग्रह मुद्रित किया गया है। राष्ट्रभाषा हिंदी को यथार्थ में राष्ट्रभाषा बनाने का अचूक उपाय यह है कि उसके साहित्य को वर्तमान समय की अद्ययाबत् हुई खोजों से अलंकृत किया जाय। कठिन कठिन दुरूह विषयों को सरल बोलचाल की, मँजी हुई भाषा में जनता के सामने रखा जाय। भारतीय आकाशवाणी द्वारा प्रसारित वक्तव्यों को इस संग्रह द्वारा लेखबद्ध करके हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया गया है। प्रस्तुत संग्रह, साधारण जनता, विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की ज्ञानवृद्धि का साधन बन सकता है। हरेक पुस्तकालय वाचनालय में इस संग्रह को रखा जा सकता है। संग्रह का मुद्रण तथा गैट-अप आकर्षक सुन्दर और शुद्ध है।

हिन्दी साहित्य की वर्तमान गतिविधि तथा स्वरूप के सम्बन्ध में इस संग्रह का निम्न लिखित उद्धरण, हिन्दी लेखकों विशेषतया पंजाब के श्री डा० मदान आदि जैसे अंग्रेजी या हिन्दी विद्वानों के विचारार्थ हम अंकित करते हैं :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस देश में अधिक सरलता से अन्य भाषा भाषा भाषियों द्वारा भी जो भाषा समझी जा सकती है और समझी जाती है वह है संस्कृत शब्द प्रधान भाषा। आप आश्चर्य न करें। हिन्दी के साहित्यकार भी यह बात सुन, न चौंकें। मेरा आशय उन साहित्यकारों से है जो सरलता का अर्थ फ़ारसी उर्दू मिश्रित शब्दावली मान बैठे हैं। जिनकी दृष्टि उत्तर प्रदेश के पश्चिम के कुछ थोड़े से भाग दिल्ली और पंजाब तक ही सीमित है। वे सरलता का अर्थ फारसी मिश्रित उर्दू मान बैठे हैं। पर देश की भाषाओं को देखिये। आर्य भाषा भाषी प्रदेशों जैसे मैथिल भोजपुर बंगाल आसाम उत्कल महाराष्ट्र गुजरात राजस्थान, मालव मध्य-प्रदेश आदि की भाषाएँ संस्कृत की दौहित्रियां है और संस्कृत बहुलता ही उन प्रदेशों की भाषा की सरलता है। अब चलिये आगे। कन्नड़, मलयालम तेलगू तामिल इन चार द्रविड़ भाषाओं में प्रथम तीन अर्थात् कन्नड़, मलयालम और तेलगू में ६० प्रतिशत से भी अधिक शब्द संस्कृत के हैं और और तामिल में जो बड़ी पुरातन और समृद्ध भाषा है, प्रायः ४० प्रतिशत संस्कृत शब्द हैं। अतः परिणाम यह निकला कि यदि हिन्दी के कवि तथा अन्य प्रकार के हिन्दी साहित्यिक, देश व्यापी सुगम भाषा लिखना चाहते हैं तो उन्हें निश्चय ही अपनी भाषा को संस्कृत निष्ठ बनाना पड़ेगा।' "नवीन"

पहली पंचवर्षीय योजना—योजना की प्रगति—

पंचवर्षीय योजना के प्रथम दो वर्षों में जो कार्य हो चुका है उसका विस्तृत वर्णन जनता की जानकारी के लिए हिन्दी भाषा में, इस पुस्तिका द्वारा प्रकाशित किया गया है।

दि पब्लिकेशन्स डिविजन की तरफ से ही यह पुस्तिका प्रकाशित की गई है जानकारी की दृष्टि से पुस्तक संग्रहणीय है। इसकी कीमत चार आना है। राष्ट्रीय निर्माण कार्य में भाग लेने वालों के लिए पुस्तिका उपयोगी है। (पारखी)

पैप्सू और हिन्दी

[लेखक—श्री सत्यपाल जी गुप्त, प्रभाकर, प्रधान, पैप्सू हिन्दी साहित्य सम्मेलन]

पैप्सू संघ के निर्माण के पश्चात् भारत के अन्य प्रदेशों की भांति राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार की आवश्यकता को अनुभव करते हुए, यहां के हिन्दी प्रेमियों ने १९४८ में पैप्सू प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की, जो आज इस प्रदेश कीएकमेव हिन्दी प्रचारिणी संस्था है। संघ के निर्माण से पूर्व पंजाब की देशी रियासतों में अंग्रेजी व ऊर्दू ही राज्य भाषा व शिक्षा माध्यम के रूप में प्रयोग होती थी। किन्तु भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात्, राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार से प्रभावित होकर, हिन्दी प्रेमी भी यहां इस की आवश्यकता को अनुभव करने लगे। संघ के निर्माण होने पर सरकारने पंजाबी अंग्रेजी को राज्य भाषा व शिक्षा माध्यम के रूप में घोषित कर दिया, जिस पर यहां की हिंदी प्रेमी जनता व सम्मेलन ने आंदोलन किया और नरवाणा आदिमें सत्याग्रह तक हुआ जिसके परिणामस्वरूप सरकार ने पैप्सू को हिंदी भाषी क्षेत्र और पंजाबी भाषा क्षेत्र दो भागों में बांट दिया। पैप्सू हिंदी सम्मेलन ने जनता की मांगों पर राज्य का ध्यान दिलाया व एक सर्व दलीय हिन्दी सम्मेलन किया। श्री अलगू राम शास्त्री बाबू रामनारायण सिंह, काका भगवन्त राय सदस्य विधान सभा आदि ने भी यहां की जनता की उचित मांगों को राज्य तक पहुँचाया तथा राज्य ने हिन्दी भाषा क्षेत्र में हिन्दी को राज्य भाषा व शिक्षा का माध्यम घोषित कर दिया तथा पंजाबी भाषी क्षेत्र में पंजाबी को राज्य भाषा व शिक्षा का माध्यम बना दिया, किन्तु इसमें एक और त्रुटि हुई कि जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी भाषी क्षेत्र में हिन्दी को अतिरिक्त राज्य भाषा घोषित करने से इनकार किया वहां हिन्दी भाषी क्षेत्र में पंजाबी को सरकारी भाषा घोषित कर दिया, तथा साथ ही पंजाबी भाषा के प्रचार के लिये एक पंजाबी 'विभाग की स्थापना कर दी, जिस को सरकार की ओर से ३ लाख रुपये वार्षिक दिया जाता है सम्मेलन की ओर से यह मांग की गई कि हिंदी भाषी क्षेत्र की भांति पंजाबी भाषी क्षेत्र में भी हिन्दी को अतिरिक्त भाषा और राज भाषा घोषित किया जाय तथा हिन्दी भाषा (जो राष्ट्रभाषा होने के साथ२ यहां की ½ भाग की मातृभाषा भी है) के प्रचार के लिये एक हिन्दी विभाग स्थापित किया जाये हिंदी के अध्यापकों का वेतन पंजाबी अंग्रेजी के अध्यापकों के समान किया जाय तथा शिक्षा माध्यम के सम्बन्ध में विद्यार्थी के माता पिता को यह अधिकार दिया दिया जाय कि वह जिस भाषा में चाहे अपने बालक को शिक्षा दिलाये। इन मांगों को सम्मेलन की ओर से बार बार राज्य के सामने प्रस्तावों, आवेदन पत्रों के रूप में पेश किया गया तथा समय समय पर देश के मान्यनेताओं; देश रत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन श्री जय प्रकाश नारायण श्री गुरु गोलवालकर आदि को मान पत्र दिये गये और जनता की उचित मांगों को राज्य तक पहुँचाने का कार्य किया गया। साथ ही हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिये समय२ पर साहित्यिक बैठकें की गयीं तथा राष्ट्र भाषा के प्रसिद्ध कवियों गोस्वामी तुलसी दास, सूरदास तथा महात्मा कबीर आदि की जयन्तियां भिन्न २ स्थानों पर बड़ी धूम धाम से मनाई गईं। जिस में यहां के प्रसिद्ध साहित्यक व्यक्तियों जैसे श्री परमानन्द, सलाहकार पैप्सू प्रदेश कांग्रेस, श्री प्रो० शैवाल, आचार्य दुर्गादास दत्त आचार्य चन्द्र शेखर, मि० वातेल धर्म पत्नी वित्त मन्त्री पैप्सू, श्री चौ० इन्द्रसिंह, भूतपूर्वक उपमन्त्री पैप्सु राज्य चौ० भतर सिंह, सूबेदार ओम्कारसिंह श्री हीरासिंह, चनारिया श्री राम प्रताप गर्ग, सदस्य लोक सभा ज्ञानी जैल सिंह आदि भाग लेते रहे। हिन्दी नाटक तथा हिन्दी शिक्षा में जनता की रुचि पैदा करने के लिये एक गोष्ठी 'राष्ट्रीय कला' मन्दिर स्थापित किया गया जो कि दो हिन्दी नाटक खेलने में सफल हो चुका है हिन्दी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये समय २ पर क्रमिक भाषणों का क्रम बनाया जाता है। हिंदी साहित्य सम्मेलन के इस प्रचार कार्य से प्रभावित होकर सरकार भी अपने कार्यक्रमों में हिन्दी को स्थान देने लग गई है।

अभी अभी अखिल भारतीय उद्योग प्रदर्शनी के अवसर पर सत्यपाल गुप्त को आमन्त्रित किया गया। इस अवसर पर यहां सम्मेलन के प्रधान की ओर से अखिल भारतीय हिन्दी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें भारत के प्रत्येक भाग से प्रसिद्ध कवियों ने भाग लिया, जिसमें श्रीमती देवराज दिनेश, श्री गोपालप्रसाद व्यास, श्री सुदर्शन पुरी, श्रीमती शांति गुप्त श्री उपा भटनागर श्री नरेन्द्र धीर श्री आनन्द शास्त्री, श्री दीपक कमर महता, श्री तोमर सिंह साबर, कुमारी उमाधीर, श्री बलवंत सिंह जी गजराज, श्री जोगेन्द्र सिंह आदि ने भाग लिया। यह कवि सम्मेलन उद्योग प्रदर्शनी का सबसे सफल कार्य क्रम था। उसी दिन संस्कृत विद्यालय पटियाला व कला निकेतन कालिज में इन कवियों के सम्मान में चाय पार्टी आदि के कार्य क्रम हुए। इसके अतिरिक्त, पंजाबी के साथ २ हिन्दी की लायब्रेरियां आदि भी राज्य की ओर से खुल रहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। सम्मेलन की ओर से पैप्सू के हिन्दी लेखकों की उन्नति के विचार से सम्मेलन की ओर से हिन्दी लेखक संघ का निर्माण हो चुका है।

४ अक्तूबर १९५३ को पटियाला में श्री बनारिया जी ऍम. पी. के सभापतित्व में पैप्सू हिन्दी सम्मेलन हुआ। इसमें पैप्सू में हिन्दी को राजभाषा बनाने के प्रस्ताव स्वीकार हुए और पैप्सू की विविध हिन्दी प्रचारिणी सभाओं को केन्द्रित करनेके लिये उपसमिति बनाई गई। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री परमानन्द जी ने भी राष्ट्र भाषा हिन्दी को अपनाने की प्रेरणा की। पंजाब हिन्दी सम्मेलन के प्रधान स्वामी स्वतंत्रानन्द जी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन के प्रधान मन्त्री भीमसेन जी ने भी हिन्दी भाषा को व्यवहार में लाने की प्रेरणा की और प्रारम्भ से गणित की शिक्षा हिन्दी अंकों में दिये जाने का आन्दोलन चलाने पर बल दिया।

पंजाब के सरकारी दफ़्तरों से उर्दू का बहिष्कार करो, तभी हिन्दी पंजाबी का प्रचार हो सकेगा!

मान्य भाई जी,

सप्रेम सादर नमस्ते।

मैंने ट्रिब्यून में हिन्दी के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव पास हुए हैं उन्हें पढ़ा है। पढ़ कर खुशी भी हुई और दुःख भी। खुशी हुई क्यों कि आप हिन्दी प्रचार के लिए प्रयत्न करने में तत्पर हैं। दुःख हुआ चूंकि आपकी नीति कियात्मक नहीं है।

आप के प्रस्तावों से यह पता चलता है कि हिन्दी वाले गुरुमुखी के प्रति किए गए पक्षपात से दुःखी हैं और उस पक्षपात को हटाना चाहते हैं। इस प्रकार हिन्दी का प्रचार विस्तृत रूप से करवाना चाहते हैं। यह बात तो सच है पर इस प्रकार की नीति से हिन्दी की उन्नति में सुविधा होने की बजाय दुविधा पैदा होगी।

इस समय हिन्दी की उन्नति के मार्ग में पञ्जाबी की इतनी बाधा नहीं है, जितनी कि उर्दू की। आप को टकर लेनी चाहिए उर्दू से। गुरुमुखी वालों को साथ मिला कर मुकाबला करना चाहिए। वह लोग जो उर्दू को हटाना नहीं चाहते, उन्होंने गुरुमुखी और हिन्दी वालों का आपस में झगड़ा खड़ा किया हुआ है। वह चाहते हैं कि यह झगड़ा चलता ही रहे।

आप की मांग होनी चाहिए कि अदालतों में, पुलिस के महकमे में और माल (Revenue) के महकमे में हिन्दी और पञ्जाबी का प्रचार शुरू हो। हर चार महीनों में गवर्नमेंट दो जिलों से उर्दू का बाहर निकाल दे। चाहे यह काम गुरुमुखी में हो या हिन्दी में हो। चाहे एक जिले में हिन्दी हो जाए और दूसरे में गुरुमुखी। गवर्नमेंट इतने अफसर हर महकमे में यानी माल के, पुलिस के, मैजिस्ट्रेट और जज जो हिंदी या गुरुमुखी में से एक भाषा को जानते हैं, लगा सकती है जो एक जिले को हिंदी या गुरुमुखी में चला सके। इस तरह करते करते हम चार जिले हिंदी के बनवा लें और चार जिले गुरुमुखी के। हिंदी की तरफ तो गुड़गांवा, रोहतक, करनाल और कांगड़ा होवें और गुरुमुखी की तरफ फ़िरोज़पुर, अमृतसर, लुधियाना और जालंधर होवें। यह काम चार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार महीने की रफ़तार से १६ महीने में पूरा हो जाना चाहिए। यानी १६ महीने में पञ्जाब के आठ जिले उर्दू से छुट्टी पा जाएंगे। इस प्रकार अदालतों में माल के महकमे में और पुलिस में गुरुमुखी और हिन्दी के आजाने से उर्दू का प्रचार घटेगा, और हिन्दी वा गुरुमुखी जानने वालों को कई किस्म की सुविधाएं हो जाएंगी। वह अपनी अर्जियां आसानी से लिख कर अदालतों में दे सकेंगे। वह अदालतों के मुन्शी तथा अर्जीनवीस बन सकेंगे। उनकी रोजी बढ़ेगी आमदनी बढ़ेगी और इस तरह उनको लोकमत भी संगठित और मजबूत बनेगा। इतना हो जाने के बाद जो हिस्से द्विभाषा भाषी करार दिए गए हैं, उनमें ऐसे अफसर लगाए जाएं जो गुरुमुखी हिन्दी दोनों जानते हों। उन्हें द्विभाषा भाषी होने के विशेष पुरस्कार मिलें। इन द्विभाषा भाषी इलाकों में अफसर की इच्छानुसार अगर वह चाहता है कि हिंदी में काम करे या गुरुमुखी तो कर सके। अदालतों में हर किस्म की अर्जियां चाहे गुरुमुखी में चाहे हिंदी में हो, स्वीकार हो। साइल को अपने मुकदमे के फैसलों की कापी जिस लिपि में चाहें लेने का हकदार हो।

बाकी के इलाके जिनका कि शक हो कि यह द्विभाषा भाषी हैं या एक-भाषा भाषी हैं, अप्रत्यक्ष लोकमत द्वारा तहसीलवार फैसला किया जाए। एक एक तहसील के पंचों और म्यूनिसिपल कमेटियों के मैंबरों की राय ली जाए कि किस भाषा में कार्य चलवाना चाहते हैं। अगर ३५ या ४० फी सदी भी हिंदी या गुरुमुखी के हक में (वोट) देवें तो वह तहसील द्विभाषा भाषी हो जावे और यदि ३० से भी कम हिंदी या गुरुमुखी के हक में (वोट) देवें तो वह तहसील एक-भाषा भाषी करार दी जावे। और ७० फी सदी वालों की या इससे अधिक संख्या वालों की ही भाषा सिरफ़ रह जाए।

एक हिंदी पढ़े हुए को अच्छी गुरुमुखी पढ़ने में सिरफ ४ महीने लगते हैं परन्तु उर्दू दो सालों में भी नहीं पढ़ सकता है। इसी तरह गुरुमुखी पढ़े हुए को हिंदी पढ़ने में कुछ महीने ही लगते हैं। यह तरीका है जिससे हिंदी का बहुत प्रचार होगा और हिंदी देश की राष्ट्र भाषा बनेगी।

यह प्रस्ताव साफ़ शब्दों में श्रीमान भीमसेन सच्चर के सामने पेश किया जाए।

आप का स्नेही—

इन्द्रसेन, एम० बी० बी० एस०

[हम लेखक महोदय के प्रस्ताव का हार्दिक स्वागत करते हैं। —सम्पादक]

पंजाब हिन्दी सम्मेलन सभापति निर्वाचन की तिथियों में परिवर्तन

प्रतिनिधि सदस्य नोट कर लें।

अमृतसर में होने वाले पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के सभापति के निर्वाचन की तिथियां १५ नवम्बर १९५३ के स्थान पर २६-११-५३ कर दी गई है। स्वागत समिति के निर्माण तथा निर्वाचन में विलम्ब होने के कारण यह परिवर्तन करना पड़ा है। प्रस्तावित सभापति नामावलि इस प्रकार है—श्री डा० सत्यपाल जी स्पीकर पंजाब एसेम्बली, श्री सेठ महेशानन्द जी, हिसार पं० भगवद्दत्त जी, प्रो० चारुदेव जी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला लाजपतराय का—

बलिदान

कौन शासकों के आगे शेर सा दहाड़ता !

मार दुर्दिनों की सहीं—सहे घोर उत्पात, हे विधि ! हम बेबसों पर—अब यह वज्राघात ॥१॥
गाज गिराते देश पर, तुझ पर गिरी न गाज, हाय ! लाजपत छीनते, तुझको लगी न लाज ॥२॥
कैसे धैर्य धरती है धरती विहरती न, क्यों नहीं 'त्रिशूल' राह नापती पताल की।
दिनकर क्यों हैं दिन करते दिखाते मुख, दीनों को सताते हैं बढ़ाते गति काल की॥
प्रलय मची है और होगी क्या महा प्रलय, मृत्यु, हाय मृत्यु ! लाजपति ऐसे लाल की।
तिलक छिना था फिर विलख रहे हैं दीन, छिन गई छवि भव्य भारत के भाल की ॥३॥
भारत बसुन्धरा का रत्न था 'त्रिशूल' वह, कन्दा उसका है नाम दिल के नगीने पर।
मेघमाला की सी ध्वनि करता सदा ही रहा, छींटे छोड़ता ही रहा बुरज़ और कीने पर॥
देश-प्रेम प्याला पिए ऐसा मतवाला रहा, झिझका न सागरे शहादत भी पीने पर।
बरसीं जो लाठियां पुलिस की कुलिश सम, पीठ न दिखाई सारे वार लिए सीने पर ॥४॥
दीन बन्धुओं को दीन बन्धु था तिलक-मित्र, देश बन्धु सम दान वीरता में नामी था।
दम था, स्वतन्त्रता का दम भरने के लिए, हिम्मत में—हौसले में रखता न ख़ामी था॥
आसरा अछूतों का स्वदेशियों का सरदार, एकता का प्रेमी और हिन्दुओं का हामी था।
अग्रकुल हँस स्वत्व समर में आगे रहा, सेनप स्वराज्य की अनी का अग्रगामी था ॥५॥
होता वीर बांका हिन्द-माँ का जो न लाजपति, हिन्दू-सभ्यता का फिर झण्डा कौन गाड़ता।
होता बलवान भारती का जो न वर पुत्र, कुतरु अविद्या कौन जड़ से उखाड़ता॥
होता जो न सिंहसा स्वतन्त्रता—समर—शूर, दासता पिशाची का कलेजा कौन फाड़ता।
किसकी गरज से लरजती कुटिलनीति, कौन शासकों के आगे शेर सा दहाड़ता ॥६॥
माँडले में जाके जेल—जीवन पवित्र किया, युवकों के जी से भारी भीरुता निकाल दी।
दासता के भावों से मरा ही जा रहा था देश, देश भक्ति मन्त्र से कठिन घड़ी टाल दी॥
जमदूत लाख बढ़ लाठियां चलाते रहे, छाती पर चढ़ कर बुढ़ापे में भी ताल दी।
जान कर हाय ! जनता में नहीं आई जान, एक बार फिर जान दे कर जान डाल दी ॥७॥

'त्रिशूल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी साधु हिन्दी कवि निश्चलदास जी

[लेखक—श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी प्रधान पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन दीनानगर]

साधु निश्चलदास जी कौन थे। क्या पढ़े थे। कहां निवास करते थे। इत्यादि अनेक बातें हैं। जिन पर विचार करना है।

निश्चल दास जी ने स्वयं कहीं नहीं लिखा, वह कौन थे। जन्मस्थान कहां था। इसी कारण कोई कुछ कहता है, कोई कुछ।

अद्वैत सिद्धि की सरल व्याख्या के लेखक ब्रह्मचारी श्री रामेश्वरदत्त जी ने भूमिका में इस विषय का वर्णन किया है। वह यह है—

निश्चलदास का शरीर जाट का था, सो ठीक नहीं है।

१. इसका कारण वह यह लिखते हैं, कि ब्रह्मांणुडनंद नाम के परमहंस ने उनको बताया था, कि पंजाब में एक दादू पन्थी साधु उनसे मिला था, वह कहता था, कि निश्चलदास जी सारस्वत ब्राह्मण थे।

२. वृत्ति प्रभाकर में अनुपलब्धि प्रकरण में न अर्थ निरूपणावसर में (अब्राह्मणोनाचार्यः) ब्राह्मण से भिन्न आचार्य होने के लायक नहीं है। यह लिखा है। इससे भी उनका ब्राह्मण होना सिद्ध होता है।

युक्ति प्रकाश की भूमिका में लिखा है कि निश्चलदास जाट थे, यह ठीक नहीं। क्योंकि युक्तिप्रकाश की लेखनशैली भिन्न होने से कहीं निश्चलदास का बनाया हुआ ग्रन्थ नहीं है और निश्चलदास ने कहीं पर अपने ग्रन्थों में उसका उल्लेख भी नहीं किया है। सम्भवतः युक्तिप्रकाश का बनाने वाला कोई निश्चलदास का शिष्य होगा और वह जाति का जाट होगा।

विचार—

(१) ब्रह्माणुनन्द जी परमहंस ने भी सुना था, वह भी अप्रसिद्ध व्यक्ति से, अतः वह विश्वास योग्य नहीं है।

(२) वृत्ति प्रभाकर का पाठ नञर्थ में उदाहरण है। साहित्य में ऐसे उदाहरण हैं। इससे यह कल्पना करना कि वह ब्राह्मण थे। ठीक नहीं है।

(३) युक्तिप्रकाश उनका लिखा न होने पर भी लेखक पर दोष लगाना कि वह जाट होगा, निश्चलदास जाट न था, युक्ति युक्त नहीं है।

क्या ब्राह्मणेतर संस्कृत के विद्वान नहीं हो सकते, यदि हो सकते हैं तो निश्चलदास को जाट मानने में क्यों आपत्ति है। यदि जानना चाहें तो इन पंक्तियों पर विचार करें। जो जन्म के जाट थे, हैं, और विद्वान भी हैं। स्वर्गीय पं० भोलाराम जी नैयायिक, स्वर्गीय पण्डित वाल्यराम जी, जिन्होंने अनेक पुस्तक भी लिखे हैं। इस समय में स्वामी गंगेश्वरानन्द जी मंडलेश्वर, श्री रामस्वरूप जी शास्त्री आदि अनेक हैं, क्या यह सब ब्राह्मण हैं? कदापि नहीं।

स्वर्गीय त्रिलोक राम जी घराचों वाले जिन्होंने निश्चल दास जी से विचार सागर और वृत्ति प्रभाकर पढ़ी थी। उनका कथन था कि निश्चलदास जी जाट थे। उनके जीवन की एक घटना है।

चूरु में एक पण्डित रहा करते थे। जब निश्चलदास जी काशी से विद्या पढ़ कर आये, तो एक समय उनके पास गये, और न्याय दर्शन विषय पर शास्त्रार्थ हो गया। वह वृद्ध थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने पढ़े हुये थे। यह युवा थे विद्या अभी पढ़ी थी। वह एक स्थान पर निरुत्तर हो गये। और उस समय आवेश में आ गये। तब निश्चलदास जी ने कहा—पंडित जी विद्या तो थारी ही है, हौं तो जाट का पूत हूँ। अर्थात् विद्या आप की ही है। मैं तो जाट का पुत्र हूं। इससे सिद्ध है कि श्री निश्चलदास जी जाट थे।

इस बात को निश्चलदास जी जाट थे, प्रायः सब साधु जानते हैं। यह कोई गुप्त बात नहीं है। इतनी प्रसिद्ध बात को झुठलाने का साहस करना दुःसाहस मात्र है। अतः निश्चल दास जी जन्म के जाट थे। दादू पन्थी साधु थे, और किहडौली जिला रोहतक में निवास था। यह निर्विवाद है। आगे उनकी विद्या और दादू पन्थी होने के विषय में लिखता हूं।

दादू पन्थी—

निश्चलदास जी दादू पन्थी थे। उन्होंने विचार सागर में प्रत्येक तरंग में इसका परिचय दिया है।

यथा—

दोहा

जो जन प्रथम तरंग यह, पढ़ै ताहि तत्काल।
करहु मुक्त गुरु मूति ह्वै, 'दादू' दीन दयाल ॥१॥
'दादू' दीन दयाल जू, सत सुख परम प्रकाश।
जामें मति की गति नहीं, सोई निश्चल दास ॥२॥
तन, मन, धन, वाणी अरपि, जिन्ह सेवत चितलाय।
सकल रूप सो आप है, दादू सदा सहाय ॥३॥
अहम् ब्रह्म या वृत्ति में, निरावरण ह्वै भान।
दादू धादू रूप सों, यों मैं लियें पछान ॥४॥
ओंकार को अर्थ लखि, भयो कृतार्थ अदृष्टि।
पढ़े जो याहि तरंग तिहि, दादू करहु सुदृष्टि ॥५॥
लक्ष्य अर्थ लखि वाक्य को, ह्वै जिज्ञासु निहाल।
निरावरण सो आप है, दादू दीन दयाल ॥६॥
नाम रूप व्यभिचार मैं, अनुगत एक अनूप।
दादू पद को लक्ष्य है, अस्ति भाति प्रियरूप ॥७॥
ज्ञानी मुक्ति विदेह में, जासों होय अभेद।
दादू धादू रूप सो, जाहि बखानत वेद ॥८॥

इससे यह सिद्ध होता है, वह दादू जी के भक्त और दादू पन्थी साधु थे।

रहने का स्थान—

दिल्ली के पश्चिम दिशा, कोस अठारह ग्राम।
तामे यह पूरो भयो, किहडौली तिह नाम ॥
(विचार सागर)

किहडौली जिला रोहतक में ग्राम है, जो राज्य मार्ग (सड़क) सांपला से खरखोदा को जाती है। उसके दाईं ओर यह ग्राम है।

विद्या—

निश्चलदास जी ने विचार सागर के अन्त में अपनी विद्या विषय में लिखा है—

सांख्य, न्याय में श्रम कियो, पढ़ि व्याकरण अशेष।
पढ़े ग्रंथ अद्वैत के, रह्यो न एकहुं शेष ॥
कठिन जु और निबन्ध हैं, जिनमें मत के भेद।
श्रम ते अवगाहन किये, निश्चल दास सवेद ॥
तिन यह भाषा ग्रन्थ किया, रंच न उपजी लाज।
तामें यह इक हेतु है, दया धर्म सिरताज ॥

व्याकरण, दर्शन वेद (उपनिषद्) के प्रौढ़ पण्डित थे। वृत्ति प्रभाकर में एक स्थान पर लिखा है।

निश्चल विन किनहूँ न लिखी, भाषा में यह रीति।
ख्याति अनिवर्चनीय की, पेखहु सुजन सप्रीति ॥

इनका विचारसागर वेदांत प्रक्रिया का ग्रंथ है, वृत्ति प्रभाकर पण्डिताई का पुस्तक है युक्ति प्रकाश साधारण उदाहरण रूप है। यह संस्कृत के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित दर्शनशास्त्र के प्रकांड विद्वान् थे। यह उन पुस्तकों से पता लगता है।

इनके पुस्तकालय में पुस्तकों का उत्तम संग्रह था। इस विषय में एक कथा प्रसिद्ध है।

काशी में एक वृद्ध पण्डित थे, जो निःसन्तान थे उन्होंने विचार किया पुस्तक जो उनके पास हैं, किसी अधिकारी को दे देने चाहिये, उन्होंने सुबोध विद्यार्थियों की सभा बुलाई, उनके सामने एक प्रश्न किया—अमुक आचार्य ने यह लिखा है। इसका समाधान करो, प्रत्येक ने अपनी बुद्धि अनुसार समाधान किया। जब निश्चलदास जी की बारी आई। इन्होंने प्रथम कहा आपने जिस आचार्य का नाम लिया है। यह भाषा उसकी नहीं है। यह भाषा तो अमुक आचार्य की है। उस वृद्ध पण्डित ने पुस्तक निकाल कर जब वह स्थान देखा तो पता लगा, निश्चलदास का कथन ठीक है। उन्होंने अपना पुस्तक संग्रह इनको सौंप दिया। यह घटना भी इनकी विद्या को प्रकट करती है।

कल बदल देगा ज़माना

जागरण ले आज शोषित, कल बदल देगा ज़माना।
ओ सुनो! मन आज व्याकुल, कल नया होगा तराना॥
क्षुधित जनता शाप देगी, समस्त अवनी हिल उठेगी।
भूख है आरोप साथी, भूख ही खुद कह उठेगी।
गूंज जाएगी धरा फिर, दहक जाएंगे अगारे।
शोषकों की लाश पर वे खेल जाएंगे अंगारे।
आह दलितों की बनेगी, उस पल ईंधन पुराना। जागरण ले आज शोषित, कल बदल देगा जमाना॥
आज चिथड़ों से किसी की ढक रही है लाज साथी।
आज जूठन ही किसी का पालता है पेट साथी।
और पत्थर ही किसी के हैं बने बिस्तर गदेले।
और स्वप्नों से रहे हैं आज तक साकार खेले।
किंतु साथी है असंभव, अधिक अब छलना छलाना। जागरण ले आज शोषित, कल बदल देगा ज़माना॥
खून पानी सा तुम्हारा बह रहा है मानता हूं।
बोझ पशु सा तन तुम्हारा सह रहा है जानता हूं।
और मुझ से है नहीं यह भी छुपा तुम धीर भी हो।
किन्तु मुझ से है नहीं यह भी छुपा तुम वीर भी हो।
छोड़ दो अब धीरता को, वीरता का है ज़माना। जागरण ले आज शोषित, कल बदल देगा ज़माना॥
भय नहीं है आज गर अपमान तेरा हो रहा भी।
भय नहीं यदि आज तू इन्सान तक माना नहीं भी।
आज का भी शीघ्र साथी! रैन न होगा बसेरा।
कल नया होगा ज़माना कल नया होगा सवेरा।
उस सवेरे में दुलारे, निज स्वागत माप लेना। जागरण ले आज शोषित, कल बदल देगा ज़माना॥

—दीनानाथ टण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाकर परीक्षोपयोगी लेख—

प्रेमचन्द

[लेखक—श्री प्रेमकुमार जी गुप्त 'हिन्दी प्रभाकर']

मुंशी प्रेमचन्द जी ने अपने उपन्यासों और कहानियों के लिए सामग्री अलमारियों में रखी हुई पुस्तकों से न ले कर अपने निजी जीवन से ली है। उन के उपन्यासों में उन के जीवन की प्रतिछाया दृष्टि-गोचर होती है। अतएव मुंशी जी के उपन्यासों का अध्ययन करने से पूर्व उन के जीवन पर विचार कर लेना परमावश्यक है।

जीवन—परिचय

मुंशी प्रेमचन्द जी का जन्म बनारस नगर से ४ मील दूर स्थित लहमी नामक छोटे से ग्राम के एक निर्धन घराने में हुआ था। इनका असली नाम धनपतराय था। इन का केवल प्रारम्भिक जीवन ही नहीं, वरन् सारा ही जीवन दरिद्रता और निर्धनता में व्यतीत हुआ। ऐसा लगता है मानो निर्धनता उन के समस्त परिवार की सङ्गिनी बन बैठी थी। पंद्रह वर्ष की अवस्था में इन का विवाह हो गया, परन्तु वह उनके जीवन में सफल नहीं हो सका। इन्हों ने दूसरा विवाह बाल-विधवा शिव रानी से कर लिया। किन्हीं कारणों से इन्हें एफ० ए० और बी० ए० की परीक्षा में भी असफलता का मुख देखना पड़ा। निर्धनता के कारण इन को अनेक कष्ट झेलने पड़े, किन्तु इन्हों ने इतनी विपत्तियों को अपने सम्मुख पा कर भी पराजय नहीं मानी। और इस प्रकार अपने आत्म—गौरव और साहित्य-सृजन की भावना को मन्द न होने दिया।

८ अक्तूबर १९३६ ई० को मुंशी जी ने सदा के लिए इस संसार से आंखें मूंद लीं और हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र से विदाई ली।

यदि वास्तविकता को देखा जाये तो प्रेम जी का जीवन उन के उपन्यासों से कुछ कम नहीं था। बचपन से ही उन्हें सामाजिक कुरीतियों का शिकार होना पड़ा। इनका सारा जीवन एक प्रकार से निर्धनता और घोर विपत्तियों में ही व्यतीत हुआ 'प्रेम जी के उपन्यास उन के जीवन का सत्य और सुन्दर चित्र है।'

प्रेम चन्द साहित्य क्षेत्र में—

यों तो कहानी लिखना इन्हों ने (प्रेम जी) १९०१ से ही प्रारम्भ कर दिया था, परन्तु उस समय वे उर्दू—भाषा में ही लिखा करते थे। इनकी उर्दू-कहानियां उस समय के सर्वश्रेष्ठ पत्र 'जमाना' में प्रकाशित हुआ करती थी। सन् १९०५ में इन्हों ने अपने 'हम कुर्मा' नामक उर्दू उपन्यास का 'प्रेमा' नाम से अनुवाद प्रकाशित किया। सन् १९०६ में 'सोजे वतन' (देश की लगन) नामक उर्दू कथा-संग्रह इन्हों ने प्रकाशित करवाया जिसे अंग्रेजी सरकार ने विद्रोही ठहरा कर जब्त कर लिया। सन १९९७ से इन्हों ने गल्पें लिखना भी प्रारम्भ कर दिया था। सन् १०१३ में 'प्रताप' कार्यालय में स्व० श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी के सम्पर्क में इन्हें अनेकों सुअवसर प्राप्त हुए, साथ ही आचार्य द्विवेदी जी की सहायता भी इनको मिली। द्विवेदी जी के प्रभाव के कारण ही इन्हों ने अपने उपन्यासों की भाषा उर्दू से हिन्दी कर ली। हिन्दी मां का पला कब तक उर्दू की मस्जिद में पुष्प चढ़ाता रहता। अब तक कई उपन्यास, कथादि लिखने के बाद भी ये कुछ धुंधलास ही में रहे उस समय तक जब कि उनका 'सेवा सदन' प्रकाशित नहीं हुआ। इस उपन्यास के साथ ही इन्हों ने हिन्दी-उपन्यास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित कर लिया। 'प्रेम चन्द' रूपी रवि उदय होते ही अन्य छोटे २ नक्षत्रों की द्युति मंद पड़ गई।

प्रेम जी ने कुल मिला कर १० उपन्यास लिखें हैं। ११वां उपन्यास 'मंगल सूत्र' को वे अधूरा ही छोड़ चल बसे। इस के उपन्यासों का रचनाकाल इस प्रकार है—'प्रेमा-१९०५, वरदान-१९०६, सेवा-सदन-१९१६, प्रेमाश्रम-१९२२, निर्मला-१९२३, रङ्गभूमि-१९२५, कायाकल्प-१९२८, गबन-१९३१, कर्मभूमि-१९३२, गोदान-१९३६, और मंगल-सूत्र अधूरा छोड़ गये।

उपन्यासों का परिचय

(१)-'सेवासदन' में समाज की रुढ़िग्रस्त दुर्बलताओं और दुरवस्थाओं के अतिकरुण चित्र खीचें गए हैं। कलात्मक सौन्दर्य की दृष्टि से यह उपन्यास अत्यन्त सुन्दर बना है। लोगों का कहना है कि मुंशी जी शायद ऐसा उपन्यास कभी न लिख सकते। इस में वैश्याओं की कुप्रथा तथा उसके लिए समाज ही को दोषी ठहराया है।

(२)-'वरदान' में 'सेवासदन' की सी उत्कृष्टता नहीं मिलती। इस में पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं का चित्रण है। इस में अनमेल विवाह दिखा कर उस के दुष्परिणाम की ओर संकेत किया गया है। इसकी कथा वस्तु कुछ शिथिल है। यह प्रेम-प्रधान उपन्यास है।

(३)-'प्रेमाश्रम' में कृषक वर्ग की दयनीय दशा एवं मानवीय भावनाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। किसानों और जमींदारों का युद्ध देखते ही बनता है। इस उपन्यास में गांधी-वाद की झलक मिलती है।

(४)-'रंगभूमि' मुंशी जी जी के सर्व श्रेष्ठ उपन्यासों में एक है। इस में सत्याग्रह द्वारा आत्म-विश्वास एवं दिव्य विजय का महत्त्व प्रदर्शित किया है। मानव की आन्तरिक भावनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण है। पात्र 'सूरदास' द्वारा गांधीवाद का प्रतिपादन किया है।

(५)-'कल्पकाया' में जीवन व्यापार की मार्मिकता अवश्य है, किन्तु उस में घटनाओं की अलौकिकता अविश्वासनीय है। सामाजिक समस्याओं के चित्रण के साथ २ आध्यात्मिक रहस्यों का उद्घाटन भी हुआ है।

(६)-'गबन' हमारे सामाजिक उत्थान पतन का चित्र है। स्त्रियों का आभूषण प्रेम तथा पुरुषों के मिथ्या वैभव प्रदर्शन की कुप्रवृत्ति का दुष्परिणाम उपन्यास में दिखाया गया है इस में लेखक का दृष्टि-कोण आदर्श से यथार्थ की ओर उन्मुख हुआ है।

(७)—'कर्मभूमि' में राष्ट्र-निर्माण, दलितों, मजदूर किसानों की दशा को सुधारने की अनिवार्यता पर बल दिया है। कथा पर 'रंगभूमि' की छाया लक्षित है।

(८)-'गोदान' में ग्रामीण और नागरिक दोनों का चित्रण हुआ है। यह आपका सर्वश्रेष्ठ और अन्तिम उपन्यास माना जाता है।

उक्त विवेचन के अनुसार निष्कर्ष यह है कि यद्यपि मुंशी जी ने सभी के लिये पृथक २ कथानक लेने का प्रयत्न किया है, परन्तु सब में कथा-सूत्र एक ही सा है।

प्रेम चन्द की उपन्यास कला—

यों तो हिन्दी आख्यान-साहित्य के बीज सूफी संतों की प्रेम-गाथाओं में ढूंढ सकते हैं। इंशाअल्ला खां ने 'रानी केतकी की कहानी' लिख कर गद्य में इस साहित्यांग का श्री गणेश किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्पश्चात् अनेक उपन्यास हिन्दी साहित्य में दृष्टि-गोचर हुये, परन्तु उपन्यासों में वास्तविकता का आविर्भाव मुंशी जी के साहित्य क्षेत्र में पदार्पण करने बाद ही हुआ। मुंशी जी से पूर्व जो भी उपन्यास लिखे गये, वे प्रायः केवल मनोरंजन ही की सामग्री उपस्थित करते थे। वे या तो मानव-जीवन से सम्बन्ध नहीं रखते थे और या आंशिक रूप में उन में मानव-जीवन का चित्रण होता था। वस्तुतः ऐसे उपन्यासों का एकमात्र ध्येय मनोरंजकता प्रदान करना था। जीवन से दूर कल्पनालोक में चुनारगढ़ की पहाड़ियों में छिपे तिलिस्म को तोड़ने और उसके द्वारा पाठक के हृदय को जनजीव से दूर ले जाने में ही उपन्यास-साहित्यांग की महत्ता समझी जाती थी। देवकी नन्दन खत्री और गोपाल राम गहमरी आदि ऐसे ही उपन्यासकार थे। किंतु मानव जीवन की भावनाओं को लेकर उपन्यास लिखने वालों में प्रेमचन्द जी का नाम अग्रणी है। साहित्य और जीवन के सम्बन्ध की बात उन्हीं के उपन्यासों में सर्वप्रथम दिखाई देती है। परिवार, समाज और जीवन के सत् और असत् दोनों रूप उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से चित्रित हुए हैं। उन्हों ने जीवन रूपी चकमक पत्थर पर उपन्यासों को चमका दिया है। उन्होंने केवल साहित्य और जीवन तथा सामाजिक सम्बन्धों को ही स्थाई रूप नहीं दिया, अपितु अपने जीवन और साहित्य में साम्य भी स्थापित किया। उनके जीवन की करुणा, मानों उनके उपन्यासों में साकार हो उठी है।

गहराई तक पहुंचने वाले प्रेमचन्द जी, मानव हृदय के पूर्ण ज्ञाता हैं। मानव—हृदय की गहराई में घुस कर वह जिस तथ्य के दर्शन करा देते हैं, उस में उन की प्रतिभा का कौशल स्पष्ट लक्षित है। वह मानव-हृदय की स्थिरता और शिथिलता के प्रत्येक क्षेत्र को पहिचानते हैं। यही कारण है कि उपन्यासों के जिन पात्रों की सृष्टि की है, उन में उनकी आत्मा की ध्वनि स्पष्ट सुनी जा सकती है। वास्तव में वे भावनाओं को वैज्ञानिक विश्लेषण करने में अद्वितीय रहे हैं। आचार्य शुक्ल जी ने लिखा है-'मनुष्य की अन्तः प्रकृति का जो विश्लेषण आपके उपन्यासों में उपलब्ध होता है, वह अन्य किसी के उपन्यासों में नहीं। मानव जीवन की भांति उनका उपन्यास क्षेत्र भी अत्यन्त विस्तृत है, उस क्षेत्र में मानवता का महान् सन्देश लक्षित होता है। मुंशी जी उपन्यासों के बारे में एक विशेष दृष्टि—कोण ले कर चले हैं। "मैं उपन्यास को मानव-जीवन का चित्र मात्र समझता हूं। मानव चरित्र पर प्रकाश डाल कर उस के रहस्यों को खोलना उपन्यास का मूलतत्त्व है।"

इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द ने अपन्यासों के लिए जो कुछ भी सामग्री ली है वह सब अपने ही जीवन से ली है। ग्रामीण जनता के जीवन का उनके उपन्यासों में चित्रण इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है। इनका कहना है-उपन्यासकार को अपनी सामग्री आले पर रखी हुई पुस्तकों से नहीं, अपितु मनुष्यों के जीवन से लेनी चाहिए जो उसे नित्य ही चारों तरफ मिलते है।" वास्तव में, उनके उपन्यासों पर उनके निजी जीवन की छाप दीखती है।

वस्तुतः मुंशी जी के उपन्यासों का विषय सामान्य मानवता है, तथापि मुख्य रूप से उन्हों ने ग्रामीण जनता के जीवन और उसके सुधार की महान् समस्या को लिया है। ग्रामीण जीवन का चित्रण उनका प्रथम विषय है। तद्विषयक सभी समस्याएं उनके उपन्यासों में मिलती हैं। उपन्यासों की पृष्ठ भूमि में किसानों की झोपड़ियों के रुदन, करुणा और व्यथा की मंदाकिनी प्रवाहित दिखाई देती है। वे स्वयं भी देहात ही में रहते थे, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका जीवन भी अभावग्रस्त हो चुका था। अब उनका हृदय ग्रामीण जनता के दुःखों को देखते या सुनते ही पिघल जाता था। और फिर उनकी कलम से उनकी दयानीय दुर्दशा का बोलता चित्र उपस्थित हो उठता था। जैसा स्वाभाविक और करुण चित्र उन्हों ने देहात का किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। 'प्रेमचंद को किसानों और मध्यवर्गीय लोगों का प्रतिनिधि कहना अनुचित नहीं है। मुंशी जी ने गांव को देश की महत्त्व इकाई स्वीकृत किया है। उन के विचार में देश का उद्धार गांवों के उद्धार पर निर्भर है। जमींदारी उन्मूलन की ओर भी आपने संकेत किया है।

उपन्यासिक—आलोचना

उपन्यासिक तत्त्व पांच हैं वस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण, भाषा, कथोपकथन और उद्देश्य। इन तत्त्वों की दृष्टि से प्रेमचन्द जी के उपन्यासों की आलोचना की जायेगी।

(१) कथावस्तु—

यह उपन्यास का प्रधान तत्त्व है। मुंशी जी का इस तत्त्व पर पूर्णाधिकार है। उनकी कथावस्तु का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। उस में परिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, अध्यात्मिक और ग्रामीण वर्ग आदि का स्पष्ट चित्रण मिलता है। प्रायः सभी घटनाएं रहस्यात्मक न होकर स्वाभाविक हैं, जिनका निर्वाह भली भांति हुआ है। कहीं भी आकस्मिक घटनाएं आने नहीं पाई हैं। उन्होंने आने वाली घटनाओं का स्वयं या पात्र द्वारा संकेत कर दिया है। यथार्थ के नाम पर कहीं भी अश्लीलता का प्रतिपादन नहीं हुआ है। घटनाओं का चुनाव रुचिकर और सतर्कता से किया गया है। प्रत्येक छोटी बड़ी घटना का सूक्ष्म म चित्र उपस्थित किया गया है। उनकी कथावस्तु में मौलिकता, रोचकता प्रवाह, प्रभावोत्पादकता, सरलता आदि सर्व गुण विद्यमान है। तथापि कहीं २ उनके कथानकों में दोष पाए जाते हैं। कहीं २ तुच्छ और नगन्य बातों का बहुत विश्लेषण किया गया है। घटनाओं की आवृत्ति प्रायः प्रत्येक उपन्यास आगई है। कहीं २ तो घटनाओं का निर्वाह ठीक प्रकार से न होने के कारण बिगड़ भी गया है। शायद मुंशी जी इस बात को कभी २ भूल जाते हैं कि 'मुझे यहां क्या लिखना और नहीं लिखना चाहिए।

(२) पात्र और उनका चरित्र-चित्रण—

पात्रों के स्वभाव का चित्र अंकित करना ही चरित्र चित्रण कहलाता है। मुंशी जी इस क्षेत्र में अद्वितीय रहे हैं। आप ही ने हिन्दी उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण पद्धति का प्रारम्भ किया है। चरित्र चित्रण करने की दो प्रणालियां हैं—(१) विश्लेषणात्मक तथा (२) अभिनयात्मक। पहली प्रकार की प्रणाली में उपन्यासकार स्वयं पात्रों का परिचय देकर उनके स्वभाव का विश्लेषण करता है। तथा दूसरी प्रणाली में लेखक पात्रों के सम्बन्ध में स्वयं कुछ न कह कर पात्रों के सम्बन्ध में स्वयं कुछ न कह कर पात्रों के वार्तालाप आदि द्वारा उनके चरित्र को प्रकट करता है। प्रेम जी ने इन दोनों ही पद्धतियों को अपनाया है, परन्तु अधिक उपयोग अभिनयात्मकता ही का रहा है। जहां कहीं पहली पद्धति को अपनाया है, वहां भी नीरसता तथा अस्वाभाविकता नहीं आने पाई है। मुंशी जी के पात्र स्वाभाविक और सजीव होते हैं तथा उनके चरित्र का पूर्ण रूप से विकास होता है। पात्रों की आन्तरिक भावनाओं का अद्भुत तथा सफल चित्र उपस्थित करना मुंशी जी की अपनी ही देन है। प्रायः सभी पात्र काल्प-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निक न होकर हम जैसे चलते-फिरते मनुष्य हैं।

मुंशी जी ने प्रायः सभी पात्र समाज के किसी न किसी वर्ग से चुने हैं, जो किसी वर्ग विशेष का प्रति निधित्व करते हैं। वर्ग गत पात्रों के अतिरिक्त एक दो आदर्शपात्र भी चुने जाते हैं। इन आदर्श पात्रों के चरित्र में कहीं कहीं अस्वाभाविकता आ जाती है। 'कर्म भूमि' उपन्यास के अतिरिक्त सभी उपन्यासों के पात्रों में शील की एक रूपता कुछ खटकती है।

(३) भाषा--

मुंशी जी का भाषा पर पूरा अधिकार है। यद्यपि ये पहले उर्दू भाषा ही का प्रयोग करते थे। इनकी भाषा सरल, सरस, स्वाभाविक और भावोत्पादक है। पात्र और परिस्थिति के अनुरूप होना मुंशी जी की भाषा की बड़ी विशेषता है। कहीं कहीं प्रान्तीय भाषा के शब्दों का प्रयोग भी मिलता है फिर भी आप की भाषा सुन्दर बन पड़ी है। मुहावरों के प्रयोग ने भाषा पर अलंकार का काम किया है। कहीं कहीं वाक्यों ने सूक्तियों का रूप धारण कर लिया है।

(४) कथोपकथन--

पात्रों के परस्पर के संवाद या बात-चीत को कथोपकथन कहते है। यह उपन्यास की कथावस्तु नामक शरीर को पुष्ट और पात्रों के स्वभाव का विकसित चित्र अंकित करने वाला होता है। इसका उपन्यास में बड़ा महत्व है।

मुन्शी जी ने कथानक का अधिक से अधिक भाग संवाद के रूप में उपस्थित किया है। इन्होंने कथोपकथन का प्रयोग दो उद्देश्यों से किया है—(१) कथानक को गति देने के लिये तथा (२) पात्रों के चरित्र का उद्घाटन करने के लिये। इनके कथोपकथनों की प्रधान विशेषता यह है कि वे भाषा और पात्रानुकूल हैं। इतना होते हुये भी सम्वाद में उपदेशात्मकता का रूप आ गया है, जो अरुचिकर और असरस प्रतीत होते हैं। किन्तु यह अभाव एक-आध ही जगह आ पाया है, अधिक नहीं।

इनके उपन्यासों की शैली विषय तथा वातावरणानुकूल ही है जो अत्यन्त प्रभावोत्पादक है।

(५) उद्देश्य—

मुन्शी जी मानव जीवन की समीक्षा ही साहित्य का मुख्य ध्येय मानते हैं। इसीलिये उनके उपन्यासों में किसी न किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन मिलता है। वह जीवन-समीक्षा करते हुये सत्य का साथ कभी नहीं छोड़ते। उन्होंने जीवन का यथार्थ और सत्य चित्र उपस्थित करने का प्रयत्न किया है। "यथार्थ के साथ साथ आदर्श उपस्थित करना ही उनकी अपनी ही देन है। 'है' और 'होना चाहिये' का सुन्दर समन्वय हुआ है।"

प्रेमचन्द जी कहानीकार और नाटककार के रूप में।

कहानीकार रूप में—

मुंशी प्रेम जी ने एक दर्जन उपन्यासों के अतिरिक्त ३०० कहानियां हिंदी साहित्य को प्रदान की है। यद्यपि आप को उपन्यास क्षेत्र में 'उपन्यास सम्राट्' की उपाधि प्राप्त हुई है। किंतु फिर भी आपकी कहानियां कुछ कम रोचक व हृदयग्राही नहीं हैं। जनवाणी के विपरीत आप एक सफल और कुशल उपन्यासकार के साथ ही साथ कुशल कहानीकार भी बने हैं। आप को दोनों ही क्षेत्रों में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है।

"मुंशी जी उपन्यासकार की अपेक्षा कहानीकार के रूप में अधिक सफल हुये है" यह कहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुचित नहीं प्रतीत होता। मुंशी जी के उपन्यासों में एक ही विषय को घुमा फिरा कर उपस्थित किया है, साथ ही घटनाओं की भी पर्याप्त आवृत्ति रही है। उपन्यासों के सभी पात्र एक ही वर्ग के तथा उनका स्वभाव भी एक ही सा रहा है। परन्तु कहानियों में जीवन की एकरूपता का सफलचित्रण हुआ है। उपन्यासों की तरह कहानियों में अनावश्यक तत्व कहीं नहीं आने पाये है। कहानियों में उपन्यासों की अपेक्षा आदर्शवादिता का अभाव है। उपन्यासों में कहीं कहीं तो गहन उपदेशात्मकता आ गई है, किन्तु कहानियों में कहीं नहीं आई। कहानियों में एक रूपता और कलात्मकता विशेष रूप से स्पष्ट है।

कहानियों की विशेषताएँ —

(१) सोद्देश्यता—जितनी भी कहानियां लिखीं हैं, सभी में जीवन की समीक्षा के रूप में कोई न सिद्धान्त अवश्य समाविष्ट हुआ है। कहानियों में समाज के प्रायः सभी अगों का चित्रण हुआ है। राजनीतिक दांव पेंच, सामाजिक समस्यायें, मर्यादानीति अनीति पाखण्ड आदर्श यथार्थ आदि सभी कुछ कहानियों में है। प्रत्येक कहानी का उद्देश्य विशेष है।

(२) कौतूहलता—कहानियों की घटनाओं में अप्रत्याशिता होती है, किंतु कहीं भी अस्वाभाविकता नहीं आने पाती।

(३) मनोवैज्ञानिक विश्लेषण—कहानियों के पात्रों का सत्य पर आधारित मनोवैज्ञानिक चरित्र चित्रण किया गया है।

(४) कहानियों की व्यंजनात्मक ढंग की शैली रही है, जिसमें प्रभावोत्पादकता अधिक बढ़ गई है।

नाटककार के रूप में—

प्रेमचंद जी साहित्यिक जीवन में एक बार नाटक-क्षेत्र में भी आये, किंतु खेद है कि वह बहुत बुरी तरह से असफल रहे। आपने केवल दो नाटक (कर्बला और संग्राम) लिखे थे। जो वस्तु, चरित्र चित्रण, सम्वाद आदि सभी दृष्टियों से हलके हैं। गीताभाव ने उन्हें और भी हीन बना दिया है।

अच्छा होता कि प्रेम जी इस क्षेत्र में पदार्पण ही न करते।

प्रभाकर परीक्षोपयोगी लेख—

रस विवेचन

[ले०—प्रेमकुमार गुप्ता हिन्दी प्रभाकर]

रस का लक्षण – सहृदय मनुष्यों के हृदय में कुछ भाव संस्कार रूप से विद्यमान रहते हैं, जो श्रव्य काव्य के पढ़ने, सुनने अथवा दृश्य काव्य के देखने से जागृत हो जाते हैं। इससे पाठक, श्रोता या दर्शक को एक विशेष प्रकार का आनन्द प्राप्त करता है, जिससे वह शब्दों द्वारा प्रकट नहीं कर सकता। इसी अलौकिक एवं अवर्णनीय काव्यानंद को रस कहते हैं।

रस का स्वरूप – रस आनंद स्वरूप है। यह अलौकिक आनंद प्रदान करता है। रस काव्य की आत्मा है। बिना 'रस' के काव्य अपना ध्येय पूरा नहीं कर सकता। 'आनंद' ही का दूसरा नाम 'रस' है।

रस की उत्पत्ति—"विभाव, अनुभाव तथ संचारी भाव के संयोग से होने वाली स्थायीभाव की अभिव्यक्ति को 'रस' कहते हैं। इस परिभाषा के अनुसार रस के अंग हैं:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. *विभावः*—रति आदि स्थायीभावों को जगा देने के जो कारण हैं वे विभाव कहलाते हैं। इसके दो भेद हैं:—

(अ) *अवलम्बनः*—'जिसके विषय में स्थायीभाव प्रवृत्त होता है, उसे आलम्बन विभाव कहते हैं।' जैसे शृंगार रस में नायक नायिका एक दूसरे के आलम्बन हैं।

(ब) *उद्दीपनः*—'आलम्बन विभाव के द्वारा उद्दीप्त हुये स्थायीभावों को उद्दीप्त करने वाले कारणों को उद्दीपनविभाव कहते हैं।' जैसे चाँदनी शीतल मंद सुगन्ध उपकरण शृंगार रस में उद्दीपन विभाव हैं।

२.*अनुभावः*—आलम्बन विभाव के द्वारा अभिव्यक्ति तथा उद्दीपन विभाव के द्वारा उद्दीप्त होने पर भावों के आश्रय में जो चेष्टायें होती हैं, उन्हें अनुभाव कहते हैं।'

३.*संचारी भावः*—स्थायी भाव के जगाने से लेकर रस रूप में परिणत होने तक बीच २ में प्रकट तथा लुप्त होने वाले भावों को संचारीभाव कहते हैं।' इनका मुख्य कार्य स्थायी भाव को पुष्ट करना है। यह संख्या में ३३ हैं। इस भाव को व्यभिचार भाव भी कहते हैं।

४. *स्थायी भावः*—ये भाव सहृदय हृदय प्रत्येक मनुष्य के हृदय में स्वभाव से ही वर्तमान रहते हैं। प्रसांगानुकूल ये उद्दीप्त होते रहते हैं।

चार्ट नं० १

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्थायीभाव	रति	हास	शोक	क्रोध	उत्साह	भय	घृणा	विस्मय	निर्वेद	वात्सल्य
रस	शृङ्गार	हास्य	करुण	रौद्र	वीर	भयानक	विभत्स	अद्भुत	शांत	वात्सल्य

(a) *अविरोधीरसः*—१. वीर का अद्भुत, रौद्र।
२. शृंगार का अद्भुत हास्य
३.भयानकका अद्भुत केसाथ

(b) *कुछ विरोधी रसः*—

(१) शृंगार का करुण, बीभत्स, वीर, रौद्र, भयानक।
(२) हास्य का भयानक, करुण।
(३) करुण का हास्य, शृंगार।
(४) रौद्र का भयानक, हास्य, शृंगार।
(५) वीर का भयानक, शांत।
(६) भयानक का शृंगार, वीर रौद्र, हास्य शांत
(७) बीभत्स का शृंगार।
(८) शांत का शृंगार, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक

(c) *विरोध वर्गीकरणः*—यह तीन प्रकार का होता है:—

(१) आलम्बन विरोध (२) आश्रय विरोध (३) नैरतन्य विरोध रसों की असंगत संगति)

रस आश्रय अथवा रस परिपाक प्रक्रियाः—

आचार्य भट्ट लोलाट के अनुसार विभाव कारण और रस कार्य है इस प्रकार रस की उत्पत्ति नायक में होती है। लेकिन यह बात विश्वास योग्य नहीं है, क्योंकि आलम्बन अथवा आश्रय के भाव लौकिक होते हैं। और लौकिकभाव सदैव सुख दुख दोनों देते हैं, इसलिये रस का आश्रय नायक नहीं कहा जा सकता।

शंकुक जी के मतानुसार दर्शक नायक का अनुमान कुशलता तथा चतुरता पूर्वक अभिनय करने वाले नट में समझ कर रस की अनुभूति करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अतिरिक्त भट्ट नायक ने दर्शक के हृदय में रस की उत्पत्ति मानी है। इनके अनुसार मूल पात्रों के भाव अभिधा, भावकत्व और भोजकत्व तीन शक्तियों द्वारा विशेष न रहकर साधारण बन जाते हैं, जिनको लोकमात्र सरलता से अनुभव कर सकता है।

परंतु अभिनव गुप्त ने भट्ट जी के द्वारा वर्णित तीन शक्तियों को प्राणभूत नहीं माना। इनके कथनानुसार केवल सहृदय दर्शक के हृदय में ही रस की निष्पत्ति होती है। आजकल यही मत सम्मान्य है।

वास्तव में रस का आश्रय 'सामाजिक' है। उसके हृदय में स्थायी भाव सदा प्रस्तुत रहते हैं जो काव्य द्वारा पर्याप्त सामग्री पाकर, 'रस' रूप में परिवृत हो जाते है। (रस की उत्पत्ति केवल सहृदय दर्शक के ही हृदय में होती है। दर्शक में केवल स्थायीभाव के ज्ञान मात्र ही से रस उत्पन्न नहीं होता)

कभी कभी रस ठीक प्रकार से परिपक्व नहीं होता। इसके निम्न चार कारण हैं:—

(१) जबकि विभाव, अनुभाव आदि उत्पन्न होकर ही रह जाते हैं, आगे तीव्र नहीं होने पाते।

(२) एक भाव के बाद दूसरे भाव की प्रबलता से रस-परिपाक ठीक नहीं होने पाता।

(३) जब एक भाव मनको अपनी ओर खींचता हैं और दूसरा अपनी ओर तब भी रस प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न हो जाती है।

(४) एकही साथ कई भाव हृदय में उत्पन्न होने के कारण रस परिपाक नहीं होने पाता।

"प्रेम" एक अध्ययन—और साधना

[लेखक—प्रह्लाद सिंह 'आराधक' सहारनपुर]

प्रेम क्या है? इस प्रश्न का उत्तर कठिन है। प्रेम मानवीय जीवन की प्रेरक शक्ति है। वह जीवन की प्राणवायु है जो उसके चैतन्य भाव की साक्षी देता है। प्रेम विश्व के प्रति अनन्त मैत्री की भावना है। प्रेम के द्वारा हम स्थूल भेदों के भीतर व्याप्त एकत्व के अन्तर्यामी सूत्र तक पहुँचने का प्रयत्न करते हैं और उसे पहचान कर उसके प्रति अपने मन को विकसित करते हैं।

वस्तुतः प्रेम की भावना संसार में स्वभाव से निहित है। क्या वह स्वतः प्रमाण नहीं है कि यह विश्व प्रेम का प्रकाशमात्र है? अणु का अणु से कौन संयोग करता है और परमाणु परमाणुओं से कैसे जुड़ जाते हैं? महमालिकाओं को एक दूसरे की ओर कौन दौड़ाता है? वह क्या है जिससे मनुष्य मनुष्य की ओर खिंचता है और पुरुष स्त्री की ओर, स्त्री पुरुष की ओर, जीव जीव की ओर औरसमूचा विश्व मानों एककेन्द्र की ओर? यह जिसे हम प्रेम कहते हैं वह है जो छोटे से छोटे अणु से से लेकर उन्नतम जीव में प्रकट हो रहा है। यह प्रेम ही सर्वशक्तिमान और सर्व व्यापी है यह प्रेमस्वरूप परमात्मा ही चेतन तथा अचेतन सृष्टि में व्यष्टि तथा समष्टि में आकर्षण स्वरूप में प्रकट हो रहा है। विश्व को गतिमान करनेवाली यदि कोई शक्ति है तो प्रेम है। रोम-रोम में रमने वाला प्रेम ही राम है।

प्रेम का अभाव भी एक मात्रा में विद्वेष का ही एक रूप है, क्योंकि प्रेम चेतनता का पूर्ण रूप है। प्रत्येक वस्तु का जो भी अस्तित्व रखती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोजन प्रेम में ही पूरा होता है। अतः प्रेम केवल एक भावना नहीं है, यह सत्य है, यह वह कारण है जो प्रत्येक वस्तु के निर्माण का मूलस्रोत है। यह पूर्ण चेतनता की वह स्वच्छ श्वेत किरण है जो आनन्द से उद्भूत होती है। अपनी चेतनता को प्रेम की ऊँची सतह पर ले जाकर और विश्व भर में इस इसी प्रेमाप्त चेतनता का विस्तार करके ही हम ब्रह्मविहार, या असीम आह्लाद में, एकात्मयता प्राप्त कर सकते हैं।

प्रेम स्वतः अनन्त उपहार देता है। किन्तु उन उपहारों का कुछ भी अर्थ नहीं है यदि हम उन द्वारा उस प्रेम को नहीं पाते जो स्वयं उपहार दे रहा है। उसे पाने के लिये हमारा मानस भी उसी प्रेम से पूर्ण होना चाहिये। प्रेमरहित हृदय से उपहार लेने वाला केवल वस्तु की उपयोगिता जान कर उपहार लेता है। यह उपयोगिता तो क्षणिक और एक पक्षी है। यह केवल हमारी कुछ क्षण के लिये उद्दीप्त इच्छा को शान्त करती है। इच्छा की शान्ति के उपरान्त य उपयोगिता ही भार बन जाती है। लेकिन एक उपहार अथवा प्रेम चिह्न हमारे लिये स्थायी मूल्य की वस्तु बन जाता है यदि हम उसे प्रेमभाव से ही स्वीकार करें। उपहार की उपयोगिता भावना में है। वह स्वयं में पूर्ण है। किसी अन्य अर्थ की सिद्धि का साधन नहीं है। उपहार जब साधन बन जाये तो उपहार नहीं रहता।

प्रश्न यह है कि हम प्रेम को जो आनन्द का पूर्ण उपहार है, किस रीति से ग्रहण करें? साधारणतः हम अपनी भोग कामनाओं और विलासी चेष्टाओं से इसे सस्ता बना देते हैं और अन्त में हम इसे केवल अपनी पूर्ति का साधन मान बैठते हैं और उस नादान बालक की तरह जो पुस्तकों के पन्ने फाड़ फाड़ कर खेलते हुये आनन्दित होता है। प्रकृति की उधेड़ बुन में ही जीवन का आनन्द समझ बैठते हैं। प्रेम का सच्चा मूल्य हमारे लिये उसी प्रकार रहस्यमय बना रहता है जैसे पन्ने फाड़ कर खेलने वाले के लिये पुस्तक का ज्ञान।

प्रेम की साधना के क्रम में अनेक मनोवैज्ञानिक क्रियाएँ अनुभव में आया करती हैं। अन्तरात्मा की चेतना व्यक्ति में किंचित् दृढ़ होने में अवश्य ही, समय लगता है। मन, प्राण और शरीर की स्वार्थोन्मुख प्रवृत्तियां सरलता से दूर हो जाती और उनके स्वभाव बदले बिना, उन्हें रूपान्तरित किये बिना, प्रत्यक्ष ही आन्तरात्मिक, चेतना स्वामित्व प्राप्त नहीं करती। मन, प्राण और शरीर के रूपांतरित करने का क्रम तनिक लम्बा होता है और उसमें अनेक प्रकार के मनोवैज्ञानिक पहलू होते हैं। चेतन मन जिसे हम सामान्यतः अपना सम्पूर्ण व्यक्तित्व मानते हैं, अत्यन्त क्षुद्र वस्तु है इसके अतिरिक्त अवचेतना एक अन्धकारमय अथाह कुँआ है और अति चेतना अपार विशाल आनन्दजन्य क्षितिज। व्यक्ति उत्तरोत्तर मन और अवचेतन मन शुद्ध करता हुआ अतिचेतन मन में विकसित हो जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अपने विरोधी रूप से घृणा से संघर्ष करते २ प्रेम तत्व सीढ़ी पर सीढ़ी चढ़ता हुआ शारीरिक अनुभूति के क्षेत्र से आभ्यन्तरिक क्षेत्र में पहुंचने में सफल होता है।

अन्तरात्मा की चेतना वास्तव में द्वन्द्वमय नहीं। यह सम्पूर्णता के भाव से गठित है, और जैसे यह साधक में उत्तरोत्तर प्रकट होती जाती है वैसे ही वह अपने मानसिक द्वन्द्वमय जीवन को अतिक्रांत करता जाता है। उसके जीवन में एक सरलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा स्वभाविकता आती जाती है। वह पुण्य और पाप, कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के तीव्र विरोध भाव से मुक्त होता जाता है। वह न कर्त्तव्य पालन के लिए संघर्ष करता है, और न फिर असफल रहने पर ग्लानिजनक प्रायश्चित। वह समर्पण भाव में तथा समतापूर्वक और स्वभाविक तरीके से गम्भीर अन्तः प्रेरणा की मांग करता है और उसी को अपने जीवन में मूर्त्तरूप करने का यत्न करता है। असफल रहने पर वह क्रम में नए सिरे से सफलता की अभीप्सा करता है और विरोधी हीन विचारों का विवर्जन करता हुआ तब तक साधना में निरन्तर लगा रहता है जब तक अपने जीवन को उसके अनुकूल नहीं बना लेता।

शनैः २ उत्तरोत्तर विकसित प्रेमानुभूति जब पूर्ण आनन्दमय अवस्था को प्राप्त होती है तब समस्त आत्मा में एक मात्र चिदानन्द मयी अनुभूति का शुभ अभ्यास रह जाता है। आनन्द मय तथा विज्ञान-मय स्तरों में प्रेम की किसी भी प्रति क्रियात्मक अनुभूति घृणा, विराग या विद्वेष के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। तब मानस सब प्रकार के द्वन्द्वात्मक संघर्षों के परे पहुँच जाता है। पर उस स्थिति को पहुंचने से पूर्व अन्न-मय, मनो-मय, विज्ञान-मय प्राण-मय और आनन्द-मय स्थितियों की द्वन्द्वानुभूति होना पूर्ण स्वभाविक और साथ ही अत्यन्त आवश्यक है। विकास का क्रम, प्राकृतिक नियम के अनुसार स्थूल से सूक्ष्म, सूक्ष्म से सूक्ष्म-तर और सूक्ष्मतर से सूक्ष्म-तम स्तर की ओर होता हुआ चलता है। इन द्वन्द्वों और आन्तरिक संघर्षों से गुजरे बिना द्वन्द्वातीत, विशुद्ध चिन्मय प्रेम का अनुभव नहीं किया जा सकता। इस लिए आवश्यक है कि क्रमिक और नियमित प्रगति से आगे बढ़ा जाय। प्रारम्भ में प्रेम की स्थूल अवस्था की वास्तविकता समझ कर धीरे २ सूक्ष्म अवस्था की ओर कदम बढ़ाए जाएं, उसके पश्चात् सीढ़ी पर सीढ़ी चढ़ते हुए सूक्ष्म-तर और फिर सूक्ष्म-तम अवस्था की ओर प्रगति जारी रखी जाये। आधुनिक-तम मनो-विज्ञान भी हमें यही शिक्षा देता है।

प्रेम तत्व की मूल भावना एक ही होती है और वह विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न रूप धारण करती रहती है। स्त्री भाव और पुंभाव के पारस्परिक आकर्षण में प्रेम का जो मूल तत्व वैयक्तिक रूप में वर्तमान है वही संकीर्ण व्यक्तिगत रूप को लांघ कर विश्व मानव के समष्टि-गत प्रेम की अनुभूति में बदल जाता है। 'वसुधैव कुटम्बकम्' की मूल भावना प्रेम-तत्व का विकसित रूप ही तो है। समय २ पर जिन इने-गिने प्रतिभा सम्पन्न महापुरुषों ने प्रेम के उदात्तीकरण की महान् स्थिति का अनुभव कर के मानवीय समाज में उसकी महत्ता का प्रचार किया उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि मानव जाति घृणात्मक तथा विरोधी प्रवृत्तियों से संघर्ष करते २ अन्ततः उन पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकने की बीज शक्ति अपने भीतर रखती है और एक दिन प्रेम की वीणा से समस्त विश्व को निनादित कर सकती है। आज भी जब मानव समाज महायुद्ध की भयावह विभीषिकाओं से संत्रस्त है तो इस महा संघर्ष के फलस्वरूप विश्वव्यापी प्रेम अनुभूति एक नूतन सुविकसित और समुन्नत रूप में स्वतः ही निखर आएगी। शान्ति और युद्ध की सत् और असत् प्रकृतियों का सामूहिक द्वन्द अनिवार्य है। मगर इस संघर्ष में प्रेम तत्व की ही अन्तिम में महाविजय होगी और अंततः संसार में तब ही उल्लास और सौहार्द की लहर आएगी।

---o---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—

भिड़ों का छत्ता

[लेखक—श्री नन्दकिशोर जी, हरगुलाल एण्ड सन्स अम्बाला छावनी]

लक्ष्मण लाला के कमरे में एक भिड़ों का छत्ता लग गया था। यह लगा भी एक दम नहीं था, बड़े शनैः शनैः। पहले दो चार भिड़ें आईं फिर दस बीस हुईं, फिर सौ दो सौ होते होते एक बड़ा सा जमघटा हो गया। वास्तव में बात यह थी कि लक्ष्मण लाला और उनकी ललाइन बड़े दयालु और सज्जन थे। भिड़ों की हत्या तो दूर, कीड़े मकोड़ों से भी बच बच कर चलते थे वह सोचते थे कि पुराने जन्म के पापों को अब भोग रहे हैं। इस जन्म में जीव हत्या करके परलोक में क्या ठिकाना है।

आरम्भ में तो भिड़ों ने भी लाला और ललाइन की कृपा का बहुत बदला चुकाया क्षण भर के लिये भी दुःख तो क्या उन्हें असुविधा भी न होने दी। ऐसे दयालु मालिक मालकिन के मकान में रह कर उनके ही विरुद्ध अत्याचार करना, इन विषैले जन्तुओं को भी स्वीकार न था। परन्तु जीव जन्तुओं में मानवता कहां, वर्षों दूध पिलाने के पश्चात् भी विषैला सांप डंक मारने से नहीं चूकता है। एक दिन जो एक भिड़ के मन में आया तो लाला जी के छोटे जग्गू के गाल पर काट खाया। बच्चा तिलमिलाया और थोड़े ही क्षणों में आंख और मुँह सूज गया।

फिर क्या था ललाइन आपे से बाहिर हो गई करुणा और दया के स्थान पर कोप और प्रतिशोध की ज्वाला भभक उठी। मातृप्रेम ने धार्मिक दुर्बलता पर विजय पाई लक्ष्मण लाला को बुलाया गया और दो मिनट में निर्णय हो गया कि भिड़ों के छत्ते को एक क्षण भी न सहन किया जाय और इसको मार फूँक कर घर से बाहर फेंक दिया जाये।

(२) मगर इस कठिन काम को करे तो कौन करे। भिड़ों के छत्ते को तोड़ना सरल काम नहीं था और लक्ष्मण लाला तो वैसे ही भरकम आदमी थे। वह यह काम करते कैसे अच्छे लगते। सुबह से शाम तो परचून की दुकान पर हो जाती। अभी एक ग्राहक आया, अभी दूसरा, अभी आटा तोला अभी नमक। उन्हें फुरसत कहां थी और ललाइन भी दया धर्म की मूर्ति उनसे भी ऐसा क्रूर काम होना सर्वथा असम्भव था। एक बड़ी समस्या आन पड़ी।

लक्ष्मण लाला इसी चिन्ता में दुकान पर बैठे थे इधर दुकान की बिक्री की चिन्ता उधर जग्गू की तकलीफ़ का ध्यान और फिर भी भिड़ों के छत्ते के हटाने की समस्या सोचते थे कि मुफ्त में तो यह काम कौन करने लगा है। दो चार आने के पैसे लेकर कोई मान जाय तो चलो यह चोट भी सहन हो जाये। छत्ते रोज रोज कहां तोड़ने पड़ते हैं। मगर आज कल समय ही बदल गया है। जब से स्वराज्य मिला है, दो चार आने फकीर भी लेते कतराते हैं। लोगों का मिजाज कुछ ऐसा बिगड़ गया है कि वह पैसा को पैसा ही नहीं समझते हैं। लाला जी मन में व्याकुल थे कि किस को बुलायें और किसको कहें।

इतने में ही मिट्ठू आया बोला "लाला जी चार आने का सौदा तोल दो। सौदा वौदा कुछ नहीं लाला जी चमक कर बोले, 'अबे दो रुपये नौ आने तो अभी तेरे तरफ हैं' तीन महीने हो गये। क्या जब चार रुपये हो जायेंगे तभी चुकायेगा। न भाई, न, पहले पैसे दो फिर आगे के सौदे की बात करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्ठू के पास दो रुपये नौ आने कहां थे। दो रुपये चार आने का सौदा लिये उसे तीन महीने हो गये थे। ५ आने सूद के भी पड़ गये वह मायूस हो कर बोला लाला जी पहली को सारा भुगतान कर दूँगा। दो रुपये नौ आने के स्थान पर तीन रुपये दे दूँगा। पर लाला जी ने एक भी न मानी।

अकस्मात् लाला जी को विचार आया कि मिट्ठू से क्यों न भिड़ों का छत्ता तुड़वाया जाये। शायद् ब्याज ही ब्याज में, यह काम बन जाये। वह बोले अरे मिट्ठू देख तो सही एक काम करेगा, अरे यार.. वहां कमरे में एक ततैइयों का छत्ता लग गया है। तू उसे उखाड़ दे। देख तो आज एक मुसरे ततइये ने जग्गू के काट लिया। रो रहा है, बेचारा। मिट्ठू को बड़ी चिन्ता हुई वह घर में घुस गया और जग्गू को गोदी में लेकर प्यार करने लगा और बोला "बड़ी हरामजादी होती है बैरैयन। सारी को जला डालूँगा"। लाला जी बड़े प्रसन्न हुये और कहने लगे भाई मिट्ठू यह काम कर दो तो आठ आने दूँगा।

आठ आने का नाम सुन कर मिट्ठू की आंखें खुल गईं कितनी बड़ी रकम है। वह सुबह से शाम तक मजदूरी करके एक रुपया कमाता। अब आधे घण्टे में आठ आने प्राप्त होंगे। उसके हर्ष की कोई सीमा नहीं रही। वह उन बेसमझ लोगों में से न था जिन्हें स्वराज्य के नशे ने मदहोश कर दिया था। जो रुपये को दुअन्नी समझने लगे थे। मिट्ठू अभी तक जानता था कि चार घण्टे की कमाई भी आठ आने कठिनता से प्राप्त होते हैं।

वह चकित था कि जरा सी बात पर लक्ष्मण लाला ने उस को आठ आने देने को कह दिया। इस कलियुग में भी कैसे दयावान जीव बसते हैं। कुछ सोच कर वह बोला अब तो मैं मजदूरी पर जा रहा हूं। कल सुबह ही आकर इन्हें मार दूँगा। सालिन को जला दूँगा।

अब लक्ष्मण लाला सोचने लगे इधर तो अठन्नी देनी कर ली उधर एक बोतल मिट्टी का तेल भी चाहिये। मिट्टी का तेल तो लाला जी स्वयम् भी बेचते थे राशन में। और दो चार दिन में एक बोतल का बचा लेना उनका सदा का काम था। मगर यह बोतल भी तो आठ आने में बिक जाती वह यही सोच रहे थे कि इतने में ही बाबू बनवारी लाल दुकान पर आ गये। लाला जी की और कोई बात थी ही नही, भिड़ों के छत्ते का सिलसिला आरम्भ कर दिया। कैसे भिड़ें लगीं कैसे इन्होंने इसका लगना सहन किया कैसे एक भिड़ ने जग्गू को काट लिया और कैसे इन्होंने आठ आने मिट्ठू को देने कर दिये। अब समस्या थी एक बोतल मिट्टी के तेल के देने की।

लक्ष्मण लाला बोले, आप तो जानते ही हैं लाला जी यह तो गंगाजली उठा रखी है जो कंट्रोल की चीजों में जरा भी बेईमानी करूँ। न भाई! बड़ी खतरनाक बात है। पर बड़ी मुश्किल आन पड़ी है। एक बोतल तेल की हमारे लगी हुई है। बिजली नहीं तो मोमबत्ती जला कर एक बोतल तेल बचा लेता। यह कह कर लाला जी गम्भीर हो गये। बाबू बनवारी लाल बाजार के बड़े सज्जन पुरुष थे खद्दर पहनते थे। बड़े दयालु और समाज सेवक, बोले! लाला जी यह कौन बड़ी बात है मुझसे एक बोतल ले लेना और जग्गू की खबर देना, टाटरी घिस कर लगा देना इससे लाभ न हो तो माचिस का मसाला घिस देना सुबह तक ठीक हो जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात को लक्ष्मण लाला लौट कर आये तो जग्गू की मां को सारी बात बताई। आठ आने का नाम सुन कर तो जग्गू की मां के बदन में आग लग गई। एक दम इतने पैसे देने की क्या बात थी? क्यों सोच समझ कर काम नहीं करते। क्या इस तरह घर चल सकेगा। १५ मिनट का काम और आठ आने देने को कह दिया बिना सोचे समझे। लक्ष्मण लाला को भी होश आई। पता नहीं कभी कभी उनकी समझ को क्या हो जाया करता है। दो आने सोचे थे। पर मुँह से आठ आने निकल गये। मगर जो पैसे किसी के भाग के होते हैं देने ही पड़ते हैं। किसी जन्म का कर्ज़ा देना होगा। इस प्रकार दो तीन घण्टे तक जग्गू की मां को और अपने आप को ढाढ़स दी और दिल मजबूत किया।

जग्गू की मां लक्ष्मण लाला से बहुत चतुर थी। स्त्री थी, नहीं तो उनसे भी अच्छी दुकान चला कर दिखाती। बोली अरे! बड़े दाता जी! आठ आने तो दिये मगर यह आठ आने का तेल क्यों खर्चते हो। बाबू जी ने दिया है कहीं वेच डालना। आठ दस आने का माल ज़मीन पर लुढ़का दोगे। लोग तो तरसते हैं और आप जलाएँगे भिड़ें। अभी लाला जी सोच रहे थे कि कितनी चतुर है, उनके घर वाली। वह अपनी मूर्खता पर इतने उदास थे कि ललाइन ने एक, युक्ति सोच डाली। वह बोली कि पैसे वैसे का कोई लालच नहीं है, मैं तो जीव हत्या नहीं होने दूंगी। उससे कहो आठ आने किस बात के लोगे। जल्दी से बोरी से छत्ते का मुंह ढांप ले और बोरी में भर कर बाहर जंगल में छोड़ आये। न भाई! मुझसे भिड़ों का जलना न देखा जायगा। बस निर्णय हो गया कि आठ आने तो मिट्ठू को जरूर दिये जाएँ मगर उससे कहा जाये कि भिड़ों को जलाये बिना बाहर छोड़ आये।

अगले दिन प्रातः काल मिट्ठू लाला जी के घर गया। उसे भिड़ों का छत्ता तोड़ कर अपनी मज़दूरी पर जाना था। आते ही ललाइन ने कहा कि देखो मिट्ठू मैं अपने झाड़ फूँक न होने दूंगी। भिड़ों को जलाना न होगा यह पड़ी है बोरी, झटपट छत्ते को इससे ढक कर अंदर डाल दे और जीती भिड़ों को बाहर छोड़ आ देख तो सही छत कच्ची लकड़ियों की है। उन्हें मिट्टी का तेल डाल कर आग लगाई तो कहीं लेने के देने न पड़ जाये। मिट्ठू घबड़ा सा गया। काम बड़ा दुष्कर सा हो गया था। जीव हत्या की बात तो उसे समझ में न आती थी दिमाग में यह बात अवश्य खटकी कि कहीं लकड़ी की छत आग पकड़ गई तो मुश्किल आ जायेगी। उसने सीढ़ी उठाई और आहिस्ता से छत पर पहुँचने के लिये दीवार के सहारे खड़ी की। बोरी का मुँह खोला और सम्भल २ कर अपना काम करने को ऊपर चला।

अभी तक भिड़ें शान्त, निश्चिन्त थीं जैसे उन्हें कुछ पता भी न हो इतने में मिट्ठू का हाथ बोरी लेते हुये आगे बढ़ा। बोरी का किनारा छत्ते से लगा और भिड़ें जैसे आवेश में आकर मिट्ठू की तरफ झपटीं और एक दो दस बीस पचास न मालूम उस पर कितनी भिड़ों ने घोर आक्रमण किया और हाथ मुँह जो भी अंग नंगा दिखा उस पर जहरीली डंकों के पचासों आघात हो गये। कहने में समय लगता है वास्तव में सब कुछ क्षणों में हुआ।

मिट्ठू तिलामिला उठा, घायल हुआ और धड़ाम से सीढ़ी से नीचे आ गिरा। उसके चीत्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ललाइन और लाला भी दहल उठे। आना चाहते थे उसे बचाने की खातिर। मगर भिड़ों के घमसान आक्रमण के डर के मारे दोनों घर से बाहर भाग निकले।

खैर, कुछ समय के बाद मिट्ठू की सुध ली गई। उसको बाहर निकाला। ठण्डे पानी के छींटें दिये गये। परन्तु वह घायल सिपाही की भांति तिलमिला रहा था। उसका घर भी दो ढाई फरलांग की दूरी पर था। उससे चला नहीं जाता था। लछमण लाला ने दस पांच पग उसका साथ भी दिया फिर पता नहीं किस प्रकार गिरते पड़ते वह अपने टूटे फूटे घर में पहुँच गया। उसकी पत्नी ने उसे बिस्तर पर लिटाया और मुहल्ले वालों से पूछ कर अतार से पुड़िया लाकर उसकी दवा दारू आरम्भ की। एक दिन नहीं, एक सप्ताह नहीं, पूरे १५ दिन बीत गये पर मिट्ठू का ज्वर अभी तक नहीं उतरा। भिड़ों के काटने की सूजन दो तीन दिन में दूर हो जाया करती है। पर एक भिड़ हो तभी न। मिट्ठू का बदन सूजा हुआ था बुखार चढ़ा हुआ था और वह पीड़ा से कराह रहा था।

[५]

बाबू बनवारी लाल को जब पता लगा कि तो बड़े चकित हुये कि आखिर इतनी लम्बी बीमारी का क्या कारण किसी ने आकर बताया कि मिट्ठू की दशा शोक जनक होती जा रही थी। वह मिट्ठू के मकान पर गए। मिट्ठू की पत्नी ने दुहाई दी, "अजी बाबू जी, मेरे सुहाग को बचा लो। तुम्हारा एहसान कभी न भूलूंगी।" बनवारी लाल को बात बात में पता लग गया कि मिट्टी के तेल की बोतल प्रयोग में न लाई गई। थी आज १५ दिन से मिट्ठू की आमदनी तो अलग रही वह २० रू० के करजे में आ चुका था।

बाबू बनवारी लाल एक साधारण आय के व्यक्ति थे। पाँच रुपये जेब से निकाले मिट्ठू की पत्नी को दिए और विश्वास दिलाया कि मैं अभी लछमण लाला के पास जा कर सहायता लाता हूं।

बाबू बनवारी लाल ने लछमण लाला से सहायता के लिए अनुरोध किया मगर वह थे, कि टस से मस न हुए। बनवारी लाल ने समझाया कि संसार में दया नाम की भी कोई वस्तु होती है। उस गरीब का क्या कसूर! उसकी सहायता करना तुम्हारा कर्तव्य है। इस संसार वालों से नहीं तो उस ईश्वर से तो डरो। आखिर जिम्मेवारी तो तुम्हारी है।

उधर लछमण लाला की दलील भी पूरी थी। काम के लिए उसको लगाया था पैसे चुकाए थे। काम न हुआ तो पैसे कैसे और लछमन लाला ने यहां तक दया की उन्हों ने आठ आने उसको दे दिए थे और वह छत्ता ज्यों का त्यों वहीं लगा हुआ था। जिम्मेवारी तो लछमण लाला खूब समझते थे, बनवारी लाल से भी बेहतर। एक दिन लाला घनश्याम दास की बिल्डिङ्ग बनवाते समय एक मजदूर गिर कर मर गया था। तो घनश्याम दास का क्या बिगड़ा था और बिगड़ता भी क्यों उन्हों ने गिरा थोड़े ही दिया था। विवशतः बनवारी लाल ने कहा केवल २० रु० दे दो। बेचारों की जान बच जाएगी उसकी पत्नी आप की जान को दुआएं देगी। बनवारी लाल कितने कम समझ थे। वह लछमण लाला से दो रुपये भी न ला सके। और अपना सा मुँह लेकर चले आये।

मिट्ठू के मुहल्ले में दो मकान छोड़ कर एक सिपाही रहता था हृष्ट-पुष्ट, लम्बा, जवान सिक्ख पूरणसिंह। दस पन्द्रह दिन तो इस का ध्यान मिट्ठू की ओर न गया। फिर एक दिन ध्यान से उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कहानी सुनी। मिट्ठू की पत्नी हर एक आने वाले से अपनी व्यथा सुनाया करती थी। हर रोज एक दो बार सुना सुना कर उस के मन को शांत मिलती थी। बेबस मनुष्य के कथा कथन में, एक बड़ा सहारा होता है। पूरण सारी कथा सुन रहा था। इतने में बाबू बनवारी लाल निराश हुये वहां आये। हारे हुये से आखिर कहने लगे, मिट्ठू की बहू, यह लाला किसी जमाने का कसाई है। यह पांच रुपये में तुझे और देता हूं। "पूरणसिंह से न रहा गया कहने लगा", अजी बाबू जी, तभी तो मैं इन कांग्रेसियों से जलता हूँ, हम तो सिक्ख हैं, सिपाही हैं, हम तो बदमाश से बदमाश और भले से भले। मैं पूछता हूँ जब आप जानते है। लछमण लाला एक कसाई है। यह बनिये कहने को तो बड़े धर्मी होते हैं, प्याज भी नहीं खाते जानवर क्या कीड़ों को मारना पाप समझते हैं। परन्तु जीते मनुष्य का खून पी पी कर पलते हैं।

"अजी, हम कांग्रेसियों से तंग आगए। पहले आप ने जिन्हां साहब को अफराए रखा, उसकी ऐड़ी बेड़ी सब मानी। तिहाई हिन्दुस्तान दे बैठे। लातों के देव बातों से नहीं मानते।"

बाबू बनवारी लाल ने बहुत समझाया, "भाई, जोश में मत आओ। शांति से काम लो। देखो, हमारी गवर्नमेंट बड़े-बड़े कानून बनाएगी, मजदूरों के लिए बड़ी-बड़ी सुविधायें होंगी। देखना दो चार साल में ऐसा कानून हो जायेगा कि जो भी मनुष्य बीमार हो उसका इलाज खाना कपड़ा सब इनशोरन्श कम्पनी देगी। जरा सोचो तो सारी बातें रात भर में नहीं हुआ करती। और यह सूद हटाने के भी ऐसे कानून बनेंगे कि यह बनिए सदा याद रखेंगे।" पूरणसिंह को कुछ समझ में न आता था, "बोला, क्या बहकी-बहकी बातें करते हो बाबू जी! पता नहीं हम और आप कहां होंगे। मिट्ठू मरा जा रहा है आप तीन साल की बात कर रहे हैं।" वह फिर उत्तेजित हो कर बोला, "मैं भी सिक्ख बच्चा नहीं जो कल सवेर तक सौ रुपये मिट्ठू की बहू के हाथ पर नहीं रखवा दूं। चालिस रुपये का कर्जा चढ़ गया है। बचेगा कैसे, मुझ से तो इसका मरना नहीं देखा जाता।"

उधर मिट्ठू की दशा घड़ी-घड़ी बिगड़ती जा रही थी, मिट्ठू की स्त्री के रुदन ने सारे मुहल्ले को बेचैन कर रखा था।

अगले दिन, प्रातः काल एक मजदूर हरद्वारी लाला की दुकान पर आया। बोला, "एक बोतल मिट्टी का तेल चाहिए लाला जी! परमिट कहां है", लछमण लाला ने पूछा, "परमिट वरमिट कुछ नहीं, एक बोतल ही तो है। दे दो किसी तरह से। हम बोतल बिना परमिट के नहीं बेचते", लाला ने तिनक कर कहा। मगर हरद्वारी अनुरोध करता रहा, "आप का उपकार होगा। मुझे बहुत सख्त जरूरत है। बिरादरी का खाना करना है, गैस की लालटेन का तो इन्तजाम कर लिया है मिट्टी के तेल की आवश्यकता है। मुंहमांगे दाम देने को हरद्वारी तैयार हो गया, लछमण लाला दुकान से बाहर निकले चारों ओर नजर दौड़ाई फिर बोले, 'रुपया निकाल रुपया।"

'नहीं १२ आने ले लो लाला जी।" खैर १४ आने पर फैसला हो गया। झट हरद्वारी ने एक बोतल संभाली, पैसे दिए और दुकान से निकला।

वह दुकान से निकला ही था कि उस ने किसी ओर देखा। साथ की गली में से पूरणसिंह हवलदार बढ़ा, बढ़ कर हरद्वारी की बोतल सँभाली और लाला के सामने जा खड़ा हुआ। आज उस के चेहरे पर एक वह प्रभाव था जो शायद कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी सुपरिन्टैन्डैन्ट पुलिस के मुंह पर भी न देखा गया हो। आज इस के मन में कुछ करने की उमंग थी। वह जानता था, कि वह अपनी शक्ति की सीमा से बाहर जा रहा था, मगर हुआ क्या। आज वह अपनी छोटी २ भूलों का प्रायश्चित्त एक बड़े अत्याचार का प्रतिकार कर के करना चाहता था

"सत्‌श्रीअकाल सरदार जी", लछमण लाला ने कम्पित स्वर से कहा। "सत्‌श्रीअकाल लाला जी", पूरणसिंह ने उत्तर दिया, "कहां है इस बोतल का परमिट कितने में बेची है।" चोर के पांव कहां! लाला पूरणसिंह के पांवों पर गिर पड़ा, "जाने दो सरदार जी, भूल हुई।" "भूल वूल कुछ नहीं", सरदार ने कहा, चलो थाने में कप्तान साहब आये हुए हैं। उनको सब कुछ समझा देना।" लाला ने बहुत खुशामद की मगर पूरणसिंह टस से मस न हुआ। पांच दस, पचीस, पचास रुपये उसकी नजर हुए। किन्तु आज १००० रु० भी उसे अपने कर्तव्य से नहीं डिगा सकते थे। वह अड़ा हुआ था।

"छः महीने की होगी लाला जी ६ महीने की", यह शब्द सुनते ही लाला बे सुध हो कर गद्दी पर गिर पड़ा। पूरणसिंह ने फिर तहकीकात की। यह फालतू बोतल आप के पास आई कहां से। "कहीं से नहीं वैसे ही वैसे ही", "क्या कहा ठीक बताओ पड़ी है न जो बनवारी लाल ने भिड़ों को मारने के लिए दी थी। तुम चुप क्यों हो। क्या यह समझते हो कि बनवारी लाल अदालत में झूठ कह देगा कि बोतल मैंने नहीं दी। तुम वही हो न! जिन का शिकार वह मिट्ठू पड़ा हुआ है। वह मर जाएगा पर उसका मरना भी दुख लाएगा। तुम से यह भी न हुआ कि पांच, दस रुपए देकर इलाज करा देते। चार आने का टांगा कर के उसके घर तक पहुँचा देते। एक दो रुपये उसकी दवा दारू पर खर्च कर देते।"

बहुत देर तक बात चीत होती रही। पूरणसिंहने पूरे १०० रुपये लिए और कहा "किसी और ध्यान में नहीं रहना यह रुपए मेरे घर नहीं जा रहे हैं इन से मिट्ठू का इलाज होगा" यह कह कर जाने लगा। लाला जी ने पूरणसिंह का हाथ पकड़ लिया और कहने लगा, "जहां इतना एहसान किया वहां इतना और करना।" पूरणसिंह फन्दे से तो निकल चुका था। साहस से बात कर रहा था। "इस मिट्ठू और इसकी बीवी को गाड़ी पर चढ़ा दो। इसको अपने देश जाने दो कहीं कुछ हो गया दूभर हो जायेगा।"

पूरणसिंह था तो एक सिपाही। अच्छाई बुराई की गहराई तक उसकी समझ काम नहीं करती थी। "देश तक मुफत में पहुँच जाएगा, लाला १०० रु० और निकाल।" पूरणसिंह ने २००रु० लिए और विश्वास दिलाया कि मिट्ठू और उसकी बीवी को सुबह गाड़ी पर चढ़ा देगा।

१०० रु० जब पूरणसिंह ने मिट्ठू की बीवी के हाथ में रखे तो उसकी आंखें खुल गई और बोली "आप ने मेरा सुहाग बचा लिया, आपका एहसान मरते दम तक न भूलूंगी। यह लो ५० रु० डा० का भुगतान कर आओ।" इतने में मिट्ठू की पत्नी को ख्याल आया कि वह १०० रु० लाला के पास से लाया है उसे पूरणसिंह के नाटक का क्या पता था, बोली कि लाला भी किसी जन्म का देवता है भगवान् इसको और दे।"

पूरणसिंह चुप था। "तुम चुप क्यों हो सरदार जी, बोलते क्यों नहीं।" सरदार फिर भी चुप था मिट्ठू की ओर टकटिकी लगाए देख रहा था कि क्या मिट्ठू सफर का कष्ट सहन कर सकेगा उस ने आंखें बन्द की। उस को यह वायदा याद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया जो लछमण लाला से कर आया था। मिट्ठू और उसकी स्त्री को सवेर की गाड़ी से चढ़ा दूंगा। मिट्ठू सवेरे तक अच्छा हो जायेगा। मगर अच्छा होगा तो उसको भेजने की आवश्यकता ही क्या। और अगर वह अच्छा न हुआ तो क्या अपने हाथों मृत्यु के मुंह में धकेल देगा। फिर उस के मन में विरोध सा उठा यह लाले बड़े बदमाश होते हैं। वह अपने सिपाही पन में उतेजित हुआ, मैं किसी वायदे वूयदे को नहीं जानता। वह सोचने लगा पर फिर कुछ आत्मा मलिन सी हुई। वह सौ रुपया उससे ले चुका था। अगले सौ रुपये तो लाला ने अपनी मरजी से दिये थे। सिपाही अपने वचन का पक्का होना चाहिए।

फिर उसे विचार आया आखिर लछमण लाला का दोष ही क्या। न्याय भी तो कोई वस्तु है। कानून भी तो कोई चीज है। कौन सी दफा में लछमण लाला को सजा मिल सकती है। एक कंजूस ही तो है। उसकी दो महीने की कमाई मैं ले आया हूँ इससे अधिक और क्या कर दूँ। वह सोचने लगा यदि इतने करने पर भी मिट्ठू वास्तव में चलता बना, तो लोग लाला को जीता न छोड़ेंगे।

मिट्ठू की स्त्री फिर बोली सरदार जी आप बोलते क्यों नहीं। देख मिट्ठू की बीबी अब तुम लोगों का यहां ठहरना उचित नहीं। तुम अपने देश में जाओ कुछ दिन आराम करना, मिट्ठू की सेवा करना। जब यह ठीक हो जाये तब उसको यहां लेती आना। यह कह कर वह उठा जेब में से १०० रु० का नोट निकाल कर उसके हाथ पर रखे और कहा कि १५, २० रुपये तो किराये के, बाकी सब रुपये से देश में अपना गुजर करना। मिट्ठू और मिट्ठू की स्त्री बड़े चकित थे। मिट्ठू कुछ समझ न सकता था यह सिपाही आदमी था या देवता था। छत फार कर लछमी उनके घर में आ गई। इससे आधे रु० भी मिट्ठू ने कभी देखे नहीं थे। अधिक से अधिक उसने ६० रु०एक लाला से लिये थे जब वह अपनी स्त्री को घर लाया था।

पूरणसिंह थोड़ी देर में खम्भे वाले डाक्टर को बुला लाया। डा० साहब इनको सवेरे ही देश जाना है वह बोला।

डा० ने मिट्ठू की हालत देखी! बोला कि तीन घण्टे के चार इंजक्शन लगाये होंगे, ३६ रु० लगेंगे। "कुछ परवाह नहीं" पूरण सिंह ने कहा चालीस रुपये दूँगा।

डाक्टर चार बार आया सवेरे तक मिट्ठू की आंखें खुली, क्या यह रेल से जा सकता है, डा० साहब। पूरण सिंह ने पूछा "मैं जाने की सलाह न दूँगा' डा० ने कहा! "मगर इनको जाना जरूर है। आप कुछ दवा दे जायें रास्ते के लिये डाक्टर को पूरणसिंह ने आठ रुपये और दिये और रास्ते भर की दवा मिट्ठू की स्त्री को दी। और इसकी विधि बताई।

पूरण सिंह ने मिट्ठू और उसकी स्त्री को टांगे पर बिठाया और आप भी बैठ कर लाला के मकान पर जा खड़ा हुआ "यह जा रहे हैं लाला जी" पूरण सिंह ने कहा। लाला ने कुछ सन्तोष का सांस भर कर कहा 'अच्छा।' पूरणसिंह उतरा और लाला के पास जाकर बोला—'आप को साथ चलना होगा, लाला जी स्टेशन तक।' 'मैं तो नहीं जाऊंगा' पूरणसिंह ने मजबूत हाथों से उसकी बांह को पकड़ा और कहा आपको चलना होगा लाला जी और आंखें चमकाते हुये उससे कहने लगा 'अगर इसे कुछ हो गया तो जिम्मेवारी तो आपको बटानी ही होगी।

मरता क्या न करता लछमण भी टांगे में बैठ गया। बड़ी मुश्किल के साथ दोनों को गाड़ी पर चढ़ाया। पूरण सिंह और लछमण लाला भी प्लेटफार्म पर खड़े थे। सीटी बजी और गाड़ी चल दी। मिट्ठू की स्त्री ने दोनों की सौ सौ बलाएँ ली। खिड़की से सिर निकाल २ कर पूरणसिंह और लाला को आशीसें देते २ आंखों से ओझल हो गई। ❀ ❀ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब में हिन्दी प्रचार आन्दोलन की प्रगति

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन की कार्य कारिणी की तीसरी बैठक १३-९-५३ को दोपहर दो बजे सम्मेलन कार्यालय आर्य प्रैस, निकलसन रोड अम्बाला छावनी में हुई। निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार हुये—

(१) पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन श्री पं० चेतराम जी शर्मा की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। श्री पं० चेतराम जी शर्मा ने निरन्तर कई वर्षों तक कन्या महाविद्यालय जालन्धर और कौमी महाविद्यालय लाहौर में हिन्दी अध्यापक पद पर कार्य करते हुये, पंजाब के वर्तमान अनेक हिन्दी कवियों, लेखकों तथा लेखिकाओं को जन्म देकर हिन्दी की अनुकरणीय सेवा की है। इसके अतिरिक्त अनेक ग्रन्थ लिख कर आपने हिन्दी साहित्य की सराहनीय तथा स्मरणीय सेवा की। सम्मेलन आप के सम्बन्धियों के साथ हार्दिक दुःख और सववेदना प्रकट करता है।

(२) पंजाब हिन्दी सम्मेलन के हिसार अधिवेशन के बाद—(क) पंजाब के मुख्य मन्त्री श्री भीमसेन सच्चर ने केवल मात्र पंजाबी गुरुमुखी को ही पंजाब की क्षेत्रीय व सरकारी अदालती भाषा घोषित कर हिन्दी भाषा भाषी पंजाबियों (गैर सिक्खों) विशेषतः हरियाना, कांगड़ा, अबोहर फाज़िलका तथा अम्बाला डिवीज़न निवासियों के साथ भारी अन्याय किया है और उन्हें जबर्दस्ती पंजाबी, गुरुमुखी पढ़ने पर बाधित कर उनके भाषा सम्बन्धी स्वतन्त्रता के अधिकार पर गहरी चोट की है।

(ख) सम्मेलन को इस बात पर भी असन्तोष है कि पंजाब के मुख्य मन्त्री, भीमसेन सच्चर शिक्षा मन्त्री और स्थानीय स्वराज्य (लोकल सैल्फ गवर्नमेंट मन्त्रियों ने पंजाब हिन्दी सम्मेलन के हिसार अधिवेशन में पंजाब में हिन्दी को न्यायोचित स्थान प्राप्त कराने के लिये निवेदन करने वाले प्रेषित प्रस्तावों की प्राप्ति स्वीकृति तक भेजने का शिष्टाचार नहीं किया।

(ग) पंजाब में हिन्दी की स्थिति के सम्बन्ध में पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन स्पष्ट घोषणा करता है कि वर्तमान पंजाब में हरियाना, कांगड़ा, शिमला, पठानकोट, हुशियारपुर के प्रदेश हिन्दी भाषा भाषी भाग हैं। शेष पंजाब द्वि भाषा भाषी कहा जा सकता है। इस द्वि भाषा भाषी प्रदेश में हिन्दी नागरी और पंजाबी गुरुमुखी दोनो को अदालती भाषा का समान स्थान मिलना चाहिए।

(घ) यह सम्मेलन, पंजाबी बोली को केवल मात्र गुरुमुखी लिपि से सम्बद्ध करने की विचारधारा व दृष्टि को, साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का परिणाम मानता है और यह समझता है कि इस मनोवृत्ति द्वारा पंजाबी को सिक्खों की साम्प्रदायिक भाषा का रूप दिया जा रहा है जो कि पंजाब की ऐतिहासिक और साहित्यिक परम्परा के विपरीत है। इसलिये पंजाबी के लिये गुरुमुखी की भांति देवनागरी लिपि को भी स्वीकार करना चाहिए।

यह सारी विषम परिस्थिति, भार्गव सच्चर फार्मूले द्वारा पंजाब को भाषा के आधार पर, हिन्दी प्रदेश और पंजाबी गुरुमुखी प्रदेश में, बांटने की नीति का परिणाम रूप है। भार्गव सच्चर फार्मूले का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसके द्वारा नान सिक्ख पंजाबियों पर अकालियों की मज़हबी भाषा पंजाबी गुरुमुखी ज़बर्दस्ती थोंपी जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(च) इस मनोवृत्ति तथा पंजाब सरकार की भाषा सम्बन्धी साम्प्रदायिक नीति का विरोध करने के लिये सम्मेलन पंजाब की हिन्दी भाषा भाषी जनता के सामने निम्नलिखित कार्य-क्रम रखता है।

(छ) २७ सितम्बर ५३ को पंजाब के नगरों देहातों में सार्वजनिक सभाएं करके सच्चर फार्मूले का विरोध किया जाय और इसको रद्द करने के लिये प्रस्ताव स्वीकार कर, उनकी प्रति लिपि पंजाब के मुख्य मन्त्री, शिक्षा मन्त्री और केन्द्रीय सरकार के प्रधान मन्त्री और शिक्षा मन्त्री के पास भेजी जाय।

(ज) भार्गव सच्चर फार्मूले के कारण, स्कूलों के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को हिन्दी पंजाबी पढ़ाने पढ़ने में जो दिक्कतें पेश हो रही हैं, उनको दूर करने के लिये शिक्षा विभाग के पास प्रतिवाद प्रस्ताव भेजा जाय।

(झ) जब तक पंजाब सरकार अपनी भाषा सम्बन्धी साम्प्रदायिक नीति में परिवर्तन नहीं करती, तब तक प्रति मास के अन्तिम रविवार को भार्गव सच्चर फार्मूले के विरोध में, सार्वजनिक प्रतिवाद सभाएं करने का क्रम जारी रखा जाय।

(३) सम्मेलन की सम्मति में ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से पंजाबी हिंदी से पृथक् कोई स्वतंत्र भाषा नहीं है। पंजाबी बोली पंजाब की राज भाषा हिन्दी देवनागरी लिपि का ही रूपांतर है। पंजाब को साम्प्रदायिकता और प्रांतीयता के विष से मुक्त करने का मुख्य उपाय यही है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा को ही पंजाब को राज भाषा व क्षेत्रीय भाषा स्वीकार किया जाय। तभी हम पंजाब को सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के साथ सम्बद्ध रख सकेंगे।

(४) यह सम्मेलन पंजाब के मुख्य मन्त्री तथा चण्डीगढ़ राजधानी मन्त्री से साग्रह निवेदन करता है कि वे पंजाब की नई राजधानी चण्डीगढ़ में कार्यालयों, गलियों तथा मुहल्लों के नाम राष्ट्र भाषा हिन्दी भाषा हिन्दी देवनागरी में लिखाए जाने की व्यवस्था करें।

५. अम्बाला जनपद हिन्दी सम्मेलन, पंजाब के शिक्षा विभाग के आधीन प्रोविन्शियल एडवायसरी बोर्ड आफ एजूकेशन ने १२ जनवरी १९५३ की मीटिंग में स्कूलों की प्रारम्भिक और मिडल श्रेणियों में गणित की पाठविधि और परीक्षा विधि में देवनागरी संख्याओं के स्थान पर अंग्रेजी रोमन संख्याओं के ही प्रयोग करने के निर्णय का विरोध करता है। शिक्षा विज्ञान की दृष्टि से अंग्रेजी भाषा का शिक्षण देने वाली श्रेणियों से ही रोमन संख्याओं का व्यवहार अंग्रेजी की पुस्तकों में होना चाहिए। भारतीय संविधान में रोमन संख्याओं को स्वीकृत करने का यह अभिप्राय नहीं कि प्रारम्भिक श्रेणियों में भी राष्ट्र के बालकों को गणित की शिक्षा में हिन्दी अंकों का प्रयोग न सिखाया जाय।

६. यह सम्मेलन पंजाब सरकार से साग्रह निवेदन करता है कि वह पंजाब की नई राजधानी चण्डी गढ़ में कार्यालयों तथा गली मुहल्लों के धाम नाम राष्ट्र भाषा देव नागरी अक्षरों में लिखाने की व्यवस्था करें और अंग्रेजी भाषा का सर्वथा बहिष्कार करें। इस प्रकार १५ साल में हिन्दी भाषा को अंग्रेजी का स्थान प्राप्त कराने के निर्देश को क्रियात्मक रूप दें।

७. पंजाब सरकार के १९१८ के म्युनिसिपल एक्ट की २४० धारा के अनुसार म्युनिसिपल कमेटियों का कारोबार केवल मात्र अंग्रेजी में ही हो सकता है। यह सम्मेलन पंजाब के मन्त्री मण्डल तथा पंजाब एसम्बली व कौन्सिल के सदस्यों से बल पूर्वक निवेदन करता है कि वह पंजाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एसम्बली में नया म्युनिसिपल एक्ट स्वीकार करा कर म्युनिसिपल कमेटियों को हिन्दी देव नागरी में भी कारोबार करने की सुविधा तथा अनुमति दें।

२२ सितम्बर १९५३ दुपहर को श्री पुरुषोतम दास जी टण्डन के सभापतित्व में अम्बाला जन पद हिन्दी सम्मेलन में यह प्रस्ताव स्वीकार किए गए थे। श्री गोस्वामी गणेश दत्त जी ने भी इन प्रस्तावों के सम्बन्ध में भाषण किया था।

पंजाब के शिक्षा मन्त्री श्री जगत् नारायण जी की सेवा में

पंजाब की हिन्दी भाषा भाषी जनता और पञ्जाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से पञ्जाब के स्कूलों में प्रचलित पाठविधि में हिन्दी शिक्षा के सम्बन्ध में यह आवेदन पत्र—३ अक्तूबर सायं काल अम्बाला छावनी में उपस्थित किया गया था।

पञ्जाब के स्कूलों में, पंजाब सरकार के शिक्षा विभाग ने प्रथम श्रेणी से लेकर ऊपर की श्रेणी तक गणित की जो पुस्तकें हिन्दी और गुरुमुखी लिपि में प्रकाशित की है उनमें हिन्दी और गुरुमुखी अङ्कों (संख्याओं) के स्थान पर अंग्रेजी के अङ्क देखकर बड़ा विस्मय होता है।

अंग्रेजी सरकार के समय में भी जब कि पञ्जाब में उर्दू भाषा का राज्य था विद्यार्थियों को पहली से चौथी श्रेणी तक अङ्क (Numerals) उर्दू के सिखाये जाते थे और पांचवीं से अंग्रेजी भाषा शिक्षण के साथ ही अंग्रेजी अङ्क प्रारम्भ होते थे। परन्तु अब प्रारम्भ से अंग्रेजी अङ्क गणित में क्यों सिखाये जाते हैं, यह समझ में नहीं आता।

पंजाब शिक्षा विभाग की इस नीति का परिणाम यह होगा कि आज से पच्चीस साल के पश्चात् पंजाब में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं रहेगा जो हिन्दी के अङ्कों को जानता हो और उनका प्रयोग करता हो। अर्थात् एक पंजाबी युवक की यह भावना होगी कि हिन्दी और गुरुमुखी के अपने कोई अङ्क ही नहीं हैं। जिस भाषा के अङ्क नहीं उस भाषा में गणित भी नहीं होगी।

यह कितनी शोकजनक बात होगी कि जिस हिन्दी भाषा ने संसार की दूसरी भाषाओं को अङ्क लिखने सिखाये। आज पञ्जाब की सरकार द्वारा पंजाब में वही अंक समाप्त किये जा रहे हैं। हमारा सानुरोध निवेदन है कि पंजाब का शिक्षा विभाग अंग्रेजी भाषा के शिक्षण के साथ ही अंग्रेजी संख्याओं का प्रयोग सिखाये। उससे पहले की श्रेणियों में हिन्दी नागरी अङ्कों में ही गणित की शिक्षा दी जाय।

यही निवेदन दो साल पहले शिक्षामन्त्री पंचमचन्द जी की सेवा में भी किया गया था।

२ इस समय पंजाब के स्कूलों में चौथी श्रेणी से आठ साल की आयु के बालक को हिंदी और गुरुमुखी अनिवार्य रूप से पढ़नी पड़ती है। हिन्दी और गुरुमुखी में बहुत से शब्दों का उच्चारण इतना मिलता जुलता है कि आठ साल के बालक को दुविधा जनक भ्रम (Confusion) पैदा हो जाता है। यथा हिन्दी में कृपा और गुरुमुखी में 'किरपा' हिन्दी में पत्र और गुरुमुखी में 'पत्तर' पुत्र और 'पुत्तर' आदि। दोनों भाषाओं के पढ़ाने वाला अध्यापक प्राइमरी में एक ही होता है। ऐसे उपरिनिर्दिष्ट शब्दों का उच्चारण गुरुमुखी और हिन्दी पढ़ाते समय भिन्न भिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढंग से बताते हुये देख कर बालक हैरान हो जाता है और परिणाम यह होता है कि दोनों भाषाओं का ज्ञान अपूर्ण और संदिग्ध अशुद्ध होने लगता है। इससे वह किसी भाषा के उच्च साहित्य में उसकी प्रगति नहीं होती। परिणामतः उनका बौद्धिकस्तर निम्न या नीचा होता है। इस कमी को दूर करने का यह उपाय है कि शिक्षा का माध्यम चुनना बालक के माता पिता पर छोड़ देना चाहिये और सातवीं श्रेणी में जिस बालक ने पहिली श्रेणी में जिस बालक ने पहिली श्रेणी से हिन्दी पढ़ी है और बालक के माता पिता की इच्छानुसार गुरुमुखी पढ़ाने का अथवा जिसने पहली श्रेणी से गुरुमुखी पढ़ी है उसको माता पिता की इच्छानुसार ही हिन्दी भाषा पढ़ाने का प्रबन्ध किया जाय। जबर्दस्ती किसी को कोई भाषा पढ़ने पर बाधित न किया जाय। भारतीय संविधान की संस्कृत भाषा सम्बन्धी धारा का भी यही अभिप्राय है।

—भीमसेन

कल्कि-अवतार

[लेखक—कवि श्री प्रो. लाजपतराय एम. ए. राधाकृष्णन आर्य कालेज, नवां शहर]

दुर्वह व्रत है विश्व-पुरुष का, विश्व-प्रेम का वैष्णव-जन का !!
जग सारा उसका प्रतिपक्षी, अभिरक्षित ही उसे-विपक्षी।
जिनके हित वह जग में आया, वही विश्व, जन उसे-विपक्षी।
नारायण नर के सेवक हों, नर ही उनका करे निरादर ?
निज अबोध से मूढ़ विश्व ही नारायण का करे निरादर।
—वध्यचिह्न दे, प्रभु-प्रसाद के हों 'आभारी' बलिहारी ! सखि।
ज्योतिशरण से विमुख, ध्वांत में लीन, मुग्ध क्यों रहते हम सखि ?
वैष्णवजन का अनुष्ठान है दीर्घनिशा में विद्युल्लेखा।
महाकाल की जययात्रा का है साक्षी वह, जय का लेखा।
कितना है प्रभु के प्यारे का ? कितने रक्षित, कितने हैं मृत।
कितने बल से अध्यवसायी थे, कितने हैं विकल, पराजित।
···अदिति-पुत्र, लो, चला गया वह, जग पर छायी घोर तमिस्रा।
हरि के स्वर्मय 'परम' क्षितिज पर मार्ग सुखद हैं, परम सुगम; पर।
कितने साधक वहां पहुँचते, पड़ते कितने वहां कदम हैं ?
पूतात्मा ही प्रभा, प्रभा-पक्ष के अधिकारी पन्थी हैं सखि।
वहीं, परम उस ज्योतिलोक में मार्ग निष्क्रमण का, सखि ! एक—
कष्ट, तमोभव, बन्ध शृङ्खला का जो विषय विमोचक एक—
खुलता है, पर जगन्मुक्त जन क्यों कर विश्वविमोचक हों, सखि ?
इने गिने सखि ! प्रभु के प्यारे, इने गिने वे जगन्मुक्त, सखि।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये युग बीत !

078125

[लेखक—श्री छोटेलाल जी "वशिष्ठ"]

गये युग बीत, पर मन में तुम्हारी याद बाकी है, गये युग बीत ॥१॥

अचानक आ मिले मग में चले दो प्राण अनजाने,
उन्हें होगा कहां जाना न ये जाने न वो जाने।
विकट भव पंथ का सँबल रहा अवलम्ब आपस का,
मधुर स्वर में निकलते थे सुहाने गीत मन माते।
घटायें घिर गईं सहसा, दिवाकर था वदलियों में,
सुनहला दिन गया छिप अब अंधेरी रात बाकी है, गये युग बीत ॥२॥

बिछुड़ तुम क्या गये साथी, गये अरमान भी दिल के,
अकेला रह गया अब मैं कहां वो गान महफ़िल के।
सुवासित कर रहा था जो अभी तक फूल उपवन को,
अरे वो देखते ही देखते मुरझा गया खिल के।
बदलना ही यहां संयोग को होता वियोगों में,
कि आजीवन अधर वर दम गई यह बात बाकी है, गये युग बीत ॥३॥

घुमड़ घिर जब घटा घन घोर सावन की बरस जाती,
तो हो जाती वपन मिट कर धरा की भी सरस छाती।
निकलते जा रहे दिन पर न जा पाया सदन मेरा,
दशा अवलोक मेरी आज करुणा भी तरस खाती।
अरे हर चीज़ परिवर्तन मयी है जब यहां की—
तो भला मेरे हृदय में क्यों अभी अवसाद बाकी है, गये युग बीत ॥४॥

अनोखी भूमि है जग? खेल दो दिन का,
बनेगा बोल मानव, शत्रु अथवा मीत किन किन का।
यहां प्रत्येक पल जीवन बदलते हैं बिनाशों में,
यही चेतन मनुज को दे रहा उपदेश जड़ तिनका।
पतन उत्थान का विविध चक्र चालू है अहर्निश तो,
ये सायं है अभी जो आयगा वह प्रात बाकी है, गये युग बीत ॥५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब का साहित्यिक सचित्र मासिक पत्र Regd. E. P. No. 372

हिन्दी सन्देश

पंजाब, पैप्सू, हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभागों ने स्कूलों और कालेजों की लायब्रेरियों के लिये, इसे समाचार पत्रों की स्वीकृत सूची में अंकित किया हुआ है।

जिसमें—

हिन्दी रत्न, भूषण प्रभाकर परीक्षाओं के विषय में प्रामाणिक लेख प्रकाशित किये जाते हैं। स्कूलों के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिये उपयोगी है। विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा सम्बन्धीशंकाओं के समाधान भी अंकित किये जाते हैं। साथ ही रसीली कविताएँ और मनोरञ्जक कहानियां भी प्रकाशित की जाती हैं।

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन का मुख्य पत्र है। वार्षिक मू० ६) एक प्रति का ।।)
पंजाब प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन के सदस्यों को ४) में दिया जाता है।

मैनेजर—
हिन्दी सन्देश
निकलसन रोड, अम्बाला छावनी।

विज्ञापन देने का उत्तम साधन

टाइटल के द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ पृष्ठ पर	४०) प्रति पृष्ठ प्रति बार
अन्य पृष्ठों पर	३०) प्रति पृष्ठ प्रति बार

"हिन्दी सन्देश" की एजन्सी लेने के लिये निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें

मैनेजर—
"हिन्दी सन्देश" विज्ञापन विभाग

प्रिंटर पब्लिशर श्री प्रेमनाथ जी जोशी द्वारा आर्य प्रेस निकलसन, रोड में मुद्रित, तथा हिन्दी सन्देश कार्यालय निकलसन रोड, अम्बाला छावनी से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri